प्रवासी साहित्य

Course Code: M23HD04DE

Discipline Specific Elective Course
Postgraduate Programme in
Hindi Language and Literature

SELF LEARNING MATERIAL

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University of Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

प्रवासी साहित्य

Course Code: M23HD04DE

Semester-III

Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(With Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

प्रवासी साहित्य

Course Code: M23HD04DE
Semester- III
Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Dr. Latha D.
Dr. Radhika Sudheesh

Review and Edit

Dr. Renjith R.S.
Dr Majida M.

Linguistics

Dr. Renjith R.S.

Scrutiny

Dr. Sudha T.
Dr. Indu G. Das
Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose K.J.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-985080-1-0

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-06-2025

Contents

BLOCK 01 प्रवासी साहित्य की अवधारणा 01

इकाई 1: प्रवासी साहित्य- अवधारणा, स्वरूप और विकास 02

इकाई 2: प्रवासियों के प्रकार, प्रवास का वर्गीकरण, प्रवास के कारण, प्रवासन प्रवाह 15

इकाई 3: प्रवासी साहित्य और भारतीयता, प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियाँ 27

इकाई 4: प्रवासी साहित्य: परंपरा और प्रमुख प्रवासी रचनाकारों का परिचय 41

BLOCK 02 प्रतिनिधी प्रवासी कविताएँ 66

इकाई 1: प्रवासी कविताओं में युगबोध, प्रवासी कविता - संवेदना और शिल्प 67

इकाई 2: चाहती है लौटना - अंजना संधीर 75

इकाई 3: प्रार्थना - अनिल जनविजय 82

इकाई 4: मेरे गाँव में - पूर्णिमा वर्मन 90

इकाई 5: ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य - तेजेंद्र शर्मा 97

इकाई 6: देस की छाँव - सुधा ओम ढींगरा 104

इकाई 7: खुशबू वतन की - देवी नागरानी 112

इकाई 8: वह अनजान आप्रवासी - अभिमन्यु अनत 119

इकाई 9: अस्त-व्यस्त में - मोहन राणा 127

BLOCK 03 प्रतिनिधी कहानी संग्रह 135

इकाई 1: प्रवासी कहानी: संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिन्दी कहानिकार संक्षिप्त परिचय 136

इकाई 2: वापसी (उषा प्रियंवदा) 145

इकाई 3: कौन सी ज़मीन अपनी - डॉ. सुधा ओम ढींगरा 152

इकाई 4: साँकल (ज़किया ज़ुबेरी) 163

इकाई 5: देह की कीमत (तेजेंद्र शर्मा) 175

इकाई 6: पिंजरा (नीलम मलकानिया) 187

BLOCK 04 प्रतिनिधि उपन्यास..... 194

इकाई 1: प्रवासी उपन्यास: संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिंदी उपन्यासकार - संक्षिप्त परिचय..... 195

इकाई 2: लाल पसीना : अभिमन्यु अनत..... 201

इकाई 3: आप्रवासी भारतीय अवधारणा..... 208

इकाई 4: मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन, स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष..... 213

MODEL QUESTION PAPER SETS..... **218**

BLOCK 01

प्रवासी साहित्य की अवधारणा

Block Content

Unit 1 : प्रवासी साहित्य (Diasporic Literature) - अवधारणा - स्वरूप और विकास, उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन की शाखा के रूप में प्रवासी साहित्य, वैश्वीकरण और प्रवासन, प्रवासी-जाति, लिंग, भाषा और पहचान के प्रश्न, होमी भाभा की संकरता की अवधारणा (Hybridity), बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism), प्रवासी (Migrant) और आप्रवासी (Immigrant) के बीच अंतर, प्रवासी भारतीय दिवस

Unit 2 : प्रवासियों के प्रकार-निष्कासित प्रवासी, राजनीतिक शरणार्थी, व्यापार प्रवासी, श्रमिक प्रवासी, शरणार्थी प्रवासी, प्रवास का वर्गीकरण-आंतरिक प्रवास, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, मौसमी प्रवास, स्थायी प्रवास, प्रवास के सकारात्मक एवं नकारात्मक परिणाम, प्रवास के कारण-प्रतिकर्ष कारक,अपकर्ष कारक, आर्थिक कारण, सामाजिक राजनैतिक कारण, जनांकिकीय कारण, प्रवासन प्रवाह- ग्रामीण- ग्रामीण, ग्रामीण-शहरी, शहरी-शहरी, शहरी-ग्रामीण

Unit 3 : प्रवासी साहित्य और भारतीयता, प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियाँ मातृभूमि के लिए उभरती लालसा, अलगाव, नस्लवाद, जड़हीनता, सांस्कृतिक संघर्ष, विपरीत सांस्कृतिक आघात, दोहरी पहचान, संकर पहचान (Hybrid Identity), द्विभाषावाद, दोहरी वफादारी, सांस्कृतिक संकरता (Cultural Hybridity)

Unit 4 : प्रवासी साहित्य-परंपरा, प्रमुख रचनाकारों का परिचय- अभिमन्यु अनत, तेजेंद्र शर्मा, महेन्द्र भल्ला, मोहन राणा, अनिल जनविजय, सुषम वेदी, सुधा ओम दोगरा, पूर्णिमा वर्मन, अंजना संधीर, उषा राजे सक्सेना, अचला शर्मा, देवी नांगरानी, प्रवासी हिंदी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना

इकाई 1

प्रवासी साहित्य- अवधारणा, स्वरूप और विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्य की अवधारणा को समझता है
- वैश्वीकरण और प्रवासी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- होमी भाभा की संकरता की अवधारणा समझता है
- बहु संस्कृति वाद समझता है
- प्रवासी और आप्रवासी के बीच अंतर समझता है
- प्रवासी भारतीय दिवस के बारे में जानता है

Background / पृष्ठभूमि

मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है गतिशीलता और जिजीविषा। प्रवासी साहित्य पर विचार विमर्श समकालीन हिन्दी साहित्य का एक मुख्य अंग हो गया है। प्राचीन युग में विभिन्न धर्मों के संत-मुनि, योगी, साधु-सन्यासी, फकीर, तीर्थ यात्री आदि निरंतर प्रवास पर रहा करते थे। वास्तव में प्रवासी शब्द और साहित्य की नींव तभी रखी जा चुकी थी जब मर्यादा, चाँद, माधुरी, हंस जैसी पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित हुए थे। प्रवासी हिन्दी साहित्य का ताना-बाना विस्थापन और निर्वासन की दर्द से जन्म लिया है। ब्रिटिश अधिकारी वर्ग अपने काम के वास्ते भारतीयों को विदेश ले गए। पहले स्वदेश की स्मृतियाँ उन्हें संजीवनी शक्ति बन गई। मातृभूमि के घर से बिछुड़ने पर उन्हें दःख था जरूर, फिर भी आजीविका कमाने के लिए वह उस देश से जुड़े रहे। विस्थापन की इस त्रासदी ने उनमें हलचल तो मचा दिया लेकिन जिजीविषा की भावना उन में बनी रही और उनसे सृजित संपूर्ण साहित्य में दर्द साफ झलकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासी साहित्य अवधारणा, स्वरूप और विकास, वैश्वीकरण और प्रवासन, होमी भाभा की संकरता की अवधारणा, बहु संस्कृति वाद, प्रवासी और आप्रवासी, प्रवासी भारतीय दिवस

Discussion / चर्चा

1.1.1. प्रवासी साहित्य (Diasporic Literature) अवधारणा, स्वरूप और विकास

▶ दुनिया के विभिन्न भागों में प्रवासन, विस्थापन और पुनर्वसन की ऐतिहासिक प्रक्रिया चलती रहती है

हिन्दी शब्द 'प्रवासन' की तुलना में 'डायस्पोरा' शब्द प्राचीन है यह शब्द मूलतः ग्रीक भाषा का है। Dia, Sperien आदि शब्दों के मेल से डायस्पोरा शब्द बना है जिसका अर्थ है बीजों को बोना, छितराना, बिखेरना या फैलाना। यह एक अनंत भौगोलिक प्रक्रिया है। मूलतः इस शब्द का प्रयोग ई. पू. 586 में यहूदियों के बेबीलोनिया से निष्कासन के संदर्भ में किया गया था। इस निष्कासन से यहूदी समाज फिलिस्तीन से बाहर विभिन्न क्षेत्रों में बिखर गया। लेकिन आधुनिक काल में यह शब्द विभिन्न देश के मानव समूहों के विस्थापन, प्रवासन और पुनर्वसन की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। पिछले 2500 वर्षों से दुनिया के विभिन्न भागों में प्रवासन, विस्थापन और पुनर्वसन की ऐतिहासिक प्रक्रिया चलती रहती है। इसलिए विभिन्न प्रजाति, रंग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि के लोगों के अपने गृह स्थान या मूल स्थान से पलायन या निष्कासन और बाद में नयी जीवन स्थितियों के वर्णन में 'डायस्पोरा' शब्द का व्यापक अर्थों में प्रयोग किया जाता है। अब भारतीय डायस्पोरा, पाकिस्तान डायस्पोरा, चीनी या जापानी डायस्पोरा आदि प्रयोग प्रचलित है। एक बड़े और व्यापक डायस्पोरा में कई लघु डायस्पोरा भी होते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय डायस्पोरा के अंदर कई उप डायस्पोरा है जैसे पंजाबी, गुजराती, तमिल आदि।

▶ 'प्रवासी' का अर्थ - परदेश में जाकर बसे या रहने वाला

प्राचीन काल से ही अविराम चलने वाली एक सामाजिक तथा भौगोलिक प्रक्रिया है प्रवास। रहना या वास करना अर्थ वाले 'वस' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से 'प्रवासी' शब्द बना है। 'द ऑक्सफोर्ड हिन्दी इंग्लिश शब्दकोश में' 'प्रवास' यानी 'Migration' का अर्थ दिया गया है- "Residence away from home" (especially abroad). इसी प्रकार ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में प्रवासी का अर्थ है- "A person who has gone to live in another country" अर्थात वह व्यक्ति जो किसी अन्य देश में जाकर बस गया हो। हिन्दी साहित्यकार एवं कोशकार आचार्य रामचंद्र वर्मा के अनुसार 'प्रवास' का अर्थ है 'अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जा बसना' और 'प्रवासी' का अर्थ है परदेश में जाकर बसे या रहने वाला। इन परिभाषाओं से यह कह सकते हैं की बेहतर जिंदगी की कामना से अनिश्चित समय के लिए अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश में जाकर बसने वाले व्यक्ति प्रवासी हैं। प्रवासी तीन तरह से जाने जा सकते हैं, पहले जो मजदूरों के रूप में विदेश में भेजे गए, दूसरे शिक्षित अर्धशिक्षित कुशल एवं अर्ध कुशल मज़दूर वर्ग के लोग आते हैं जो 80 के दशक में खाड़ी देशों में भेजे गए, तीसरे 80 से 90 के दशक में गए सुशिक्षित कुशल मध्यम वर्गीय लोग जो अपने बेहतर भविष्य के लिए अपना देश छोड़कर गए। वर्तमान समय के साहित्य में अंतिम श्रेणी के लोगों का प्रभुत्व है।

मनुष्य एक सामाजिक एवं संवेदनशील प्राणी है। प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में अपने नए परिवेश को ग्रहण करता है। वह अपने जन्म स्थान, देश और मिट्टी से अलग होकर एक अन्य देशकाल तथा परिवेश में चला जाता है। वह उसी जीवन में रहता है। परिवेश बदल जाने से प्रवासी के जीवन में असफलताएँ, असमानताएँ और कठिनाइयाँ आती हैं। इस कारण उसके नए संस्कार, नया दृष्टिकोण, नए विचार, नयी सोच और नयी मान्यताएँ बनने लगता है। वह अपने नए विभिन्न सामाजिक परिवेश और परिस्थितियों को अपनी रचना का विषय बनाते हैं और उनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहलाता है।

▶ प्रवासी लेखक का संवेदन संस्कार के रूप में अपने नए परिवेश को ग्रहण करता है

प्रवासी हिन्दी साहित्य संपूर्ण हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा है और इसमें भारत का ही वास है। आजकल प्रचुर मात्रा में प्रवासी साहित्य लिखा जा रहा है जो अपने विषय, वस्तु और भाषा की मार्मिकता और संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के कारण लोक प्रिय भी है। प्रवासी साहित्यकार अपने अनुभव और भावनाओं के साथ-साथ अन्य प्रवासी मनुष्य की जटिलताओं और जीवन संघर्ष को भी साहित्य के माध्यम से उजागर करता है। वह अपने लेखन में सामाजिक भौगोलिक यथार्थ के साथ-साथ संस्कृति की खूबियों को सहजता से लिखता है। पराए देश में पराए होने की अनुभूति, वहाँ अपना अस्तित्व या पहचान बनाने की कसमसाहट और उस अपरिचित परिवेश में समायोजन के प्रयास, उसमें सफलताएँ-असफलताएँ और इसी बीच आने वाले सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्याएँ प्रवासी साहित्य की मूल बिंदु है। प्रवासी साहित्य में दो भिन्न संस्कृतियों की टकराहट है, स्वदेश-परदेश का द्वंद्व भी है।

▶ दो भिन्न संस्कृतियों की टकराहट एवं द्वंद्व का चित्रण

उन्नीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में डच एवं ब्रिटिश लोगों द्वारा हजारों लाखों भारतीयों को शर्त बंदी मज़दूरों के रूप में मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी जैसे देशों में लाया गया। 5 साल के शर्त के समाप्त होने पर कुछ लोग भारत लौटे और ज्यादातर लोग वहीं रुक गए। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से लाए गए इन मजदूरों की संपर्क भाषा अवधी और भोजपुरी थी जिसके कारण वहाँ की अन्य भाषाएँ भी अवधी और भोजपुरी शैली में मिश्रित होने लगी जिससे हिन्दी भाषा के नए रूपों का निर्माण हुआ। इस नई हिन्दी को सूरी नाम के लोग 'सरनामी' कहते हैं, फिजी के लोग 'फिजी बात' कहते हैं, दक्षिण अफ्रीकी हिन्दी को 'नैताली' कहते हैं। अपने दुःख-दर्द भरे नरक पूर्ण जीवन में भी इन्होंने हिन्दी भाषा को जिंदा रखा और अपनी अगली पीढ़ी को सौंप दिया। धीरे-धीरे इन देशों में हिन्दी का प्रचार प्रसार तथा साहित्य सृजन कार्य शुरू हुआ। इन्हीं देशों में रचित हिन्दी साहित्य प्रवासी हिन्दी साहित्य की पहली श्रेणी यानी 'गिरमिटिया मजदूरों के देशों में रचित हिन्दी साहित्य' में आता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत से बहुत से लोग शिक्षा, रोज़गार एवं बेहतर जिंदगी की कामना से अमेरिका, ब्रिटन, जापान जैसे विकसित देशों में जाने लगे। पिछले चार-पाँच दशकों से इन प्रवासी भारतीयों के द्वारा हिन्दी में साहित्य सृजन कार्य भी लगातार चल रहा है।

▶ प्रवासी भारतीयों के द्वारा हिन्दी में साहित्य सृजन कार्य भी लगातार चल रहा है

गिरमिटिया मज़दूरों के देशों में मॉरीशस ही हिन्दी साहित्य की सशक्त और सुदीर्घ परंपरा वाला देश है। सन् 1834 से 1910 तक शर्त बन्द मज़दूरों के रूप में मॉरीशस में आए भारतीय अवधी और भोजपुरी के रूप में हिन्दी भाषा यहाँ लाए और भारतीय संस्कृति को भी इन्होंने यहाँ सुरक्षित रखा। हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार के कारण आज मॉरीशस एक लघु भारत ही नहीं, भारत के बाहर का एक भारत ही है। साहित्य की विविध विधाओं में मॉरीशस में लेखन कार्य बहुत ही सशक्त रूप से चल रहा है। वहाँ की हिन्दी पत्रिकाओं एवं हिन्दी सेवी संस्थाओं का इसमें योगदान सराहनीय है। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, निबंध, यात्रा वृत्त, जीवनी आदि में अपनी प्रतिभा दिखाने वाले कई मशहूर साहित्यकार हुए। 'मॉरीशस के प्रेमचंद' नाम से विख्यात अभिमन्यु अनत के साथ-साथ रामदेव धुरंधर, विष्णु दत्त मधु, अस्तानंद सदा सिंह, दीपचंद बिहारी, आनंद देवी, वेणीमाधव रामखेलावन, गोवर्धन ठाकुर, हीरालाल लीलाधर आदि प्रमुख है।

▶ मॉरीशस भारत के बाहर का एक भारत ही है

हिन्दी कविता की एक सशक्त परंपरा मॉरीशस में विद्यमान है। मॉरीशस के राष्ट्रकवि के नाम से प्रख्यात श्री बृजेंद्र कुमार भगत मधुकर के 30 से अधिक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने धर्म, समाज, राजनीति, संस्कृति, अर्थ सबको अपनी कविताओं का विषय बनाया है। कविता के क्षेत्र में दूसरा महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है श्री अभिमन्यु अनत। उनके सन् 1968 के बाद के मॉरीशस के स्वातंत्र्योत्तर कालीन कविताओं में 'नागफनी में उलझी सांस', 'कैक्टस के दांत', 'एक डायरी बयान', 'गुलमोहर खौल उठा' आदि संग्रह प्रसिद्ध है। अनत ने अपनी कविताओं के माध्यम से देश में व्याप्त अत्याचार, दमन, शोषण, समसामयिक व्यवस्था आदि के विरुद्ध आवाज़ उठायी है। मज़दूर वर्ग की पीड़ा और वेदना के चित्रण करने वाली इनकी कविताएँ मानवता के लिए संघर्ष करती है। सोमनाथ बखोरी, राम रतन विशाल, हरिनारायण सीता, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, नौबत सिंह, ठाकुरदत्त पांडेय, रूप चंद जैसे साहित्यकारों की रचनाओं से मॉरीशस की हिन्दी कविता समृद्ध है।

▶ मजदूर वर्ग की पीड़ा और वेदना के चित्रण करने वाला कवि - अभिमन्यु अनत

हिन्दी साहित्य सृजन और हिन्दी शिक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य चलने वाला यूरोप महाद्वीप का देश है ब्रिटन। हिन्दी भाषा समिति, कथा यू के, नेहरू सेंटर, वातायन जैसी हिन्दी संस्थाएँ एवं चेतन, प्रवासिनी, अमरदीप, पुरवाई, प्रवासी टुडे जैसी पत्रिकाएँ और विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन आदि ने ब्रिटन को प्रवासी हिन्दी साहित्य का एक मज़बूत केंद्र बना दिया है। तेजेंद्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, गौतम सचदेव, दिव्या माथुर, प्राण शर्मा, मोहन राणा, उषा वर्मा, नीना पॉल, डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव, डॉ. निखिल कौशिक, पद्मेश गुप्त, डॉ. कृष्ण कुमार जैसे बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक ब्रिटन में हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में सतत प्रयत्नशील है।

▶ ब्रिटन न प्रवासी हिन्दी साहित्य का एक मजबूत केंद्र

शिक्षा एवं रोजगार की प्रतीक्षा में अमेरिका में आए भारतीयों द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा 20 वीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ। सांस्कृतिक संस्थाओं एवं पत्रिकाओं का भी इसमें योगदान रहा। भारतीय विद्या भवन, हिंदू मंदिर, चिन्मया भवन, विश्व हिन्दी

▶ अमेरिका में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की श्रीवृद्धि में लगे कई हिन्दी कथाकार हैं

समिति, अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति जैसी संस्थाएँ और सौरभ, विज्ञान प्रकाश, हिन्दी जगत जैसी पत्रिकाएँ अमेरिका के प्रवासी भारतीयों के हिन्दी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम का दस्तावज़ है। अमेरिका में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की श्रीवृद्धि में लगे प्रमुख कथाकार है उषा प्रियंवदा, सुषम बेदी, रेणु गुप्ता राज वंशी, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, सुधा ओम ढींगरा, वेद प्रकाश सिंह, अशोक कुमार सिंहा, रामेश्वर अशांत, राजश्री आदि।

▶ सूरीनाम में भी हिन्दी साहित्य सृजन की एक समृद्ध और प्रौढ़ परंपरा है

वेद प्रकाश बटुक, गुलाब खंडेलवाल, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, सुधा ओम ढींगरा, अंजना संधीर, अनिल प्रभा कुमार, इला प्रसाद जैसे साहित्यकार अमेरिका में रहकर प्रवासी जीवन की पीड़ा, अकेलापन और उससे उत्पन्न भय, अस्मिता की छटपटाहट जैसे कई विशेषताओं से युक्त कविताओं की रचना अपनी मातृभाषा हिन्दी में कर रहे हैं। सूरीनाम में भी हिन्दी साहित्य सृजन की एक समृद्ध और प्रौढ़ परंपरा है। वहाँ आम जन जीवन में हिंदुस्तानियों द्वारा प्रयुक्त भाषा सरनामी है जो अवधी भोजपुरी जैसी बोलियों का अन्य बलियों के साथ मिश्रित रूप है। सूरीनाम के साहित्यकारों में चंद्रमोहन राणा, जीतू सिंह हरदेव, सुशीला बलदेव, रामदेव रघुवीर, आशा राजकुमार, अमर सिंह रमण, तेज प्रसाद खेदू, चित्रा गयादीन, पुष्पिता अवस्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन देशों के अलावा आजकल नॉर्वे, फिजी, रूस, कनाडा, अबू धाबी, डेनमार्क, जर्मनी, जापान जैसे अन्य कई देशों में हिन्दी भाषा में साहित्य रचना का कार्य हो रहा है।

1.1.2 उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन की शाखा के रूप में प्रवासी साहित्य

प्रवासी साहित्य को उत्तर-आधुनिक और उत्तर-औपनिवेशिक अध्ययनों में एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में देखा जाता है। यह साहित्य उस अनुभव को अभिव्यक्त करता है जो लेखक अपने मूल देश से दूर, एक नए देश में रहते हुए प्राप्त करता है। (प्रवासी साहित्य में मुख्यतः औपनिवेशिक अनुभव, पहचान, सांस्कृतिक विभाजन और अस्मिता के संकट जैसे मुद्दों की झलक मिलती है।)

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिकोण में प्रवासी साहित्यः

1. **संस्कृति और पहचानः** उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासी साहित्य में लेखक अपनी सांस्कृतिक पहचान की खोज करते हैं। वे अपनी जड़ों, परंपराओं और नए देश की संस्कृति के बीच सामंजस्य बैठाने का प्रयास करते हैं, जिससे 'हाइब्रिड पहचान' की स्थिति बनती है।

▶ प्रवासी साहित्य में अस्मिता संकट को गहराई से चित्रण

2. **औपनिवेशिक अनुभव का प्रभावः** प्रवासी लेखक औपनिवेशिक इतिहास और उसके प्रभावों की जाँच करते हैं, खासकर वे कैसे नए देश में उनकी स्थिति, पहचान और स्वीकार्यता को प्रभावित करते हैं।

3. **भाषा का महत्वः** प्रवासी साहित्य में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेखक अपनी मातृभाषा और नए देश की भाषा के बीच संघर्ष करते हुए, कभी-कभी मिश्रित भाषा (कोड-स्विचिंग) का उपयोग करते हैं।

4. **अस्मिता:** प्रवासी साहित्य में अस्मिता संकट को गहराई से चित्रित किया गया है। लेखक अनेक अनुभवों के माध्यम से इस संघर्ष को पाठकों के सामने रखते हैं।

उत्तर-औपनिवेशिक प्रवासी साहित्य के वल व्यक्तिगत अनुभवों का संकलन नहीं, बल्कि उस संघर्ष, पुनःनिर्माण और स्वीकृति की कहानी है, जो समाज में अपनी पहचान को फिर से स्थापित करने का प्रयास करता है।

▶ प्रवासी साहित्य में अस्मिता संकट को गहराई से चित्रण

उत्तर औपनिवेशिक समय में भारत के साथ-साथ अन्य सभी देशों में जो दीर्घ काल से प्रभुता संपन्न देश के अधीन में थे वहाँ के सभी प्रकार के अल्पसंख्यक, तिरस्कृत एवं आम जनता के मन में अपनी अस्मिता और अस्तित्व के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई। प्रवासी साहित्य विमर्श प्रत्येक साहित्य का एक मुख्य अंग बन गया। वास्तव में प्रवासियों को दोहरा संघर्ष करना पड़ता है। एक तो अपने को नई जमीन में बसाने का, दूसरी अपनी ज़मीन को अंदर बसाए रखने का। प्रवासी लेखन की सबसे बड़ी ताकत दो संस्कृतियों से घनिष्ठता होती है प्रायः लेखक वर्षों विदेश में रहकर भी वहाँ की संस्कृति के प्रति सकारात्मक भाव, आत्मीयता विकसित कर नहीं पाते और स्मृतियों में रहना पसंद करते हैं। उनकी रचनाओं में स्वदेश भी है और विदेश भी।

▶ आज प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है

सन 1947 को भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। उसके पहले बड़ी मात्रा में भारतीय मजदूरों को गिरमिटियों के रूप में उनके यहाँ काम करने के लिए ले गए। ब्रिटन, पुर्तगाल, इटली, जर्मनी, डच, स्पेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यू ज़ीलैंड, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण अमेरिका आदि क्षेत्रों में भारतीय डायस्पोरा फैला हुआ है। खाड़ी देशों में मौजूद भारतीय श्रमिक डायस्पोरा की जीवन स्थितियाँ उनकी 19वीं शती की स्थितियों से बेहतर हैं। लेकिन आज 21वीं सदी में वहाँ भारतीय एक स्वतंत्र नागरिक, अनुबंध श्रमिक, प्रोफेशनल, शिक्षार्थी और विद्यार्थी के रूप में जा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर आज यह स्थिति हो गई है। ऐसे देशों मे पहूँचे भारतीयों को अपने नस्ल, जाति, धर्म, भाषा, लिंग, रंग आदि के नाम पर जो जो मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर जो दबाव होता है ऐसे अंतर्द्वंद्व को प्रवासी भारतीयों ने अपनी रचनाओं में बहुत ही यथार्थ परक ढंग से अभिव्यक्त किया है। (आज प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है हम उनके साहित्य को पढ़कर विदेश के उनके अनुभवों, भावनाओं और संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने लेखनी चलाई है।)

1.1.3.वैश्वीकरण और प्रवासन

वैश्वीकरण और प्रवासन परस्पर जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं।

वैश्वीकरण

▶ वैश्वीकरण ने सीमाओं को पार किया है

वैश्वीकरण का अर्थ है देशों के बीच बढ़ते आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध। यह प्रक्रिया प्रौद्योगिकी, व्यापार, परिवहन और सूचना के आदान-प्रदान से तेज़ हुई है। वैश्वीकरण ने सीमाओं को पार करके वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी और विचारों के आदान-प्रदान को आसान बनाया है।

प्रवासन

▶ व्यक्तियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण प्रवासन है

प्रवासन का अर्थ है व्यक्तियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण। यह स्थानांतरण रोज़गार, शिक्षा, बेहतर जीवन स्तर, राजनीतिक अस्थिरता या प्राकृतिक आपदाओं जैसे कारणों से हो सकता है। प्रवासन दो प्रकार का हो सकता है:

1) आंतरिक प्रवासन: देश के भीतर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाना।

2) अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन: एक देश से दूसरे देश में जाना।

वैश्वीकरण और प्रवासन के बीच संबंध

आर्थिक अवसर:

वैश्वीकरण ने विभिन्न देशों के बीच आर्थिक असमानता को उजागर किया है, जिससे लोग बेहतर नौकरियों और जीवन स्तर की तलाश में विकसित देशों की ओर प्रवास करते हैं।

प्रौद्योगिकी और संचार:

इंटरनेट और सस्ती परिवहन सेवाओं के कारण लोग अन्य देशों में अवसरों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जिससे प्रवासन में वृद्धि हुई है।

संस्कृति और प्रभाव:

वैश्वीकरण के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का संपर्क बढ़ा है, जिससे लोग अन्य देशों में अपनी संस्कृति के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए प्रेरित होते हैं।

श्रम बाज़ार:

वैश्वीकरण ने श्रम बाज़ार को व्यापक बनाया है। कई देशों को सस्ते और कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन को प्रोत्साहन मिलता है।

शरणार्थी और प्रवासी संकट:

युद्ध, राजनीतिक अस्थिरता और पर्यावरणीय आपदाएँ लोगों को अपने देश छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं।

प्रभाव

सकारात्मक:

- सांस्कृतिक आदान-प्रदान।
- प्रवासियों के माध्यम से देशों को आर्थिक लाभ।

नकारात्मक:

- प्रवासियों के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक चुनौतियाँ।
- शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि।

- राजनीतिक और सामाजिक तनाव।

1.1.4 प्रवासी - जाति, लिंग, भाषा और पहचान के प्रश्न :

▶ गंतव्य देश में प्रवासियों को दोयम दर्जे का समझा जाता था और वे नस्लवाद का शिकार होते थे

प्रवासन सदियों पुरानी प्रक्रिया रही है। मानव समुदाय समूह के रूप में अच्छे भविष्य और आजीविका के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवाहित होते रहे। भारत के करीब 2.5 करोड़ से अधिक लोग लगभग 196 देशों में फैला हुआ है। इसमें भारतीय मूल के लोग और आप्रवासी भारतीय दोनों शामिल हैं। प्रवास में रहते हुए एक व्यक्ति को अपनी भाषा, जाति, रूप रंग, पहचान जैसे कई स्तर पर नाना विध भेदभावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। प्रवासन की पहली स्थिति में प्रवासी लोगों को इस प्रकार रूप, रंग, जाति, भाषा आदि के स्तर पर वहाँ के लोग अपने से निम्न या हेय समझा जाता था। इन देशों में प्रवासियों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार होता था। नस्लवाद के चलते नफरत झेलनी पड़ती थी। भारत से गए पहली पीढ़ी अन्य देशों की संस्कृति से समायोजन नहीं कर पाए और वह वतन वापसी के सपना संजोते रहे और अपनी पहचान के लिए संघर्ष में उलझते रहे। प्रवासियों के साथ होनेवाली हीनता के भाव से उनमें शर्मसार मानसिकता उत्पन्न होती है। प्रवासी जीवन का दारुण पक्ष यह भी है कि महिलाओं के साथ विदेश में शोषण अधिक हो रहा है। क्लब संस्कृति के अन्य रूपांतरण में वहाँ देह व्यापार भी है।

▶ महात्मा गाँधी ने प्रवासियों की मदद करने में अहम भूमिका निभाई

मॉरीशस, फिजी, सुरीनाम आदि देशों में जो भारतीय गए हैं वे अशिक्षित एवं गरीब थे। श्रमिक लोग थे। उन गरीबों को प्रलोभन में फंसा कर वहाँ भेड़ बकरियों की तरह ले गया। इन लोगों को गोरे लोग अर्थात् उनके मालिकों ने गुलाम बनाकर रखा और उन पर अत्याचार किया। उन्हें अपमान और यातना भरी जीवन बिताना पड़ा। यूरोप और अमेरिका गए भारतीयों को भी रंग भेद का शिकार होना पड़ा। काले रंग के कारण अपने मालिक उन्हें अपमानित करते थे। महात्मा गाँधी ने प्रवासियों की मदद करने में अहम भूमिका निभाई है और उनके लिए संघर्ष किया।

▶ प्रवासी देशों में कई सामाजिक समस्याओं और सांस्कृतिक संकटों से गुज़रना पड़ा

भारतीय गिरमिटिया जिन जिन देशों में गए वहाँ पर भाषाई संकट था। यह लोग अधिकतर भोजपुरी और अवधी भाषी थे। भाषाई दूरी के कारण वहाँ पर उन्हें अनेक प्रकार के शोषण के शिकार होने पड़े। यह भी नहीं उन्हें प्रवासी देशों में कई सामाजिक समस्याओं और सांस्कृतिक संकटों से गुज़रना पड़ा। खेतों में, कारखानों में मालिक और मजदूरों के बीच संवादहीनता और मनमुटावों की स्थिति भी भाषा के कारण उत्पन्न हुई। अपने लिंग, जाति, भाषा और पहचान के प्रश्न प्रवासियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी

1.1.5. होमी भाभा की संकरता की अवधारणा(Hybridity)

▶ उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण विचार

होमी भाभा की संकरता (Hybridity) की अवधारणा उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण विचार है। यह सिद्धांत बताता है कि औपनिवेशिक काल में और उसके बाद, विभिन्न संस्कृतियों, पहचानों और भाषाओं का मिलना-जुलना होता है, जिससे एक नई, मिली-जुली संस्कृति का निर्माण होता है। इसे संकरता कहते हैं।

संकरता में दो या अधिक संस्कृतियाँ एक साथ आकर एक नई पहचान बनाती हैं

संकरता में दो या अधिक संस्कृतियाँ एक साथ आकर एक नई पहचान बनाती हैं, जो एक ओर तो उनकी अपनी विशेषताओं को बनाए रखती है, लेकिन दूसरी ओर यह एक नई, अद्वितीय पहचान का निर्माण भी करती है। भाभा का कहना था कि औपनिवेशिक और औपनिवेशिक विरोधी ताकतों के बीच यह संकरता एक महत्वपूर्ण जगह है, जहाँ दोनों पक्षों का प्रभाव देखने को मिलता है और यह स्थान औपनिवेशिक प्रभुत्व का प्रतिरोध करने में मदद करता है। संकरता के माध्यम से, उपनिवेशित समाज अपनी मूल पहचान और विदेशी प्रभाव को एकसाथ रखकर एक नई पहचान की ओर बढ़ते है।

1.1.6.बहु संस्कृतिवाद (Multiculturalism)

एक समाज में विभिन्न संस्कृतियों का सह-अस्तित्व संभव है

बहु संस्कृतिवाद एक व्यापक अवधारणा है। इसका मतलब है समाज में अलग-अलग संस्कृतियों को स्वीकार करना और उनका समर्थन करना। इसका अर्थ है अलग-अलग नस्लों, जातीयताओं और राष्ट्रीयताओं के लोग एक साथ रहे। बहु संस्कृति वाद से समाज में विचारों का आदान-प्रदान बढ़ता है। स्कूलों, व्यापारों या राष्ट्रों के स्तर पर बहु संस्कृति वाद को लागू किया जा सकता है। इससे समाज में सांस्कृतिक विविधता से जुड़ी नीतियों और दृष्टिकोण का प्रचार होता है। ऐसे सामाजिक और राजनीतिक सिद्धांत है जो विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और जातीय समूहों के सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करता है। यह समाज में सांस्कृतिक विविधता को न केवल स्वीकार करता है, बल्कि उसे सम्मान और प्रोत्साहन भी देता है। यह विचार इस विश्वास पर आधारित है कि एक समाज में विभिन्न संस्कृतियों का सह-अस्तित्व संभव है और यह समाज को समृद्ध बनाता है। बहु-संस्कृतिवाद व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान की स्वतंत्रता को बनाए रखने पर ज़ोर देता है।

विविध संस्कृतियों का सह अस्तित्व स्वीकार करना बहु संस्कृति वाद है

विविध संस्कृतियों का सह अस्तित्व स्वीकार करना बहु संस्कृति वाद है। यह तो सामाजिक गतिशीलता का आधार है। प्रत्येक संस्कृति की अपनी विशिष्ट पहचान होती है। भारत ने बहु संस्कृति वाद का अद्भुत आदर्श दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है। भारत ने बहु संस्कृति वाद को न केवल सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर बल्कि राजनीतिक स्तर पर बनाए रखा है। समाज में अलग-अलग संस्कृतियों को स्वीकार करना और उसे समर्थन देना।

1.1.7.प्रवासी (Migrant)और आप्रवासी (Immigrant) के बीच अंतर :

प्रवासी (Migrant) और आप्रवासी (Immigrant) के बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं, जो मुख्यतः उनके रहने के स्थान और प्रवास के उद्देश्य पर आधारित हैं।

प्रवासी (Migrant)

प्रवासी वह व्यक्ति होते हैं जो किसी विशेष स्थान से दूसरी जगह अस्थायी या स्थायी रूप से जाते हैं, चाहे वह किसी भी कारण से हो - रोज़गार, शिक्षा, बेहतर जीवन की तलाश या परिवारिक कारणों से।

स्थायित्व: प्रवासी का स्थायित्व अस्थायी हो सकता है। वे किसी स्थान पर कुछ समय के लिए जाते हैं और फिर वापस लौट सकते हैं, जैसे काम की तलाश में या मौसम के हिसाब से खेती करने वाले लोग।

कारण: प्रवास का कारण आर्थिक, सामाजिक, या व्यक्तिगत हो सकता है और यह किसी समय विशेष या परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है।

उदाहरण: एक व्यक्ति जो किसी अच्छे काम के अवसर के लिए एक शहर से दूसरे शहर या देश में जाता है, वह प्रवासी कहलाता है।

आप्रवासी (Immigrant)

परिभाषा: आप्रवासी वह व्यक्ति होते हैं जो स्थायी रूप से किसी दूसरे देश या स्थान में निवास करने के लिए जाते हैं। वे अपने मूल देश को छोड़कर एक नए देश में स्थायित्व की तलाश में होते हैं।

स्थायित्व: आप्रवासी आमतौर पर स्थायी रूप से निवास करते हैं। वे न केवल समय-समय पर बल्कि लंबे समय तक एक नए देश में रहने के लिए जाते हैं। वे नए देश की नागरिकता लेने, काम करने और जीवन यापन के लिए वहाँ बसते हैं।

कारण: आप्रवासी के जाने के कारण अधिकतर राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक होते हैं। उदाहरण के तौर पर युद्ध, उत्पीड़न, बेहतर जीवन स्तर की तलाश या नौकरी के बेहतर अवसर।

उदाहरण: एक व्यक्ति जो अपनी सरकार से उत्पीड़ित हो या आर्थिक संकट के कारण एक देश से दूसरे देश में स्थायी रूप से बसने जाता है, वह आप्रवासी कहलाता है।

मुख्य अंतर

इस प्रकार, प्रवासी और आप्रवासी दोनों के बीच मुख्य अंतर स्थायित्व, उद्देश्य और प्रवास के कारणों से संबंधित है।

प्रवासी उन्हें कहते हैं जो एक देश से दूसरे देश में काम धंधे या किसी अन्य कार्य के लिए जाकर बस गए हैं। किसी एक भौगोलिक इकाई से किसी अन्य भौगोलिक इकाई में व्यक्तियों के आकर बस जाने को आप्रवास कहते हैं। आधुनिक काल में यह आमतौर पर किसी एक देश के निवासी के किसी ऐसे दूसरे देश में आकर वहाँ का निवासी बन जाने को कहते हैं जहाँ के वह नागरिक ना हो। जब कोई व्यक्ति स्थाई रूप से रहने के लिए एक देश से दूसरे देश में जाता है वही आप्रवासन है। किसी व्यक्ति के अपने देश छोड़ने के कई कारण हो सकते हैं कभी-कभी वह बेहतर अवसरों की तलाश में जाते हैं और कभी जब वह अपने देश में रह नहीं सकते तब भी अपना देश छोड देते हैं।

▶ व्यक्ति स्थाई रूप से रहने के लिए एक देश से दूसरे देश में जाता है वही आप्रवासन है

1.1.8. प्रवासी भारतीय दिवस :

प्रवासी भारतीय दिवस (Pravasi Bharatiya Divas, PBD) भारत सरकार द्वारा

प्रवासी भारतीयों के योगदान को सम्मानित करने और उन्हें भारत के विकास से जोड़ने के लिए आयोजित एक वार्षिक आयोजन है। यह दिन प्रवासी भारतीयों और भारत के बीच सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।

9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मान्यता दी गई है। क्योंकि 1915 में इसी दिन महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे। 10 जनवरी 2003 से लेकर अब तक भारत के विभिन्न नगरों में प्रवासी भारतीय दिवस आयोजित किया जाता है। इस उत्सव में केंद्र और राज्य सरकारें अपनी भूमिका निभाती हैं और प्रवासी साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया जाता है। प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की संकल्पना स्वर्गीय लक्ष्मीमल सिंघवी के दिमाग की उपज थी। (प्रवासी भारतीय दिवस की संकल्पना स्वर्गीय लक्ष्मीमल सिंघवी की देन है)

▶ प्रवासी भारतीय दिवस की संकल्पना स्वर्गीय लक्ष्मीमल सिंघवी की देन है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासी साहित्य की अवधारणा बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में और इक्किसवीं सदी साहित्य का एक मुख्य अंग बन गया। वैश्वीकरण ने प्रवासन की प्रक्रिया को और भी तेज़ कर दिया और उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन की शाखा के रूप में प्रवासी साहित्य ने अपना स्थान बना लिया। प्रवास और आप्रवास में अंतर है। संस्कृत संकरता और जाति, लिंग, भाषा और पहचान प्रवासियों की मुख्य चुनौतियाँ।

21 वीं सदी के प्रारंभ में आधुनिक साहित्य के अंतर्गत प्रवासी हिन्दी साहित्य के नाम से एक नया युग प्रारंभ हुआ और 10 जनवरी 2003 को प्रवासी दिवस मनाये जाने के साथ ही प्रवासी हिन्दी साहित्य का श्री गणेश दिल्ली में हुआ और प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री वादी चिंतन को महिला प्रवासी लेखिकाओं ने उजागर किया है। उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
2. प्रवास और आप्रवास पर विचार कीजिए।
3. प्रवासी भारतीय दिवस पर विचार कीजिए।
4. सांस्कृतिक संकरता पर विचार कीजिए।
5. वैश्वीकरण और प्रवासन के संबंध पर प्रकाश डालिए।
6. विभिन्न देशों में प्रवासी साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्युअनंत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदु संधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं. बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य-सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी
13. प्रवासी आवाज - अंजना संधरी
14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन
15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर
2. प्रवासी हिन्दी साहित्य दशा एवं दिशा - प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी साहित्य का संस्कृति की रेखांकन - डॉ. इंदु के.वी.

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

प्रवासियों के प्रकार, प्रवास का वर्गीकरण, प्रवास के कारण, प्रवासन प्रवाह

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासियों के प्रकारों के बारे में अवगत होता है
- विभिन्न प्रकार के प्रवासन के बारे में समझता है
- प्रवासन के कारणों को जानता है
- विविध प्रकार के प्रवासन प्रवाह के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासन की प्रक्रिया बहुत पुरानी है। प्रवास मुख्यतः दो प्रकार के है और एक स्वैच्छिक प्रवास दूसरा अनैच्छिक या बलपूर्वक प्रवास। युद्ध, आतंकवाद, आर्थिक विपन्नता, बेरोज़गारी आदि के कारण कानूनी या गैर कानूनी तरीकों से व्यक्ति या समुदाय प्रवासन कर रहे हैं। प्रवासियों के प्रमुख प्रकार हैं - निष्कासित प्रवासी, राजनीतिक शरणार्थी, व्यापार प्रवासी, श्रमिक प्रवासी और शरणार्थी प्रवासी।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासियों के प्रकार, प्रवास के कारण, प्रवास के परिणाम

Discussion / चर्चा

2.1.1 प्रवासियों के प्रकार :

प्रवासियों को विभिन्न आधारों पर कई प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। उनके प्रवासन के कारण, उद्देश्य, दिशा और अवधि के अनुसार प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

निष्कासित प्रवासी :

निष्कासित प्रवासी का मतलब है, किसी व्यक्ति को अवैध होने या निर्वासन के कारण किसी देश से निकालना। निष्कासन से जुड़े कुछ नियम और बातें:।

- सामूहिक निष्कासन को मना किया गया है।
- किसी व्यक्ति को ऐसे देश से नहीं निकाला जा सकता, जहाँ उसे मृत्युदंड, यातना या अन्य अमानवीय या अपमानजनक व्यवहार या दंड का खतरा हो।
- शरणार्थी वह व्यक्ति होता है जिसे अपने घर से ज़बरन निकाला गया हो, जबकि प्रवासी वह व्यक्ति होता है जो आगे बढ़ना चुनता है।
- शरणार्थी अपने देश में उत्पीड़न या उत्पीड़ित होने के डर से पलायन करते हैं, जबकि प्रवासी कई कारणों से पलायन कर सकते हैं, जैसे- रोज़गार, परिवार, शिक्षा, वगैरह।

▶ प्रवासी कई कारणों से पलायन करने हैं

- शरणार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत कई सुरक्षाएँ मिलती हैं, जिनमें सबसे अहम है ''घर-वापसी'' का अधिकार। इसका मतलब है कि शरणार्थियों को उस देश द्वारा संरक्षित होने का अधिकार है जिसमें वे शरण चाहते हैं। वहीं, प्रवासी को अपने देश द्वारा विभिन्न तरह के संरक्षण का अवसर मिलता रहता है।

2.1.2 राजनीतिक शरणार्थी

- राजनीतिक शरणार्थी वह होता है, जो राजनीतिक उत्पीड़न के कारण अपनी मातृभूमि से भाग गया हो।

▶ राजनीतिक उत्पीड़न के कारण अपनी मातृभूमि से भागना

- राजनीतिक शरण तब मांगी जा सकती है जब लोग अपने देश में रहने से डरते हैं या उनपर अत्याचार होता है। फिर वे दूसरे देश चले जाते हैं। अगर उन्हें नए देश में रहने की अनुमति मिल जाती है, तो उसे राजनीतिक शरण कहा जाता है

2.1.3 व्यापार प्रवासी:

व्यापार प्रवासी वे लोग होते हैं जो व्यापार करने के लिए किसी दूसरे देश में जाते हैं:

- व्यापार प्रवासी, दुनिया भर में कई तरह के काम करते हैं, जैसे कि व्यापारी, मज़दूर, शिक्षक, अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक वगैरह।

▶ किसी व्यापार के लिए दूसरे देश में जाने वालों को व्यापार प्रवासी कहते हैं

- प्रवासी भारतीयों ने दुनिया के कई देशों में आर्थिक तंत्र को मज़बूत किया है।
- व्यापार का मतलब है, एक व्यक्ति या संस्था से दूसरे व्यक्ति या संस्था को सामानों का स्वामित्व ट्रांसफ़र करना। व्यापार को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है: आंतरिक व्यापार, बाह्य व्यापार।
- आंतरिक व्यापार, एक देश की सीमाओं के अंदर किया जाने वाला व्यापार होता है। वहीं, दो या ज़्यादा देशों के बीच होने वाला व्यापार जो व्यक्ति रोज़गार की तलाश में अपने देश से बाहर या देश के अंदर कहीं और जाता है, उसे प्रवासी श्रमिक कहते हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के मुताबिक, प्रवासी श्रमिक वह व्यक्ति है जो किसी दूसरे मकसद से नौकरी पाने के लिए एक देश से दूसरे देश में जाता है। प्रवासी श्रमिकों को विदेशी श्रमिक, अतिथि श्रमिक, या मौसमी श्रमिक भी कहा जाता है।

2.1.4 श्रमिक प्रवासी

- प्रवासी श्रमिकों का आम तौर पर उस देश या क्षेत्र में स्थायी रूप से रहने का इरादा नहीं होता जहाँ वे काम करते हैं।
- प्रवासी श्रमिकों को अक्सर गैर-मानक या मौसमी नौकरियाँ मिलती हैं।
- प्रवासी श्रमिकों को नौकरी की असुरक्षा का सामना करना पड़ता है।
- प्रवासी श्रमिक अपने परिवारों या भविष्य की योजनाओं के लिए पैसा कमाने पर ज़्यादा ध्यान देते हैं।
- प्रवासी श्रमिकों को अक्सर निर्माण जैसे उद्योगों में काम करना पड़ता है।
- प्रवासी श्रमिकों को कई क्षेत्रों में काम करना पड़ता है, जैसे कि आतिथ्य या चिकित्सा उद्योग।
- प्रवासी श्रमिक दुनिया भर में पाए जाते हैं।

▶ प्रवासी श्रमिकों को कई क्षेत्रों में काम करना पड़ता है

2.1.5 शरणार्थी प्रवासी

- शरणार्थी प्रवासी (Refugee Migrants): एक विशिष्ट श्रेणी में आते हैं। यह वर्ग उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो मजबूरी में प्रवासन (Forced Migration) के अंतर्गत आते हैं।
- शरणार्थी प्रवासी वे लोग होते हैं जो युद्ध, उत्पीड़न, हिंसा, प्राकृतिक आपदा, या मानवाधिकारों के उल्लंघन के कारण अपना देश या निवास स्थान छोड़ने के लिए मजबूर होते हैं। ये लोग अपने जीवन की रक्षा के लिए दूसरे देश में शरण मांगते हैं और प्रवासन करते हैं।

▶ युद्ध, उत्पीड़न, हिंसा, प्राकृतिक आपदा या मानव अधिकारों के उल्लंघन के कारण अपना देश छोड़ने वाले को शरणार्थी प्रवासी कहते हैं

2.2.1 प्रवास का वर्गीकरण : (Classification of Migration)

प्रवास का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया जा सकता है। इसे प्रवासन के उद्देश्य, दिशा, अवधि, प्रकृति और कारणों के आधार पर विभाजित किया जाता है।

2.2.2.आंतरिक प्रवास

जब लोग अपने देश के भीतर एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं, तो इसे आंतरिक प्रवास कहते हैं। आंतरिक प्रवास के कुछ उदाहरण ये हैं : शिक्षा या आर्थिक सुधार के लिए जाना, प्राकृतिक आपदा या नागरिक अशांति के कारण जाना, राजनीतिक कारणों से जाना, संस्कृति के कारण जाना।

आंतरिक प्रवास को घरेलू प्रवास भी कहा जाता है। दुनिया में होने वाले ज़्यादातर प्रवास आंतरिक ही होते हैं। साल 2015 में अनुमान लगाया गया था कि दुनिया भर में 740 मिलियन से ज़्यादा लोग अपने ही देश में प्रवास कर गए थे।

▶ दुनिया में होने वाले ज़्यादातर प्रवास आंतरिक होते हैं

आंतरिक प्रवास को विकास और सामाजिक बदलाव के लिए फ़ायदेमंद माना जाता है। हालांकि, इसकी प्रक्रियाएँ और असर जटिल हो सकते हैं।

2.2.3. अंतर्राष्ट्रीय प्रवास

अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का मतलब है, किसी दूसरे देश में बसने के लिए लोगों का अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार करना। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, जो भी व्यक्ति अपना निवास स्थान बदल लेता है, उसे अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी माना जाता है। इसमें कानूनी स्थिति, आंदोलन की प्रकृति या उद्देश्य कुछ भी हो, सभी प्रवासी शामिल हैं।

▶ संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक, जो भी व्यक्ति अपना निवास स्थान बदल लेता है, उसे अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी माना जाता है

अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, वैश्विक नीति एजेंडे के अहम मुद्दों में से एक है। यह भेजने वाले और पाने वाले दोनों देशों में आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक रूप से असर डालता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के कई कारण हो सकते हैं, जैसे कि आर्थिक, राजनीतिक, जनसांख्यिकीय, पर्यावरणीय और सामाजिक-सांस्कृतिक।

2.2.4 मौसमी प्रवास

▶ मौसम के आधार पर लोग एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं

मौसमी प्रवास का मतलब है, लोगों का मौसमी आधार पर एक जगह से दूसरी जगह जाना। यह आमतौर पर श्रम की मांग में मौसमी बदलावों के कारण होता है। मौसमी प्रवास को ऋतु प्रवास भी कहा जाता है।

भारत में गद्दी, बकरवाल, भोटिया आदि जनजातियाँ ऋतु प्रवास करती हैं। तिब्बत पर चीनी कब्ज़े से पहले, भोटिया लोग तिब्बत की यात्रा और व्यापार करते थे।

प्रवास के कई अलग-अलग प्रकार होते हैं, जिनमें आंतरिक और बाहरी प्रवास, सकल या शुद्ध प्रवास और आप्रवासन और उत्प्रवास शामिल हैं।

2.2.5 स्थायी प्रवास

▶ स्थाई प्रवास में लोग अपने गंतव्य स्थान से लौटकर मूल स्थान में नहीं आते हैं

जब कोई व्यक्ति अपने जन्म स्थान से हटकर किसी दूसरी जगह पर स्थायी रूप से बसने का फ़ैसला करता है, तो इसे स्थायी प्रवास कहते हैं। स्थायी प्रवास में आए लोग बसने के बाद अपने मूल स्थान पर नहीं जाते।

2.3.1 प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम

प्रवास के कई सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं:

2.3.2.सकारात्मक परिणाम:

- प्रवास से मेज़बान देश की सांस्कृतिक विविधता बढ़ती है।
- प्रवासियों और उनके परिवारों को आय में वृद्धि होती है।
- प्रवासियों को शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहूँच मिलती है।
- प्रवासन से वस्तुओं और सेवाओं में ज़्यादा व्यापार होता है।
- प्रवासन से नवाचार और विकास को बढ़ावा मिलता है।
- ग्रामीण क्षेत्रों को प्रौद्योगिकी और नवीनतम तकनीकों तक पहूँच मिलती है।

2.3.3 नकारात्मक परिणाम :

▶ प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम होते हैं

- प्रवासियों को अलगाव, भेदभाव या सांस्कृतिक टकराव का सामना करना पड़ सकता है।
- स्थानीय मूल निवासी अपनी संस्कृति और मान्यताओं को खो सकते हैं।
- प्रवासन से स्थानीय क्षेत्रों में बेरोज़गारी और गरीबी बढ़ सकती है।
- प्रवासियों की संलिप्तता आपराधिक गतिविधियों में बढ़ सकती है।
- संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा बढ़ सकता है।

2.4.1 प्रवास के कारण :

प्रवास का कारण उन प्रेरणाओं को संदर्भित करता है जो व्यक्तियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए प्रेरित करती हैं, जैसे कि आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक या जातीय कारक। इन प्रेरणाओं में बेहतर अवसरों की तलाश, उत्पीड़न से बचना या अलग जीवन शैली अपनाना शामिल हो सकता है।

2.4.2 प्रतिकर्ष कारक: (push factor)

- प्रतिकर्ष कारक वे कारक होते हैं जो लोगों को अपने मूल स्थान या निवास स्थान को छोड़कर किसी नए स्थान पर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। ये कारक नकारात्मक या प्रतिकूल परिस्थितियाँ होती हैं। प्रतिकर्ष कारकों के कुछ उदाहरणः

▶ प्रवास के मुख्य कारण है प्रतिकर्ष कारक और अपकर्ष कारक

- गरीबी, बेरोज़गारी, अवसरों की कमी, राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध, प्राकृतिक आपदाएँ, पर्यावरणीय गिरावट।
- प्रतिकर्ष कारकों के अलावा, लोगों को किसी नए स्थान पर जाने के लिए प्रोत्साहित करने वाले सकारात्मक कारकों को अपकर्ष कारक कहते हैं। अपकर्ष कारकों के कुछ उदाहरण : बेहतर नौकरी के अवसर, उच्च वेतन, बेहतर रहने की स्थिति, सुरक्षित वातावरण।
- लोगों का प्रवास, मूल या प्राप्त क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण में बदलाव के कारण होता है। प्रवास करने की संभावना वयस्कों में ज़्यादा होती है। ग्रामीण से शहरी प्रवास, प्रवास का प्रमुख हिस्सा है।

2.4.3 अपकर्ष कारक

प्रवास के लिए उत्तरदायी कारणों को प्रतिकर्ष या अपकर्ष कारक कहा जाता है। अपकर्ष कारक (Pull Factor) वे कारण होते हैं जिनकी वजह से लोग किसी गंतव्य स्थान को उद्गम स्थान की तुलना में ज़्यादा आकर्षक मानते हैं. अपकर्ष कारकों के कुछ उदाहरण ये रहे:

- बेहतर काम के अवसर
- रहने की अच्छी दशाएँ
- शांति और स्थायित्व

- जीवन और संपत्ति की सुरक्षा
- अनुकूल जलवायु
- स्वास्थ्य सुविधाएँ
- उच्च वेतन

जब लोग प्रवास करते हैं, तब प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक एक साथ काम करते हैं। प्रवास के लिए उत्तरदायी कारण कई तरह के हो सकते हैं, जैसे कि पर्यावरण, आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-राजनीतिक।

2.4.4 आर्थिक कारण

प्रवास के आर्थिक कारण ये हैं:

- गरीबी, बेरोज़गारी और निम्न उत्पादकता जैसी आर्थिक कठिनाइयाँ लोगों को अपने वर्तमान निवास क्षेत्र से पलायन के लिए प्रेरित करती हैं।
- बेहतर रोज़गार अवसर, उच्च वेतन और बेहतर जीवन स्तर की संभावनाएँ लोगों को नए स्थान पर जाने के लिए आकर्षित करती हैं।
- विनिमय दरें, व्यापार चक्र और रोज़गार की स्थिति में बदलाव से प्रेरित आय में अस्थिरता प्रवासियों को उनके मूल देश से बाहर धकेल सकती है।
- मूल देश में उच्च बेरोज़गारी एक धक्का कारक के रूप में कार्य कर सकती है।
- प्रवासी आमतौर पर कम बेरोज़गारी वाले क्षेत्रों में चले जाते हैं।

2.4.5 प्रवास के सामाजिक और राजनीतिक कारण

राजनीतिक कारण

- गरीबी और बेरोज़गारी लोगों को अपने निवास स्थान से और कहीं जाकर बसने के लिए विवश करते हैं

संघर्ष, युद्ध, उत्पीड़न, स्वतंत्रता की कमी और मानवाधिकारों की हानि जैसे राजनीतिक कारण प्रवास के लिए प्रेरित करते हैं।

सामाजिक कारण

सामाजिक कारक, जैसे विवाह, परिवार के पुनर्मिलन, या अपने समुदाय के पास रहने की इच्छा, प्रवास को प्रभावित करते हैं।

प्रवास के कारणों को पुश या पुल फैक्टर, स्वैच्छिक या मजबूर के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्रवास के परिणाम आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और जनसांख्यिकीय हो सकते हैं। प्रवास के कुछ प्रमुख परिणाम ये रहे:

- प्रवास के परिणाम आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और जनसांख्यिकीय

- शहरी क्षेत्रों की जनसांख्यिकीय संरचना पर असर
- जनसंख्या का भार बढ़ना
- बेरोज़गारी बढ़ना
- जीवन की खराब गुणवत्ता
- अपराध बढ़ना

- जन्म दर, मृत्यु दर, लिंग अनुपात पर असर

2.4.6. जनांकिकीय कारण:

जनांकिकीय कारण (Demographic Factors) ऐसे कारण होते हैं जो जनसंख्या की संरचना, वृद्धि, वितरण और उसके विभिन्न पहलुओं से जुड़े होते हैं। ये कारण प्रवासन को प्रभावित करते हैं, क्योंकि वे किसी क्षेत्र में संसाधनों, राज़गार और जीवन स्तर पर सीधा प्रभाव डालते हैं।

जनांकिकीय कारणों के प्रकार और प्रभाव

- जनांकिकीय कारण प्रवासन का एक प्रमुख आधार है

जनसंख्या घनत्व (Population Density), अत्यधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र, भीड़भाड़, संसाधनों की कमी और जीवन स्तर में गिरावट के कारण लोग कम घनत्व वाले क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं।

कम जनसंख्या वाले क्षेत्र

इन क्षेत्रों में रोज़गार और विकास के अवसर सीमित होते हैं, जिससे लोग बेहतर अवसरों की तलाश में प्रवास करते हैं।

तेजी से बढ़ती जनसंख्या:

अधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाले क्षेत्रों में संसाधन जैसे पानी, खाद्य और रोज़गार की मांग बढ़ जाती है। उदाहरण: अफ्रीका के कई देशों से यूरोप की ओर प्रवासन।

- किसी भी देश की बढ़ती जनसंख्या प्रवास के लिए एक मुख्य कारण है

निम्न जनसंख्या वृद्धि दर

इन क्षेत्रों में प्रवासी कामगारों की आवश्यकता होती है। उदाहरण: जापान और यूरोपीय देशों में जनसंख्या घटने से विदेशों से प्रवासन।

लिंग अनुपात (Sex Ratio)

- असंतुलित लिंग अनुपात।
- पुरुष या महिलाओं का पलायन काम या विवाह के लिए होता है। उदाहरण: पुरुषों का गाँव से शहर में रोज़गार के लिए प्रवासन
- जनसंख्या संरचना और विविधता (Population Composition)।
- विभिन्न जातीय, धार्मिक, या सांस्कृतिक समूहों के बीच संघर्ष भी प्रवासन को प्रेरित कर सकता है। उदाहरण: म्यांमार में रोहिंग्या समुदाय का पलायन।

शहरीकरण (Urbanization):

- ग्रामीण क्षेत्रों में कम सुविधाओं और कम रोज़गार के अवसरों के कारण लोग शहरों की ओर प्रवास करते हैं। उदाहरण: भारत और चीन में बड़े पैमाने पर ग्रामीण से शहरी प्रवासन।
- प्राकृतिक आपदाएँ और पुनर्वास (Natural Disasters and Resettlement):

प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़, भूकंप, सूखा आदि जनसंख्या को अन्य स्थानों पर बसने के लिए मजबूर करती हैं। उदाहरण: तटीय क्षेत्रों से पहाड़ी क्षेत्रों की ओर पलायन।

2.5.1 प्रवासन प्रवाह :

- "प्रवासन प्रवाह'' का अर्थ है "प्रवास की धारा'' या "प्रवास का प्रवाह''। यह शब्द आमतौर पर लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, चाहे वह राज़गार, शिक्षा, जीवनशैली में बदलाव या आर्थिक अवसरों के लिए हो। प्रवासन प्रवाह के प्रमुख भेद निम्नलिखित है-

2.5.2 ग्रामीण - ग्रामीण :

ग्रामीण-ग्रामीण प्रवासन का मतलब है, जब लोग कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था वाले गाँवों में फसल कटाई या बुआई के लिए एक गाँव से दूसरे गाँव जाते हैं। यह प्रवासन, तब होता है जब मूल गाँव में खेतों पर काम करने के अवसर नहीं होते। यानी, श्रम की आपूर्ति, मांग से ज़्यादा होती है।

2.5.3 ग्रामीण -शहरी

ग्रामीण से शहरी प्रवासन का मतलब है कि लोग कम आबादी वाले इलाकों से ज़्यादा आबादी वाले इलाकों में जाना चुनते हैं। प्रवासन का मतलब है, लोगों का एक जगह से दूसरी जगह शारीरिक रूप से जाना। ग्रामीण से शहरी प्रवासन के बारे में कुछ खास बातें:

- ग्रामीण से शहरी प्रवासन के कारण, शहरों में जनसंख्या घनत्व बढ़ता है और ग्रामीण इलाकों की आबादी कम होती है।
- ग्रामीण से शहरी प्रवासन, शहरीकरण का एक कारण है।
- ग्रामीण से शहरी प्रवासन पर समाज, जीवन स्तर और पर्यावरण का बहुत असर पड़ता है।

- ग्रामीण से शहरी प्रवासन को कम करने के लिए, ग्रामीण इलाकों में शिक्षा और रोज़गार के अवसर बढ़ाने की ज़रूरत है

ग्रामीण से शहरी प्रवासन के पीछे के कुछ कारण

- ग्रामीण इलाकों में बुनियादी ज़रूरतों जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय आज़ादी का अभाव।
- शहरी इलाकों में नौकरियों के ज़्यादा अवसर।
- शहरी इलाकों में बेहतर जीवन स्तर।
- ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर प्रवासन सबसे अधिक होता है

2.5.4 शहरी - शहरी

- रोज़गार के अवसर: रोज़गार के अवसर सबसे आम कारण हैं, जिनके कारण लोग पलायन करते हैं।
- बेहतर शिक्षा: बेहतर शिक्षा की तलाश में लोग अपने मूल स्थान से जा सकते हैं।

- विवाह: विवाह के कारण भी लोग अपने मूल स्थान से जा सकते हैं।
- सामाजिक कारक: विवाह, परिवार के पुनर्मिलन या अपने समुदाय या सामाजिक नेटवर्क के पास रहने की इच्छा भी प्रवास का कारण हो सकती है।
- जाति-आधारित भेदभाव और हिंसा से बचने के लिए प्रवास: जाति-आधारित भेदभाव और हिंसा से बचने के लिए भी लोग प्रवास करते हैं।
- गरीबी से बचने के लिए प्रवास: गरीबी से बचने और बेहतर जीवन की तलाश में लोग दूसरे देशों में चले जाते हैं।
- पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन: पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन भी प्रवास के कारण हो सकते हैं।

- गरीबी से बचने और बेहतर जीवन की तलाश में लोग दूसरे देशों में चले जाते हैं

प्रवास के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं

- कुशल श्रमिकों या कामगारों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करने से उस स्थान की वित्तीय और आर्थिक वृद्धि हो सकती है।
- प्रवासी उस देश के लिए संभावित करदाता बन सकते हैं, जहाँ वे प्रवास कर गए हैं।

2.5.5 शहरी -ग्रामीण (Urban-to-Rural Migration)

- उस प्रवासन को कहते हैं जिसमें लोग शहरों (Urban Areas) से ग्रामीण क्षेत्रों (Rural Areas) की ओर पलायन करते हैं। यह प्रवासन आमतौर पर विशेष परिस्थितियों, सामाजिक-आर्थिक कारणों और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के आधार पर होता है।
- गाँवों से शहरों की ओर जो प्रवासन होता है उससे कम प्रवासन ही शहरों से गाँव की ओर होता है। इसका मुख्य कारण शहरों की अपेक्षा बहुत कम सुविधाएँ ही गाँवों में प्राप्त होती है। इनमें अधिकांशतः प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति आकर्षण के कारण होता है। खेती-बाड़ी, जानवर पालन, मछली पालन, प्राकृतिक सुषमा में रहना आदि के कारण होता है। शहर के सभी प्रकार के कोलाहल, हाल चाल से मुक्त शांत और स्वस्थ जीवन बिताने की चाह ही इसके पीछे होता है। गाँव की हरीतिमा, स्वच्छता एवं सुन्दरता ऐसे प्रवासियों के लिए बहुत प्रिय होता है।

- शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवासन कई कारकों से प्रेरित होता है

शहरी-ग्रामीण प्रवासन का अर्थ और कारण

- शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवासन कई कारकों से प्रेरित होता है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

1. **बेहतर जीवन की तलाश** (Search for a Better Lifestyle):

- शहरी क्षेत्रों की तेज़-तर्रार और तनावपूर्ण ज़िंदगी से बचने के लिए लोग ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं।
- शांत वातावरण, कम प्रदूषण और प्राकृतिक जीवन शैली मुख्य कारण हैं।

2. **निवृत्ति** (Retirement Migration):

- सेवानिवृत्त लोग ग्रामीण क्षेत्रों में बसने का निर्णय लेते हैं, जहाँ जीवन सस्ता और शांत होता है।
- उदाहरण: शहरी नौकरी करने वाले लोग रिटायरमेंट के बाद अपने मूल गाँव लौट जाते हैं।

3. **शहरी जीवन की समस्याएँ** (Urban Problems):

- शहरों में बढ़ती भीड़, प्रदूषण, महंगी ज़िंदगी और आवास की समस्या लोगों को गाँव की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर करती है।

4. **सामाजिक संबंध** (Social Ties):

- लोग अपने परिवार, समाज और संस्कृति से जुड़े रहने के लिए अपने मूल ग्रामीण क्षेत्र में लौट आते हैं।

5. **काम के अवसर** (Job Opportunities in Rural Areas):

- कृषि, पर्यटन या ग्रामीण उद्योगों में काम के नए अवसर पैदा होने से लोग ग्रामीण क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं।
- उदाहरण: सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में नई योजनाओं और उद्योगों की स्थापना।

6. **सस्ती ज़मीन और आवास** (Affordable Housing and Land):

- शहरी क्षेत्रों में बढ़ती ज़मीन और मकान की कीमतों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में आवास और भूमि खरीदना अधिक सस्ता होता है।

7. **महामारी और आपदाएँ** (Pandemics and Disasters):

- जैसे COVID-19 महामारी के दौरान, लोग भीड़भाड़ वाले शहरों से कम प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में पलायन करने लगे।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासियों के विभिन्न प्रकार होते हैं जैसे कि निष्कासित प्रवासी, राजनीतिक शरणार्थी, व्यापार प्रवासी, श्रमिक प्रवासी और शरणार्थी प्रवासी। प्रवास का वर्गीकरण करते हुए उसमें आंतरिक प्रवास, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, स्थाई प्रवास आदि देख सकते हैं और प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम होते हैं। प्रवास के विभिन्न कारण होते हैं। शांत वातावरण, कम प्रदूषण और प्राकृतिक जीवन शैली के कारण शहरों से लोग गाँवों की ओर प्रवासन करते हैं

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रवास के प्रमुख कारणों पर चर्चा कीजिए।
2. प्रवासन प्रवाह माने क्या है? उसके भेदों पर प्रकाश डालिए।
3. प्रवास के सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों पर चर्चा कीजिए।
4. प्रवासियों के प्रमुख प्रकारों पर विचार कीजिए।
5. आंतरिक प्रवास और अंतराष्ट्रीय प्रवास में क्या अंतर है विचार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्युअनंत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदु संधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास च तुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी
13. प्रवासी आवाज - अंजना संधरी
14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन
15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. भारतीय डायस्पोराः विविध आयाम, राम चरण जोशी, राजीव रंजन राय, प्रकाश चंद्रयान, प्रशांत खत्री।
2. प्रवासी साहित्य का इतिहासः सिद्धांत एवं विवेचन, डॉ. बापू राव देसाई।
3. प्रवासी साहित्य दशा और दिशा, डॉ. प्रदीप श्रीधर

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 3

प्रवासी साहित्य और भारतीयता, प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्य में निहित भारतीयता को समझता है
- प्रवासी साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों से अवगत होता है
- प्रवासी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ जानता है
- प्रवासी साहित्य का महत्व समझता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासियों द्वारा प्रवास में रचित साहित्य में भारतीयता की विलक्षणताओं की अभिव्यक्ति मिलती है। मातृभूमि के लिए उभरती लालसा, नॉस्टैल्जिया, नस्लवाद, सांस्कृतिक संघर्ष, दोहरी और संकर पहचान, दोहरी वफादारी, सांस्कृतिक संकरता जैसी विशेषताएँ प्रवासी साहित्य की पहचान है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भारतीयता, संकर पहचान, सांस्कृतिक संकरता

Discussion / चर्चा

3.1.1 प्रवासी साहित्य और भारतीयता

- प्रवासियों द्वारा प्रवास में रचित साहित्य

प्रवासी साहित्य और भारतीयता एक महत्वपूर्ण विषय है। सामान्यतः प्रवासियों द्वारा प्रवास में रचित साहित्य ही प्रवासी साहित्य है, जो प्रवासन के अनुभवों और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम, अपनी पहचान बनाये रखने से संबंधित संघर्ष और जड़ों से दूर होने की पीड़ाओं के बीच अपने संबंधों को साहित्य में उजागर करता है। यह साहित्य उन प्रवासियों के जीवन, संघर्ष और भावनाओं का दस्तावेज़ है, जिन्होंने भौगोलिक सीमाओं को पार किया है, लेकिन भारतीयता को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त

किया है।

प्रवासी साहित्य (Diasporic Literature)

प्रवासी साहित्य उन रचनाओं को कहा जाता है जो उन लेखकों द्वारा लिखी गई हैं, जिन्होंने किसी दूसरे देश में रहकर भारतीय संस्कृति, परंपरा और प्रवासी अनुभवों को अभिव्यक्ति दी है।

3.2.1 प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियाँ

प्रवासी हिन्दी साहित्य की कुछ सामान्य विशेषताएँ है-

- प्रवासी साहित्य में रचनात्मक साहित्य ज़्यादा लिखा गया है।
- प्रवासी साहित्य में आलोचनात्मक पक्ष पर ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया गया है।
- प्रवासी साहित्य नोस्टाल्जिया का साहित्य है।
- प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों की समस्याओं, अवैध प्रवास, होमलेस, वेश्यावृति, ड्रग्स पैडलर्स, भारत की स्मृति वगैरह पर लिखा गया है।
- प्रवासी साहित्य में दो संस्कृतियों के संघर्ष, भोगे हुए यथार्थ और सच को दिखाया गया है।
- प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन को दर्शाया गया है।
- प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति के मेल-मिलाप को दिखाया गया है।
- प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों की मानसिकता को दिखाया गया है।
- प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों के आध्यात्मिक अतीत और गरीब और पिछड़े वर्तमान को दिखाया गया है।
- प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीयों की विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित करने की भावना को दिखाया गया है।

> ▶ प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन को दर्शाता है

प्रवासी साहित्य में आमतौर पर दिखाई देने वाली कुछ विशेषताओं को निम्नलिखित शीर्षकों में बाँटा जा सकता है:

3.2.2.मातृभूमि के लिए उभरती लालसा:

> ▶ उनके मनोभावों, संघर्षों और आत्मीयता को प्रकट करता है

प्रवासी साहित्य उस साहित्य को कहा जाता है जिसे प्रवासी लेखक अपनी जड़ों, परंपराओं और अनुभवों के संदर्भ में लिखते हैं। यह साहित्य उन के मनोभावों, संघर्षों और आत्मीयता को प्रकट करता है। इसमें मुख्यतः मातृभूमि के प्रति गहरी लालसा और भावनात्मक लगाव दिखाई देता है।

मातृभूमि की यादः

प्रवासी साहित्य में मातृभूमि की स्मृतियों और वहाँ के जीवन का गहन चित्रण मिलता है। लेखक अपनी धरती, गाँव, भाषा और सांस्कृतिक परंपराओं को याद करते हुए

अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

उदाहरण: भूमि की मिट्टी की खुशबू, त्योहारों की धूम या पारिवारिक रिश्तों का उल्लेख।

संवेदनात्मक जुड़ाव:

मातृभूमि के प्रति भावनात्मक जुड़ाव प्रवासी साहित्य का एक प्रमुख तत्व है। लेखक अपनी जड़ों से दूर रहकर भी उनसे गहराई से जुड़े रहते हैं और यह जुड़ाव उनकी रचनाओं में उभरता है।

नॉस्टेल्जिया (Nostalgia):

मातृभूमि के प्रति गहरी लालसा अक्सर 'बीते दिनों' को याद करने के रूप में प्रकट होती है। प्रवासी लेखक अपनी रचनाओं में उस जीवन की सुंदरता को चित्रित करते हैं जिसे वे छोड़ आए हैं।

संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण:

मातृभूमि के प्रति प्रेम प्रवासी साहित्य में उसकी सांस्कृतिक और पारंपरिक धरोहर को संरक्षित रखने की लालसा के रूप में भी व्यक्त होता है। लेखक इस बात को लेकर चिंतित रहते हैं कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ी तक कैसे पहूँचाएँ।

विदेशी जीवन का संघर्ष और तुलना:

नई भूमि में प्रवासी अक्सर अपनी मातृभूमि की सरलता और गर्मजोशी को याद करते हैं। वे नई जगह के भौतिकवाद और एकाकीपन के बीच अपनी पुरानी दुनिया की सामुदायिक भावना को तलाशते हैं।

▶ मातृभूमि के लिए लालसा एक लेखक की पहचान का आधार होता है

भाषा और साहित्य के प्रति प्रेम:

अपनी मातृभाषा में लेखन और साहित्य को संरक्षित करना मातृभूमि से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। लेखक अपनी भाषा को जीवित रखने की कोशिश में अपनी संस्कृति के लिए योगदान करते हैं।

3.2.3.अलगाव:

प्रवासी साहित्य उन साहित्यिक कृतियों को कहा जाता है जो विदेशों में रहने वाले भारतीय लेखकों द्वारा लिखी जाती हैं। यह साहित्य प्रवासियों के अनुभव, उनकी संस्कृति और अपनी जड़ों से जुड़े रहने की छटपटाहट को व्यक्त करता है। प्रवासी साहित्य में कई प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं, जिनमें से एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति अलगाव (Alienation) है।

अलगाव की प्रवृत्ति:

▶ अलगाव का अर्थ है अपने परिवेश, समाज, या आत्मिक भावनाओं से दूरी का

अनुभव। प्रवासी साहित्य में अलगाव की प्रवृत्ति इस प्रकार प्रकट होती है:

- संस्कृति से अलगाव:
- प्रवासी लेखक अक्सर अपनी मातृभूमि और संस्कृति से दूरी महसूस करते हैं। वे अपने मूल सांस्कृतिक मूल्यों और नई संस्कृति के बीच संघर्ष का अनुभव करते हैं।
- भाषा से अलगाव:
- मातृभाषा से दूर होने पर लेखक अपनी अभिव्यक्ति में सीमाओं का अनुभव करते हैं। नई भाषा में ढलने का प्रयास करते हुए, वे अपनी जड़ों से कटाव महसूस करते हैं।

पहचान का संकट:

- प्रवासी समुदाय में रहने वाले लोग अक्सर अपनी पहचान को लेकर उलझन में रहते हैं। वे अपने मूल देश और नए देश के बीच की द्वंद्वात्मक स्थिति में फंस जाते हैं।

▶ मूल सांस्कृतिक मूल्यों और नई संस्कृति के बीच संघर्ष

- भौतिक और भावनात्मक अलगाव:

अपने परिवार, समाज और बचपन के परिचित माहौल से दूर होने पर अकेलेपन और उदासी की भावना प्रबल हो जाती है।

- नई संस्कृति में समायोजन का संघर्ष
- प्रवासी लेखक नई संस्कृति में पूरी तरह से रचने-बसने में कठिनाई महसूस करते हैं। इस प्रक्रिया में वे कई बार अलगाव और आत्म-निर्वासन का अनुभव करते हैं।

3.2.4 नस्लवाद:

प्रवासी साहित्य में नस्लवाद (Racism) एक महत्वपूर्ण और जटिल प्रवृत्ति है, जो उन प्रवासियों के अनुभवों को अभिव्यक्त करती है, जो नस्लीय भेदभाव, असमानता और पूर्वाग्रह का सामना करते हैं। यह प्रवृत्ति प्रवासियों की जीवन स्थितियों, संघर्षों और सामाजिक अन्याय के अनुभवों को साहित्य में स्थान देती है।

- **भेदभाव और अन्यता का अनुभव:**

▶ भारतीय प्रवासियों को पश्चिमी देशों में 'ब्रउनु' कहकर तिरस्कृत करना

प्रवासी साहित्य में नस्लीय भेदभाव का वर्णन अक्सर उन अनुभवों के माध्यम से किया जाता है, जहाँ प्रवासी अपनी त्वचा के रंग, जातीयता या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण 'दूसरे' (Other) के रूप में देखा जाता है।

- **आत्म-चेतना और हीन भावना:**

नस्लवाद के कारण प्रवासी लेखक और उन के पात्रों में आत्म-चेतना की भावना उत्पन्न होती है, जो उनकी पहचान और आत्मसम्मान को प्रभावित करती है। यह कई बार उन्हें हीन भावना से ग्रसित कर देता है।

- **सामाजिक और आर्थिक असमानता:**

प्रवासी साहित्य नस्लीय भेदभाव के कारण उत्पन्न सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को उजागर करता है। कई बार प्रवासियों को सिर्फ उनकी नस्ल के कारण

निम्न दर्जे की नौकरियाँ दी जाती हैं या उन्हें समान अवसर नहीं मिलते।

- **प्रतिक्रिया और विद्रोहः**

  नस्लवाद के खिलाफ लड़ाई और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना भी प्रवासी साहित्य का एक प्रमुख विषय है।

- **सांस्कृतिक पहचान का संकटः**

  नस्लीय भेदभाव प्रवासियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान पर प्रश्नचिह्न लगाने पर मजबूर करता है। वे इस संघर्ष से जूझते हैं कि नई संस्कृति में अपनी पहचान कैसे बनाए रखें।

3.2.5 जड़हीनता

- अपनी पहचान, संस्कृति और मूल से कट जाने की भावना को व्यक्त करती है

जड़हीनता (Rootlessness) प्रवासी साहित्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति है, जो प्रवासी लेखकों और पात्रों के भीतर अपनी पहचान, संस्कृति और मूल से कट जाने की भावना को व्यक्त करती है। यह प्रवृत्ति मुख्य रूप से प्रवास के कारण अपने मूल देश और नई जगह के बीच की दुविधा और अनिश्चितता से उत्पन्न होती है।

जड़हीनता की प्रवृत्ति के मुख्य पहलू

पहचान का संकटः

प्रवासी साहित्य में पात्र अपनी सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई पहचान को लेकर असमंजस में रहते हैं। वे न तो पूरी तरह अपने मूल देश से जुड़े रहते हैं और न ही नई भूमि में खुद को पूरी तरह अपना पाते हैं।

- **मातृभूमि से दूरी का दर्द**

  मातृभूमि से दूरी के कारण प्रवासी खुद को 'कहीं का नहीं' महसूस करते हैं। यह दूरी न के वल भौगोलिक होती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी होती है।

- प्रवासी साहित्य में जड़हीनता अक्सर पात्रों के भविष्य की अनिश्चितता को भी दर्शाती है

- **सांस्कृतिक विस्थापनः**

  नई संस्कृति में समायोजन के प्रयास में प्रवासी अपनी मूल सांस्कृतिक पहचान खोने लगते हैं। वे अक्सर अपने मूल्यों, रीति-रिवाजों और परंपराओं को लेकर भ्रमित हो जाते हैं।

- **दोहरी संस्कृति का बोझः**

  प्रवासी समुदाय दो संस्कृतियों के बीच फंसा रहता है। वे न तो पूरी तरह से नई संस्कृति को अपना पाते हैं, न ही पुरानी संस्कृति को पूरी तरह छोड़ पाते हैं। इस स्थिति में वे 'जड़हीनता' का अनुभव करते हैं।

- **भावनात्मक अलगावः**

  प्रवासियों को अपने परिवार, समाज और जड़ों से अलग होने का भावनात्मक

दर्द झेलना पड़ता है। वे एक स्थायी भावनात्मक शून्यता का अनुभव करते हैं।

- **भविष्य की अनिश्चितता**

  प्रवासी साहित्य में जड़हीनता अक्सर पात्रों के भविष्य की अनिश्चितता को भी दर्शाती है। यह स्पष्ट नहीं होता कि वे अपनी पुरानी पहचान को बनाए रख पाएँगे या नई जगह में अपनी जगह बना पाएँगे।

3.2.6.सांस्कृतिक संघर्ष :

सांस्कृतिक संघर्ष (Cultural Conflict) प्रवासी साहित्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति है, जो प्रवासियों के जीवन में उनकी मूल संस्कृति और नई भूमि की संस्कृति के बीच होने वाले संघर्ष को व्यक्त करती है। यह संघर्ष प्रवासी समुदाय के व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभवों का हिस्सा बनकर साहित्य में स्थान पाता है।

सांस्कृतिक संघर्ष में निम्नलिखित बातें आती हैं -

- **मूल और विदेशी संस्कृति के बीच द्वंद्वः**

प्रवासी साहित्य में पात्र अक्सर अपनी मातृभूमि की संस्कृति और नए देश की संस्कृति के बीच संघर्ष करते हैं। वे अपनी परंपराओं और नई संस्कृति की अपेक्षाओं के बीच तालमेल बैठाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

- **पीढ़ियों के बीच टकरावः**

प्रवासी परिवारों में सांस्कृतिक संघर्ष अक्सर पीढ़ियों के बीच प्रकट होता है। पहली पीढ़ी की तुलना में दूसरी या तीसरी पीढ़ी नई संस्कृति को अधिक जल्दी अपनाती है, जिससे माता-पिता और बच्चों के बीच विचारों का टकराव होता है।

- **आदतों और परंपराओं में अंतरः**

खान-पान, पहनावा, भाषा और सामाजिक रीति-रिवाजों में अंतर के कारण प्रवासी खुद को असमंजस और तनावपूर्ण स्थिति में पाते हैं।

- **सांस्कृतिक पहचान का संकटः**

नई भूमि में रहने वाले प्रवासियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और नई संस्कृति में समायोजन करने की दुविधा का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति उन के मन में एक स्थायी संकट पैदा करती है।

- **भेदभाव और पूर्वाग्रहः**

सांस्कृतिक भिन्नता के कारण प्रवासियों को कई बार नस्लीय भेदभाव और सामाजिक अस्वीकृति का सामना करना पड़ता है। यह संघर्ष उनकी सांस्कृतिक जड़ों को और गहरा करता है।

- **असुरक्षा और सामंजस्य का प्रयासः**

प्रवासी नई संस्कृति को समझने और उसमें सामंजस्य बिठाने का प्रयास करते हैं,

लेकिन कभी-कभी यह प्रक्रिया उनके लिए बहुत चुनौतीपूर्ण हो जाती

3.2.7. विपरीत सांस्कृतिक आघात (Cultural Shock)

- प्रवासी साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति

विपरीत सांस्कृतिक आघात (Cultural Shock) प्रवासी साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जो प्रवासियों के जीवन में नई और अपरिचित सांस्कृतिक परिस्थितियों के संपर्क में आने के कारण उत्पन्न होने वाले भावनात्मक और मानसिक तनाव को व्यक्त करती है। यह प्रवृत्ति प्रवासियों के अनुभवों और उनके सांस्कृतिक अनुकूलन की प्रक्रिया को गहराई से समझने में मदद करती है।

विपरीत सांस्कृतिक आघात की मुख्य विशेषताएँ -

- **नई संस्कृति का अस्वीकार्य होना:**

प्रवासी जब किसी नए देश या समाज में जाते हैं, तो वहाँ की संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज़ और जीवनशैली उनके लिए अपरिचित और असहज हो सकती है। यह उनके मन में अस्वीकार्यता और आघात की भावना पैदा करता है।

- मूल देश की संस्कृति में जो अपनापन और आत्मीयता महसूस करते हैं

- **आत्मीयता की कमी:**

प्रवासी अपने मूल देश की संस्कृति में जो अपनापन और आत्मीयता महसूस करते हैं, वह नई संस्कृति में नहीं मिलती। यह भावना उनके लिए मानसिक संघर्ष का कारण बनती है।

- **भाषाई बाधाएँ:**

भाषा की अनजान प्रकृति प्रवासियों के लिए संवाद और समाज में घुलने-मिलने में बाधा उत्पन्न करती है। यह उनके सामाजिक और भावनात्मक जीवन को प्रभावित करता है।

- **सामाजिक भिन्नता का अनुभव:**

सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं और व्यवहारों में अंतर के कारण प्रवासी अक्सर खुद को अलग-थलग और असहज महसूस करते हैं।

- **परिवार और रिश्तों में बदलाव:**

नई संस्कृति में परिवार और रिश्तों की परिभाषा और भूमिका भिन्न हो सकती है। यह परिवर्तन प्रवासियों के लिए झटके जैसा महसूस हो सकता है।

- **आत्म-संदेह और पहचान का संकट:**

विपरीत सांस्कृतिक अनुभव प्रवासियों में आत्म-संदेह और पहचान के संकट को जन्म देता है। वे खुद को न तो अपने मूल समाज का मानते हैं, न ही पूरी तरह नई संस्कृति का हिस्सा महसूस करते हैं।

- **भविष्य की अनिश्चितता:**

नई संस्कृति में अपने लिए स्थान बनाने और उसे स्वीकारने की अनिश्चितता प्रवासी के मन में तनाव और असुरक्षा उत्पन्न करती है।

3.2.8 दोहरी पहचान :

- जीवन में पहचान के संकट, सांस्कृतिक द्वंद्व और आत्म-स्वीकृति के संघर्ष आदि को उजागर करती है

दोहरी पहचान (Dual Identity) प्रवासी साहित्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति है, जो प्रवासियों के अपने मूल देश की संस्कृति और नई भूमि की संस्कृति के बीच बँटे हुए अस्तित्व को व्यक्त करती है। यह प्रवृत्ति उनके जीवन में पहचान के संकट, सांस्कृतिक द्वंद्व और आत्म-स्वीकृति के संघर्ष को उजागर करती है।

दोहरी पहचान की मुख्य विशेषताएँ:

- **मूल और नई संस्कृति के बीच संतुलन:**

प्रवासी अपने मूल देश की सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखना चाहते हैं, लेकिन नई संस्कृति में समायोजन की आवश्यकता महसूस करते हैं। यह स्थिति उनके व्यक्तित्व में दोहरी पहचान का निर्माण करती है।

- **सांस्कृतिक अस्थिरता:**

प्रवासी समुदाय अक्सर इस उलझन में होता है कि वह किस संस्कृति को प्राथमिकता दे। यह अस्थिरता उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित करती है।

- **पहचान का संकट:**

दोहरी पहचान के कारण प्रवासी कई बार अपनी पहचान को लेकर भ्रमित रहते हैं। वे अपने आप को न पूरी तरह अपने मूल देश का मान पाते हैं और न ही नई भूमि का।

- **दोहरी भाषाई पहचान:**

प्रवासी साहित्य में भाषा भी दोहरी पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू है। प्रवासी अपनी मातृभाषा और नई भाषा के बीच तालमेल बैठाने की कोशिश करते हैं।

- प्रवासी दो संस्कृतियों के मानदंडों के अनुसार जीते हैं

- **सामाजिक अपेक्षाएँ और दबाव:**

मूल देश और नई भूमि दोनों की अपेक्षाएँ प्रवासियों पर दबाव डालती हैं। यह दबाव उनके व्यक्तित्व को विभाजित करने का काम करता है।

- **द्वंद्वात्मक जीवनशैली:**

प्रवासी अक्सर दो संस्कृतियों के मानदंडों के अनुसार जीते हैं, जिससे उनकी जीवनशैली में द्वंद्वात्मकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

3.2.9 संकर पहचान (Hybrid identity)

हाइब्रिड पहचान का अर्थ है दोनों संस्कृतियों का मिश्रण, जहाँ प्रवासी व्यक्ति अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है लेकिन नई भूमि की संस्कृति से भी प्रभावित होता है। यह पहचान न तो पूरी तरह मातृभूमि की होती है और न ही पूरी तरह प्रवासी भूमि की, बल्कि दोनों का संयोजन होती है।

- **अस्मिता और स्थान की खोज:**

प्रवासी साहित्य में अक्सर 'मैं कौन हूँ?' और 'मेरा स्थान कहाँ है?' जैसे सवालों पर ध्यान दिया जाता है। लेखक अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान की खोज में लगा रहता है।

- मातृभूमि के कष्ट दायक अनुभवों का चित्रण

▶ **स्मृति और नॉस्टेल्जिया:**

मातृभूमि की यादें और वहाँ के प्रति भावनात्मक लगाव प्रवासी साहित्य का केंद्रीय तत्व है। यह स्मृतियाँ कभी-कभी सकारात्मक होती हैं, तो कभी मातृभूमि के कष्टदायक अनुभवों का चित्रण करती हैं।

▶ **सामाजिक अलगाव और बहिष्करण:**

प्रवासी लेखक अपनी रचनाओं में अक्सर नए समाज में होने वाले भेदभाव, अलगाव और स्वीकार्यता की समस्याओं का उल्लेख करते हैं।

▶ **भाषा और अभिव्यक्ति का द्वंद्व:**

प्रवासी साहित्य में लेखक कभी मातृभाषा का उपयोग करते हैं, तो कभी प्रवासी भूमि की भाषा का और कभी-कभी दोनों का मिश्रण। यह द्वंद्व उनकी अभिव्यक्ति को हाइब्रिड रूप देता है।

▶ **नए और पुराने मूल्यों का टकराव:**

पारंपरिक मूल्यों और नए देश की आधुनिक सोच के बीच टकराव प्रवासी साहित्य का महत्वपूर्ण विषय है

3.2.10. द्विभाषावाद :

- लेखक की मानसिक और सांस्कृतिक पहचान

प्रवासी साहित्य में द्विभाषावाद (Bilingualism) एक महत्वपूर्ण और स्वाभाविक प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति प्रवासी लेखकों की मातृभाषा और प्रवास की भाषा (नई भाषा) के बीच उन के जीवन के जुड़ाव और संघर्ष को दर्शाती है। प्रवासी साहित्य का यह गुण न के वल भाषा के रूप में बल्कि लेखक की मानसिकता और सांस्कृतिक पहचान में भी परिलक्षित होता है।

द्विभाषावाद की विशेषताएँ:

▶ **भाषा का मिश्रण और प्रयोग:**

- एक अद्वितीय भाषा शैली का निर्माण

प्रवासी साहित्य में अक्सर लेखक अपनी मातृभाषा के शब्दों, मुहावरों और शैली को प्रवासी भाषा के साथ मिलाकर एक अद्वितीय भाषा शैली का निर्माण करते हैं।

उदाहरण: झुम्पा लाहिड़ी और सलमान रुश्दी जैसे लेखकों के साहित्य में अंग्रेज़ी में भारतीय शब्दों का समावेश देखने को मिलता है।

- प्रवासी भाषा: लेखक को नई संस्कृति और समाज से जुड़ने में मदद करती है

▶ **मातृभाषा और प्रवासी भाषा के बीच संतुलन:**

प्रवासी लेखक दोनों भाषाओं का प्रयोग करते हुए अपनी भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

मातृभाषा: लेखकों को भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से अपनी जड़ों से जोड़े

रखती है।

- **भाषा के माध्यम से पहचान का संघर्ष**

प्रवासी लेखकों को अक्सर अपनी मातृभाषा और नई भाषा के बीच संतुलन स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यह संघर्ष उनकी पहचान का एक अभिन्न हिस्सा बन जाता है।

नई भाषा अपनाने का दबाव और मातृभाषा से जुड़ाव का भाव उनके लेखन में द्विभाषावाद के रूप में सामने आता है।

- **भाषाई स्वीकृति और सांस्कृतिक समावेशन:**

प्रवासी लेखक अपनी रचनाओं में यह दिखाते हैं कि किस प्रकार भाषा का उपयोग उनकी मूल संस्कृति और नई संस्कृति के बीच सेतु का काम करता है।

- द्विभाषावाद लेखकों को अधिक लचीलापन और स्वतंत्रता प्रदान करता है

- **सृजनात्मक अभिव्यक्ति में स्वतंत्रता:**

द्विभाषावाद लेखकों को अधिक लचीलापन और स्वतंत्रता प्रदान करता है। वे एक भाषा में वह व्यक्त कर सकते हैं जो दूसरी भाषा में नहीं कर सकते।

3.2.11 दोहरी वफादारी :

प्रवासी साहित्य में दोहरी वफादारी एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जो लेखकों और पात्रों की मातृभूमि और प्रवासी भूमि के प्रति उनकी भावनात्मक, सांस्कृतिक और सामाजिक जुड़ाव को दर्शाती है। यह प्रवृत्ति उनके जीवन और साहित्य में गहरे आत्म-संघर्ष और द्वैतभाव को प्रकट करती है।

दोहरी वफादारी की अवधारणा:

- दोहरी वफादारी का अर्थ है कि प्रवासी व्यक्ति या लेखक एक साथ दो स्थानों, संस्कृतियों या पहचान के प्रति निष्ठा अनुभव करता है।
- मातृभूमि के प्रति वफादारी: यह भाव उनके अतीत, परंपराओं, मूल्यों और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव को दर्शाता है।
- प्रवासी भूमि के प्रति वफादारी: यह उनकी वर्तमान जीवनशैली, नई संस्कृति और समाज के प्रति स्वीकार्यता और समायोजन की आवश्यकता को इंगित करता है।

दोहरी वफादारी की विशेषताएँ:

- **सांस्कृतिक द्वंद्व:**

- मातृभूमि और प्रवासी भूमि की संस्कृति के बीच टकराव और सामंजस्य

दोहरी वफादारी अक्सर मातृभूमि की संस्कृति और प्रवासी भूमि की संस्कृति के बीच टकराव और सामंजस्य की स्थिति को प्रकट करती है।

पात्र और लेखक दोनों अक्सर यह महसूस करते हैं कि वे पूरी तरह से न तो अपनी मातृभूमि के हैं और न ही प्रवासी भूमि के।

- **भौगोलिक और मानसिक विभाजन:**

लेखक अपनी रचनाओं में उन मानसिक और भौगोलिक सीमाओं को उकेरते हैं, जहाँ वे अपने जीवन को दो स्थानों के बीच बँटा हुआ पाते हैं।

- **सामाजिक और राजनीतिक वफादारी का संघर्ष**

कभी-कभी प्रवासी लेखक और पात्र इस बात को लेकर दुविधा में रहते हैं कि उनकी प्राथमिक निष्ठा किस ओर होनी चाहिए।

उदाहरण: युद्ध, राजनीति या सांस्कृतिक भेदभाव के संदर्भ में वे किस पक्ष का समर्थन करें।

- **भावनात्मक जुड़ाव:**

दोहरी वफादारी मातृभूमि और प्रवासी भूमि दोनों के प्रति गहरी भावनात्मक प्रतिबद्धता और संबंध को दर्शाती है। यह निष्ठा कभी-कभी द्वंद्व या अपराधबोध का कारण बनती है।

- **दो दुनियाओं का पुल:**

- दो संस्कृतियों के बीच पुल बनाने का कार्य

प्रवासी लेखक अक्सर अपनी रचनाओं के माध्यम से दो संस्कृतियों के बीच पुल बनाने का कार्य करते हैं, जहाँ वे दोनों स्थानों की श्रेष्ठताओं और कमज़ोरियों को उजागर करते हैं।

3.2.12 सांस्कृतिक संकरता : (cultural hybridity)

प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक संकरता एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जो प्रवासियों के जीवन में विभिन्न संस्कृतियों के मेल और उनके बीच की जटिलताओं को दर्शाती है। यह प्रवृत्ति मूल देश की संस्कृति और प्रवासी भूमि की संस्कृति के बीच सामंजस्य, संघर्ष और नई पहचान के निर्माण को केंद्रित करती है। दो या अधिक संस्कृतियों के मेल से एक नई संस्कृति या पहचान का निर्माण सांस्कृतिक संकरता कहलाता है। यह न केवल भाषा, भोजन और कपड़ों में दिखता है, बल्कि प्रवासी व्यक्ति की सोच, आदतों और संबंधों में भी प्रकट होता है। प्रवासी साहित्य में, यह प्रवृत्ति लेखक और पात्रों के जीवन में सांस्कृतिक द्वैतभाव और संघर्ष को उभारती है।

- मूल देश की संस्कृति और प्रवासी भूमि की संस्कृति के बीच सामंजस्य

सांस्कृतिक संकरता की विशेषताएँ

- **सांस्कृतिक द्वंद्व (Cultural Conflict):**

प्रवासी साहित्य में मूल और प्रवासी संस्कृतियों के बीच टकराव को उकेरा जाता है। लेखक इस संघर्ष के कारण होने वाली मानसिक और भावनात्मक जटिलताओं का वर्णन करते हैं।

उदाहरण: मातृभाषा और प्रवासी भाषा के बीच का द्वंद्व।

- **नई पहचान का निर्माण:**

सांस्कृतिक संकरता से प्रवासी व्यक्ति अपनी एक हाइब्रिड पहचान बनाता है, जो न तो पूरी तरह मातृभूमि की होती है और न ही पूरी तरह प्रवासी भूमि की। यह नई पहचान दोनों संस्कृतियों का मिश्रण होती है।

- **भाषा और अभिव्यक्ति का द्वैतभाव:**

प्रवासी साहित्य में भाषा में संकरता दिखती है, जहाँ लेखक अपनी मातृभाषा और नई भाषा दोनों का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण: अंग्रेज़ी में भारतीय शब्दों का उपयोग (झुम्पा लाहिड़ी, सलमान रुश्दी)।

- **ग्लोबलाइजेशन का प्रभाव:**

प्रवासी साहित्य वैश्वीकरण की वास्तविकता को दर्शाता है, जहाँ लोग सांस्कृतिक रूप से अलग-अलग होने के बावजूद एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।

- **परंपरा और आधुनिकता का संगम:**

सांस्कृतिक संकरता में पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक जीवनशैली का संगम दिखाई देता है।

उदाहरण: भारतीय प्रवासी अपने पारंपरिक त्योहार मनाते हैं लेकिन आधुनिक पश्चिमी जीवनशैली अपनाते हैं।

सांस्कृतिक संकरता प्रवासी साहित्य की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है, जो विभिन्न संस्कृतियों के बीच संबंध संघर्ष और सामंजस्य को समझने का माध्यम प्रदान करती है। यह प्रवृत्ति न केवल प्रवासियों की वास्तविकता को उजागर करती है, बल्कि वैश्विक साहित्य को भी अधिक समृद्ध और विविध बनाती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भारतीय जहाँ भी जाए वह अपने देश की सभ्यता और संस्कृति की जड़ों को छोड़ नहीं सकते। अतः भारतीयता की धारा उनकी रचनाओं में मजबूत होती है। मातृभूमि के लिए भारती लालसा, सांस्कृतिक संघर्ष, संकर संस्कृति, नस्लवाद, द्विभाषावाद, जैसी प्रवृत्तियाँ प्रवासी साहित्य की अपनी पहचान है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियों के बारे में लिखिए।
2. विपरीत सांस्कृतिक आधात से परिचय दीजिए।
3. द्विभाषावाद की विशेषताएं लिखिए।
4. दोहरी वफेदारी से क्या तात्पर्य है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्युअनंत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदु संधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी
13. प्रवासी आवाज - अंजना संधरी
14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन
15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - संपादक विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी साहित्य एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 4

प्रवासी साहित्यः परंपरा और प्रमुख प्रवासी रचनाकारों का परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी में रचित प्रवासी साहित्य से परिचित होता है
- प्रवासी साहित्य परंपरा के बारे में जानता है
- प्रमुख प्रवासी रचनाकारों के कृतित्व का परिचय प्राप्त करता है
- प्रवासी हिन्दी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासी साहित्य की परंपरा बहुत ही सशक्त है। प्रवासी साहित्य उन रचनाओं का संग्रह है, जो प्रवासियों के अनुभव, सांस्कृतिक संघर्ष, पहचान की खोज और मातृभूमि से दूरी के प्रभाव को उजागर करती हैं। यह साहित्य मुख्यतः उन लेखकों द्वारा रचा गया है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि से दूर, विदेशी भूमि में रहते हुए अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी पहचान और अनुभवों को अभिव्यक्त किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासी साहित्य परंपरा, प्रमुख प्रवासी साहित्यकार

Discussion / चर्चा

1.4.1.प्रवासी साहित्य की परंपरा

प्रवासी साहित्य की शुरुआत उन लेखकों के साथ हुई जो उपनिवेशवाद, व्यापार, शिक्षा या बेहतर अवसरों की तलाश में अपनी मातृभूमि से दूर बस गए थे। यह साहित्य प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक विकसित हुआ है, जिसमें प्रवासियों के व्यक्तिगत और सामूहिक अनुभव प्रतिबिंबित होते हैं। प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक संघर्ष, पहचान का संकट और दोनों संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बनाने का प्रयास मुख्य विषय हैं। यह परंपरा दोनों संस्कृतियों के बीच पुल का काम करती है। प्रवासी लेखक

▶ प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक संघर्ष, पहचान का संकट और दोनों संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बनाने का प्रयास मुख्य विषय हैं

अपनी रचनाओं में 'मैं कौन हूँ' जैसे प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं। उनकी रचनाएँ मातृभूमि और प्रवासी भूमि के बीच के द्वंद्व को व्यक्त करती हैं।

प्रवासी साहित्य की भाषा और शैली में द्विभाषावाद और सांस्कृतिक संकरता का प्रभाव होता है। लेखक अक्सर अपनी मातृभाषा और प्रवासी भूमि की भाषा का मिश्रण करते हैं। पहली पीढ़ी के प्रवासी अपनी जड़ों और मातृभूमि के प्रति गहरा लगाव रखते हैं। दूसरी और तीसरी पीढ़ी के प्रवासी सांस्कृतिक पहचान को लेकर अधिक जटिल प्रश्नों का सामना करते हैं।

1.4.2. प्रमुख प्रवासी हिन्दी रचनाकारों का परिचय:

प्रवास में रहते हुए हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान देने वाले रचनाकारों की सूची बहुत लंबी है। कुछ प्रमुख प्रवासी हिन्दी रचनाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया जा रहा है-

1.4.2.1 अभिमन्यु अनत

▶ प्रवासी भारतीय साहित्य का प्रमुख हस्ताक्षर

अभिमन्यु अनत (9 अगस्त 1937 – 2 जून 2018) हिन्दी साहित्य के प्रमुख प्रवासी लेखक हैं, जिनका जन्म मॉरीशस में हुआ था। उन्हें प्रवासी भारतीय साहित्य का प्रमुख हस्ताक्षर माना जाता है। उन्होंने अपने साहित्य में प्रवासी जीवन, सांस्कृतिक संघर्ष और पहचान के संकट को बारीकी से उकेरा। उनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

अभिमन्यु अनत -व्यक्तित्व

▶ मॉरीशस में रहते हुए हिन्दी साहित्य लेखन शुरू किया

अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त 1937 को मॉरीशस के त्रियोले गाँव में हुआ। वे भारतीय मूल के थे, जिनके पूर्वज गिरमिटिया मज़दूर के रूप में मॉरीशस गए थे। उनका बचपन और युवावस्था मॉरीशस की सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं के बीच गुजरी। अभिमन्यु अनत ने हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में शिक्षा प्राप्त की। मॉरीशस में रहते हुए उन्होंने हिन्दी साहित्य की ओर रुझान विकसित किया और लेखन शुरू किया। उनका निधन 2 जून 2018 को हुआ।

कृतित्व:

अभिमन्यु अनत ने मुख्य रूप से हिन्दी भाषा में साहित्य रचा। उनकी रचनाएँ प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष, उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थितियों को चित्रित करती हैं।

प्रमुख कृतियाँ:-

उपन्यास:

1. **लाल पसीना**

यह गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष और उनकी कठिन परिस्थितियों पर आधारित

है।

2. **सुबह के रास्ते पर**

मॉरीशस में बसे प्रवासी भारतीयों के सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष को दिखाने वाला उपन्यास।

3. **फूल और अंगारे**

यह उपन्यास सामाजिक असमानता और संघर्ष को दर्शाता है।

कहानी संग्रहः

1. **पराई धरती पर**

यह कहानियाँ प्रवासी भारतीयों की रोज़मर्रा की जिंदगी, उनकी मुश्किलों और उनके स्वाभिमान की कहानियाँ हैं।

2. **धूल और धुएँ के बीच**

मॉरीशस के सामाजिक परिवेश को केंद्र में रखते हुए लिखी गई कहानियाँ।

नाटकः

- अभिमन्यु अनत ने नाटकों के माध्यम से भी सामाजिक समस्याओं को मंच पर लाने का प्रयास किया

अभिमन्यु अनत ने मुख्य रूप से हिन्दी भाषा में साहित्य रचा। उनकी रचनाएँ प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष, उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थितियों को चित्रित करती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँः-

- **प्रवासी भारतीयों के जीवन का चित्रणः**

अभिमन्यु अनत की रचनाओं में प्रवासी भारतीयों के संघर्ष, उनकी मेहनत और सांस्कृतिक द्वंद्व को प्रमुखता से दिखाया गया है।

- **सांस्कृतियों का मिश्रणः**

उनकी कहानियाँ मॉरीशस की बहुसांस्कृतिक पृष्ठभूमि और भारतीय परंपराओं के मेल को दर्शाती हैं।

- **यथार्थवादः**

अभिमन्यु अनत की रचनाएँ यथार्थवादी शैली में लिखी गई हैं, जो गिरमिटिया मजदूरों के जीवन को सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं।

- गिरमिटिया मजदूरों के जीवन का सजीव चित्रण

- **भाषा शैलीः**

अभिमन्यु अनत की भाषा सरल और भावपूर्ण है। वे हिन्दी भाषा को मॉरीशस की सांस्कृतिक और सामाजिक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में उपयोग करते थे।

- **सामाजिक समस्याएँः**

▶ अभिमन्यु अनत की रचनाओं में गिरमिटिया मज़दूरों के ऐतिहासिक और सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं

उनके साहित्य में जातिवाद, गरीबी, प्रवासी जीवन की समस्याएँ और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए हैं।

अभिमन्यु अनत ने मॉरीशस में हिन्दी साहित्य को बढ़ावा दिया और इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। यही हिन्दी साहित्य में उनका सबसे बड़ा योगदान है।

अभिमन्यु अनत हिन्दी प्रवासी साहित्य के पुरोधा माने जाते हैं। उन्होंने प्रवासी भारतीयों के अनुभवों को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी और उनकी समस्याओं को समझने का मार्ग खुला कर किया।

उन्होंने हिन्दी साहित्य को मॉरीशस और अन्य देशों में भी लोकप्रिय बनाया। इस प्रकार हिन्दी को एक वैश्विक परिवेश और पहचान देने में उनकी मुख्य भूमिका रही।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि अभिमन्यु अनत हिन्दी साहित्य के प्रवासी परंपरा के एक प्रमुख स्तंभ थे। उनकी रचनाओं ने प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष और उनकी सांस्कृतिक पहचान को साहित्यिक मंच प्रदान किया। उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक संघर्ष और मानवीय भावनाओं का अद्‌भुत समन्वय है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी मूल्यवान हैं।

अभिमन्यु अनत के साहित्य में जातिवाद, गरीबी, प्रवासी जीवन की समस्याएँ और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए हैं।

1.4.2.2 तेजेंद्र शर्मा

▶ ब्रिटन में बसे भारतीय मूल के लेखक

ब्रिटन में रहकर हिन्दी साहित्य की सेवा करने वाले प्रवासी हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख लेखक, कवि और कहानीकार हैं तेजेंद्र शर्मा। उनका साहित्य प्रवासी जीवन के संघर्ष, उनकी मनोवैज्ञानिक उलझनों और पहचान की खोज को गहराई से अभिव्यक्त करता है। वे ब्रिटन में बसे भारतीय मूल के लेखक हैं और प्रवासी साहित्य में अपनी उल्लेखनीय रचनाओं के लिए जाने जाते हैं।

तेजेंद्र शर्मा - व्यक्तित्व

तेजेन्द्र शर्मा का जन्म 21 अक्टूबर 1952 को पंजाब (भारत) के जगरांव में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई, जहाँ उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातक और एम.ए. किया। तेजेन्द्र ने अपने करियर की शुरुआत भारतीय रेलवे में की, लेकिन बाद में वे ब्रिटन चले गए। ब्रिटन में उन्होंने प्रवासी जीवन के अनुभवों को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी। वे 1998 से ब्रिटन में रह रहे हैं।

कृतित्वः

अपने साहित्य में प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक द्वंद्व और वैश्विक संदर्भ में उनकी पहचान को तेजेंद्र शर्मा ने बड़े प्रभावशाली ढंग से उकेरा है।

▶ प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक द्वंद्व और वैश्विक संदर्भ में उनकी पहचान आदि का चित्रण

प्रमुख कृतियाँ

कहानी संग्रहः

1. **काला सागर**

   यह संग्रह प्रवासी जीवन के संघर्ष और दर्द को दिखाने वाली कहानियों का संग्रह है।

2. **देह की कीमत**

   यह कहानी संग्रह मानवीय रिश्तों और उनकी जटिलताओं पर आधारित है।

3. **थोड़ी सी ज़ीन**

   इस संग्रह में प्रवासी भारतीयों के अनुभवों को उनकी जमीन और जड़ों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

4. **प्रतिरोध**

   सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को दिखाने वाला कहानी संग्रह।

कविता संग्रहः

1. **ये घर तुम्हारा है**

   यह संग्रह प्रवासी जीवन की संवेदनाओं और भावनाओं को उजागर करता है।

उपन्यासः

तेजेन्द्र शर्मा ने कहानियों और कविताओं के अलावा उपन्यास लेखन में भी हाथ आजमाया है।

साहित्यिक विशेषताएँः

▶ तेजेंन्द्र शर्मा का साहित्य प्रवासी जीवन की चुनौतियों, संघर्षों और संवेदनाओं का आईना है

▶ **प्रवासी जीवन का यथार्थ चित्रणः**

उनकी रचनाएँ प्रवासी भारतीयों के अनुभवों, उनकी समस्याओं और संघर्षों का यथार्थ चित्रण करती हैं।

▶ **सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचानः**

तेजेन्द्र की कहानियों में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच टकराव और प्रवासी भारतीयों की पहचान की खोज को प्रमुखता से दिखाया गया है।

▶ **भाषा और शैलीः**

उनकी भाषा सरल, सहज और प्रभावी है। उनकी कहानियों में संवादों की सजीवता और पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण अद्वितीय है।

▶ भारतीय प्रवासी जीवन के अनुभवों और उनकी जटिलताओं का चित्रण

▶ **समाज और मानवता का प्रतिबिंबः**

तेजेन्द्र शर्मा की रचनाएँ समाज में व्याप्त अन्याय, विस्थापन और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को उजागर करती हैं।

▶ **वैश्वीकरण का प्रभावः**

उनकी कहानियों में वैश्वीकरण के कारण होने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों का भी उल्लेख मिलता है।

▶ प्रवासी जीवन के अनुभवों और उनकी जटिलताओं का अभिव्यक्ति दी

1.4.2.3 महेंद्र भल्ला

महेंद्र भल्ला हिन्दी के प्रतिष्ठित प्रवासी साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने भारतीय प्रवासी जीवन के अनुभवों और उनकी जटिलताओं को अपनी रचनाओं में सशक्त रूप से अभिव्यक्ति दी। वे प्रवासी साहित्य की उस धारा के लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ प्रवासियों के मानसिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संघर्षों को उजागर करती हैं।

महेंद्र भल्ला -व्यक्तित्व

महेंद्र भल्ला का जन्म 1940 में भारत में हुआ। वे उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए और वहीं बस गए। भारतीय मूल होने के बावजूद, वे प्रवासी जीवन की जटिलताओं और उनके संघर्षों को करीब से देखने-समझने का अनुभव रखते हैं। महेंद्र भल्ला ने अंग्रेज़ी साहित्य और पत्रकारिता में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने विभिन्न संस्थानों में अध्यापन कार्य भी किया। महेंद्र भल्ला लंबे समय से कनाडा में रह रहे हैं।

कृतित्वः

▶ उपन्यास और कहानियों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन को दिखाया

महेंद्र भल्ला ने उपन्यास और कहानियों के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन और उनकी सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष को उकेरा है। उनकी रचनाएँ प्रवासी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

भारतीय प्रवासी जीवन के अनुभवों और उनकी जटिलताओं को अपनी रचनाओं में महेंद्र भल्ला ने सशक्त रूप से अभिव्यक्ति दी।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यासः

1. **यह दुनिया रंग-बिरंगी**

   यह उपन्यास प्रवासी भारतीयों के जीवन, उनकी समस्याओं और उनकी सांस्कृतिक द्वंद्व को बड़े ही रोचक और यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करता है।

   इस रचना को प्रवासी साहित्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

कहानी संग्रहः

उनकी कहानियाँ प्रवासी जीवन की विविधताएँ और उनके अनुभवों की गहराई को चित्रित करती हैं।

उनकी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों की जटिलताओं और प्रवासियों के सामाजिक-आर्थिक संघर्षों का यथार्थ चित्रण मिलता है।

साहित्यिक विशेषताएँ:

- **प्रवासी जीवन का यथार्थ चित्रण:**

महेंद्र भल्ला की रचनाएँ प्रवासी भारतीयों की वास्तविक समस्याओं, जैसे सामाजिक अस्वीकृति, नस्लवाद और सांस्कृतिक संघर्ष का सजीव चित्रण हैं।

- **हास्य और व्यंग्य:**

उनकी रचनाओं में हास्य और व्यंग्य के माध्यम से प्रवासी जीवन के संघर्षों और विडंबनाओं को उजागर किया गया है।

- **सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचान:**

उनकी कहानियाँ और उपन्यास भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच की खाई और प्रवासी भारतीयों की पहचान की खोज को रेखांकित करते हैं।

- महेंद्र भल्ला का साहित्य प्रवासी भारतीयों की पहचान, उनके संघर्ष और उनकी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का एक प्रयास है

- **भाषा और शैली:**

महेंद्र भल्ला की भाषा सरल, सजीव और प्रभावशाली है। उनकी शैली में प्रवाह और यथार्थवादी चित्रण प्रमुख हैं।

- **सामाजिक और आर्थिक संघर्ष**

उनकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के आर्थिक संघर्ष, सांस्कृतिक द्वंद्व और सामाजिक असमानताओं को उजागर किया गया है।

1.4.2.4 मोहन राणा

- जीवन की जटिलताओं, प्रवासी अनुभव और सांस्कृतिक विस्थापन का मार्मिक चित्रण

समकालीन हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख कवि हैं मोहन राणा, जो प्रवासी साहित्य में अपने विशिष्ट योगदान के लिए जाने जाते हैं। उनकी कविताओं में जीवन की जटिलताओं, प्रवासी अनुभव और सांस्कृतिक विस्थापन का मार्मिक चित्रण मिलता है।

मोहन राणा - व्यक्तित्व:

मोहन राणा का जन्म 9 मार्च 1964 को भारत के दिल्ली में हुआ। वे बचपन से ही साहित्य में रुचि रखते थे और कविताएँ लिखने लगे थे। वे 1994 में ब्रिटन चले गए और तब से वहीं रह रहे हैं। प्रवासी जीवन के अनुभवों ने उनकी कविताओं को गहराई और नया आयाम दिया।

कृतित्व:

मोहन राणा हिन्दी कविता को आधुनिक दृष्टिकोण और प्रवासी संवेदनाओं से समृद्ध करने वाले कवि हैं। उनकी कविताएँ मुख्य रूप से प्रवासी जीवन के अनुभवों और सांस्कृतिक पहचान के संघर्ष पर आधारित हैं।

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रह:

1. धूप के अँधेरे में (1996)
2. पानी की आवाज़ (2001)
3. जैसे जग सारा (2007)
4. धुंध में घर (2012)
5. पत्थर हो जाएगी नदी (2016)

अन्य कविताएँ और संग्रह

उनकी कविताओं का अंग्रेज़ी, इतालवी और स्पेनिश जैसी कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

▶ हिन्दी कविता को आधुनिक दृष्टिकोण और प्रवासी संवेदनाओं से समृद्ध करने वाले कवि

साहित्यिक विशेषताएँ

▶ **प्रवासी अनुभव का चित्रण:**

उनकी कविताएँ प्रवासी जीवन के अकेलेपन, स्मृतियों और सांस्कृतिक संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं। अपने मूल और प्रवास की भूमि के बीच झूलते हुए व्यक्ति की मानसिक स्थिति उनकी कविताओं में गहराई से उभरती है।

▶ **अस्तित्ववादी दृष्टिकोण:**

उनकी कविताओं में जीवन और अस्तित्व से जुड़े प्रश्न बार-बार उभरते हैं। वे समय, स्मृति और स्थान के बीच संबंधों की पड़ताल करते हैं।

▶ **भाषा और शैली:**

उनकी कविताएँ गद्यात्मक शैली की हैं, लेकिन उनमें काव्यात्मकता और गहराई का अद्भुत संतुलन है। वे प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग करके अपनी कविताओं में गहराई लाते हैं।

▶ मोहन राणा का साहित्य हिन्दी कविता को आधुनिक संदर्भों, प्रवासी अनुभवों और अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से समृद्ध करता है

▶ **साधारण में असाधारण:**

उनकी कविताएँ रोज़मर्रा की चीज़ों और अनुभवों को असाधारण रूप में प्रस्तुत करती हैं।

▶ **स्मृतियों का प्रभाव:**

बचपन, परिवार और मातृभूमि से जुड़ी स्मृतियाँ उनकी कविताओं का मुख्य तत्व हैं।

1.4.2.5 अनिल जनविजय

▶ समकालीन हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, अनुवादक और संपादक

अनिल जनविजय समकालीन हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, अनुवादक और संपादक हैं। वे हिन्दी साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले प्रवासी साहित्यकारों में से एक हैं। उनकी रचनाएँ मानवता, अस्तित्व और समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता को प्रकट करती हैं।

अनिल जनविजय- व्यक्तित्वः

अनिल जनविजय का जन्म 28 जुलाई 1957 को उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में हुआ। उनका असली नाम अनिल कुमार श्रीवास्तव है। उन्होंने हिन्दी साहित्य और अनुवाद में गहरी रुचि रखते हुए शिक्षा ग्रहण की। साहित्य और कला के प्रति उनका रुझान बचपन से ही था। अनिल जनविजय लंबे समय से रूस में निवास कर रहे हैं। वे रूसी और हिन्दी साहित्य के बीच सांस्कृतिक पुल के रूप में कार्यरत हैं।

कृतित्वः

अनिल जनविजय ने हिन्दी साहित्य में न केवल अपनी कविताओं के माध्यम से योगदान दिया, बल्कि अनुवाद और संपादन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रमुख कृतियाँ

कविता संग्रहः

1. ख़ुद से बातें
2. एक समुद्र सपनों का
3. उजली हँसी के छोर पर

अनुवादः

उन्होंने रूसी साहित्य के कई महत्वपूर्ण लेखकों और कवियों की कृतियों का हिन्दी में अनुवाद किया है।

रूसी कवि अलेक्जेंडर ब्लॉक, मिखाइल लर्मोंतोव और व्लादिमीर मायाकोवस्की की कविताओं का अनुवाद उनकी प्रमुख उपलब्धि है।

संपादनः

अनिल जनविजय ने कई साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन किया है और वे हिन्दी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने में सक्रिय हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **प्रवासी जीवन और संस्कृति का चित्रणः**

उनकी कविताएँ प्रवासी अनुभव, सांस्कृतिक द्वंद्व और प्रवासियों के मानसिक संघर्ष को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं।

- **भाषा और शैलीः**

उनकी भाषा सरल, सहज और भावप्रवण है। बिंबात्मकता और प्रतीकों का सशक्त प्रयोग उनकी कविताओं की विशेषता है।

- **अस्तित्ववादी दृष्टिकोणः**

उनकी रचनाओं में मानव अस्तित्व, समय और स्मृति के प्रति गहरी दार्शनिक दृष्टि दिखती है।

- अनिल जनविजय का साहित्य हिन्दी और रूसी साहित्य के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

- **सामाजिक और राजनीतिक चेतना:**

उनकी कविताएँ सामाजिक असमानताओं और राजनीतिक विडंबनाओं को भी उजागर करती हैं।

- **अनुवाद की गहराई:**

अनुवाद के क्षेत्र में उनकी गहनता और सटीकता ने हिन्दी साहित्य को रूसी साहित्य के अनमोल रत्नों से जोड़ा।

1.4.2.6 सुषम बेदी

- प्रवासी अनुभवों की गहराई और उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करता है

सुषम बेदी (1945-2020) हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवासी लेखिका हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जीवन के संघर्ष, द्वंद्व और सांस्कृतिक जटिलताओं को सशक्त रूप से अभिव्यक्ति दी। उनका साहित्य प्रवासी अनुभवों की गहराई और उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करता है।

सुषम बेदी - व्यक्तित्व:

सुषम बेदी का जन्म 1 जुलाई 1945 को फिरोजपुर, पंजाब (भारत) में हुआ। उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम ए किया। दिल्ली विश्वविद्यालय एवं पंजाब विश्वविद्यालय से अपने शिक्षा प्राप्त की। वे अध्यापन और लेखन के क्षेत्र में सक्रिय रहीं। 1979 में वे अमेरिका में बस गईं। उन्होंने न्यूयॉर्क में कोलंबिया यूनिवर्सिटी और सिटी यूनिवर्सिटी में अध्यापन किया। अमेरिका में रहते हुए उन्होंने भारतीय प्रवासियों के जीवन की समस्याओं और उनकी पहचान के संघर्ष को साहित्य में ढाल दिया।

कृतित्व:

- भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच के संघर्ष और प्रवासियों की मनोदशा का चित्रण

सुषम बेदी हिन्दी साहित्य की प्रवासी धारा की प्रमुख लेखिका थीं। उनकी रचनाएँ भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच के संघर्ष और प्रवासियों की मनोदशा को बड़ी संवेदनशीलता से चित्रित करती हैं।

प्रमुख कृतियाँ:

उपन्यास:

1. हवन (1989)
2. लौटना
3. घर तो अपना
4. इतर

5. मैंने नाता तोड़ा

कहानी संग्रहः

1. वसंत के फूल, पतझड़ के पत्ते
2. चिड़िया और चील
3. माथा पंचांग

नाटकः

1. सूरज क्यों निकलता है

कविताएँः

उन्होंने कविताएँ भी लिखीं, जो उनके लेखन में भावनात्मक गहराई लाती हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **प्रवासी अनुभव का सजीव चित्रणः**

उनकी रचनाओं में प्रवासी जीवन की समस्याओं, जैसे सामाजिक अलगाव, सांस्कृतिक द्वंद्व और पहचान के संकट को गहराई से उकेरा गया है।

- **स्त्री चेतनाः** उनकी कहानियाँ और उपन्यास नारीवाद और स्त्री सशक्तिकरण के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। वे महिलाओं की स्वतंत्रता, उनके संघर्ष और उनके आत्म-साक्षात्कार को अपने लेखन का केंद्रीय विषय बनाती हैं।
- **भाषा और शैलीः** उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और गहन मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत है। वे अपनी रचनाओं में संवेदनशील और यथार्थवादी चित्रण के लिए जानी जाती हैं।
- **सांस्कृतिक द्वंद्वः** भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के टकराव और उनके बीच के सामंजस्य को उनकी रचनाएँ बखूबी दर्शाती हैं।
- **मानवीय संबंधः** उनके साहित्य में रिश्तों की जटिलताओं और मानवीय भावनाओं का गहन चित्रण मिलता है।

- महिलाओं की स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता और उनकी व्यक्तिगत पहचान का संघर्ष उनकी रचनाओं का केंद्रीय विषय

महिलाओं की स्वायत्तता, आत्मनिर्भरता और उनकी व्यक्तिगत पहचान का संघर्ष उनकी रचनाओं का केंद्रीय विषय

1.4.2.7 सुधा ओम ढींगरा

- अमेरिका में रहते हुए हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार

सुधा ओम ढींगरा हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवासी लेखिका, कवयित्री और संपादक हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य को प्रवासी अनुभवों, भारतीय संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं से समृद्ध किया है। वे अमेरिका में रहते हुए भी हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर सक्रिय रही हैं।

सुधा ओम ढींगरा - व्यक्तित्वः

सुधा ओम ढींगरा का जन्म 20 अप्रैल 1948 को जालंधर, पंजाब (भारत) में हुआ। उनकी शिक्षा पंजाब में हुई, जहाँ उन्होंने हिन्दी और साहित्य के प्रति गहरी रुचि विकसित की।

प्रवासी जीवनः

वे 1979 में अमेरिका चली गईं और वहीं बस गईं। प्रवास के बावजूद उन्होंने भारतीय संस्कृति और हिन्दी साहित्य से अपने जुड़ाव को बनाए रखा। अमेरिका में रहते हुए, वे शिक्षिका, लेखक और संपादक के रूप में सक्रिय रहीं।

कृतित्वः

▶ प्रवासी जीवन की जटिलताओं, स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक समस्याओं को संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया गया है

सुधा ओम ढींगरा हिन्दी साहित्य के प्रवासी परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। उनकी रचनाएँ प्रवासी जीवन की जटिलताओं, स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक मुद्दों को संवेदनशीलता और गहराई से उकेरती हैं।

प्रमुख कृतियाँः

उपन्यासः

1. एक बार फिर
2. न्योता

कहानी संग्रहः

1. पराया घर
2. तिनके तिनके

कविता संग्रहः

1. मेरे हिस्से का प्रकाश
2. स्मृतियों के पंख

▶ हिन्दी साहित्य को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

संपादन कार्य

उन्होंने प्रवासी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए कई पत्रिकाओं और संकलनों का संपादन किया।

साहित्यिक विशेषताएँ

▶ **प्रवासी जीवन का चित्रणः**

उनकी रचनाएँ प्रवासी भारतीयों के जीवन, उनकी संस्कृति और पहचान के संघर्ष को दर्शाती हैं।

▶ **स्त्री सशक्तिकरणः**

उनकी कहानियाँ और कविताएँ महिलाओं की समस्याओं, उनकी आकांक्षाओं और उनकी स्वतंत्रता की बात करती हैं।

- **सामाजिक यथार्थ**

वे सामाजिक मुद्दों जैसे जातिवाद, सांस्कृतिक द्वंद्व और रिश्तों की जटिलताओं पर गहराई से लिखती हैं।

- **भाषा और शैली:**

उनकी भाषा सरल, प्रवाहमयी और भावनाओं से भरी होती है। वे कहानी कहने में यथार्थ और संवेदनशीलता का अद्भुत संतुलन बनाती हैं।

- **प्रकृति और मानवीय संवेदनाएँ:**

उनकी कविताओं और कहानियों में प्रकृति और मानवीय भावनाओं का गहरा संबंध देखने को मिलता है।

- पाठकों को समाज और संस्कृति के गहरे सवालों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं

सम्मान और पुरस्कार

सुधा ओम ढींगरा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कार और सम्मान मिले हैं। उनकी रचनाएँ भारत और विदेशों में प्रकाशित और सराही गई हैं।

1.4.2.8. पूर्णिमा वर्मन

- हिन्दी वेब पत्रकारिता की संस्थापक

पूर्णिमा वर्मन हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका, संपादक और हिन्दी वेब पत्रकारिता की संस्थापक मानी जाती हैं। उन्होंने साहित्य और डिजिटल मीडिया के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य को नए आयाम दिए। हिन्दी साहित्य को इंटरनेट पर स्थापित करने और उसे वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

पूर्णिमा वर्मन -व्यक्तित्व:

पूर्णिमा वर्मन का जन्म उत्तर प्रदेश के बरेली में हुआ। उन्होंने स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा हिन्दी साहित्य में प्राप्त की। वर्तमान में वे बहरीन में रहती हैं। प्रवासी भारतीय होने के बावजूद हिन्दी भाषा और साहित्य से उनका जुड़ाव अटूट है। पूर्णिमा वर्मन साहित्य लेखन, संपादन और हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं। पूर्णिमा वर्मन ने हिन्दी भाषा और साहित्य को इंटरनेट पर स्थापित करने और उसे वैश्विक स्तर पर लाने की कोशिश की।

कृतित्व:

हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार में भूमिका:

- वेब पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य को इंटरनेट पर प्रस्तुत किया।
- अभिव्यक्ति और अनुभूति नामक हिन्दी वेब पत्रिकाओं की संस्थापक-संपादक के रूप में वे जानी जाती हैं।

- उनके संपादन में हिन्दी साहित्य के कई आयामों को पाठकों तक पहुँचाया गया।

- हिन्दी भाषा को डिजिटल युग में नए आयाम दिए और साहित्य को वैश्विक स्तर पर पहुँचने की कोशिश की

प्रमुख कृतियाँ:

- कटघरे में सुभाषित
- स्मृति शेष
- कुछ खास (कविता संग्रह)

अनुवाद और संपादन:

उन्होंने कई कविताओं और साहित्यिक लेखों का अनुवाद किया है।

उनकी संपादकीय दृष्टि ने हिन्दी साहित्य को आधुनिक और वैश्विक स्वरूप प्रदान किया।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **हिन्दी वेब पत्रकारिता की स्थापना:**

हिन्दी को इंटरनेट के माध्यम से लोकप्रिय बनाने में उनका योगदान ऐतिहासिक है।

- **भाषा और शैली:**

- हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार की प्रतीक

उनकी भाषा सहज, प्रभावशाली और पाठकों को जोड़ने वाली है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण:**

उनकी रचनाएँ भारतीय समाज और संस्कृति की गहरी समझ को दर्शाती हैं।

- **प्रवासी अनुभव:**

उनकी लेखनी प्रवासी भारतीयों के अनुभवों और उनकी सांस्कृतिक जुड़ाव की झलक दिखाती है।

- **संपादन कौशल:**

वेब पत्रिकाओं के संपादन में उनका कौशल हिन्दी साहित्य को नई पीढ़ी से जोड़ता है।

- उनकी रचनाएँ तकनीकी दृष्टि से ऐतिहासिक और प्रेरणादायक हैं

- **सम्मान और पुरस्कार**

पूर्णिमा वर्मन को हिन्दी साहित्य और वेब पत्रकारिता में उनके योगदान के लिए कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें डिजिटल माध्यम से हिन्दी साहित्य को विश्व मंच पर लाने के लिए विशेष रूप से सराहा गया।

1.4.2.9 अंजना संधीर

- प्रवासी लेखिका, कवयित्री और साहित्यिक संगठनों की सक्रिय सदस्य

अंजना संधीर हिन्दी की एक प्रसिद्ध प्रवासी लेखिका, कवयित्री और साहित्यिक संगठनों की सक्रिय सदस्य हैं। उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने और प्रवासी जीवन के अनुभवों को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। उनकी कविताएँ, कहानियाँ और अन्य लेखन भारतीय और प्रवासी समाज की सांस्कृतिक जटिलताओं को उजागर करते हैं।

अंजना संधीर -व्यक्तित्वः

अंजना संधीर का जन्म भारत में हुआ। उन्होंने अपनी शिक्षा भारत में पूरी की और हिन्दी साहित्य में गहरी रुचि विकसित की।

प्रवासी जीवनः

वे 1980 के दशक में अमेरिका गईं और वहीं बस गईं। अमेरिका में रहते हुए उन्होंने हिन्दी साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य किया।

पेशेवर जीवनः

अंजना संधीर हिन्दी साहित्य के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रही हैं और भारतीय समुदाय के सांस्कृतिक आयोजनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कृतित्वः

कविता संग्रहः

1. गीत से पुल तक
2. प्रवासी का मन
3. फूल खिले हैं गंध नहीं

संपादन कार्य

उन्होंने प्रवासी लेखकों की रचनाओं के संकलन और संपादन का कार्य किया है।

निबंध और लेखः

- कविताओं और लेखों के माध्यम से हिन्दी साहित्य को एक नया दृष्टिकोण दिया

उन्होंने हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में प्रवासी जीवन और भारतीय संस्कृति पर लेख लिखे हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **प्रवासी अनुभव का चित्रणः**

उनकी रचनाओं में प्रवासी जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक जुड़ाव और पहचान के संकट का सजीव चित्रण मिलता है।

- **भाषा और शैलीः**

उनकी कविताओं की भाषा सरल और भावनात्मक है, जो सीधे पाठकों के मन को छूती है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणः**

वे भारतीय समाज और प्रवासी जीवन के बीच के अंतर और सामंजस्य को उजागर करती हैं।

▶ **प्रकृति और मानवीय संवेदनाएँ:**

उनकी कविताएँ प्रकृति और मानवीय संबंधों के गहरे भावों को व्यक्त करती हैं।

▶ **नारी चेतना:**

उनके साहित्य में महिलाओं के अनुभव, उनकी भावनाएँ और उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा प्रमुख है।

▶ **सम्मान और पुरस्कार**

अंजना संधीर को उनके साहित्यिक योगदान के लिए भारत और विदेश में कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं।

उन्हें प्रवासी साहित्य के विकास में उनके योगदान के लिए विशेष रूप से सराहा गया है। अंजना संधीर ने अपनी कविताओं और लेखों के माध्यम से हिन्दी साहित्य को एक नया दृष्टिकोण दिया है और प्रवासी अनुभवों को व्यापक स्तर पर पहूँचाया है।

1.4.2.10 उषा राजे सक्सेना

▶ भारत में जन्मी और जीवन के कुछ हिस्से अमेरिका में बिताने वाली लेखिका

उषा राजे सक्सेना हिन्दी साहित्य की प्रमुख लेखिका और कवयित्री हैं, जिनका साहित्यिक योगदान विशेष रूप से प्रवासी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है। वे भारत में जन्मी और जीवन के कुछ हिस्से अमेरिका में बिताने वाली लेखिका हैं। उनका लेखन प्रवासी भारतीयों के अनुभवों, संघर्षों और उनके बीच सांस्कृतिक और सामाजिक जटिलताओं को बयान करता है।

उषा राजे सक्सेना -व्यक्तित्व:

उषा राजे सक्सेना का जन्म भारत में हुआ था और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भारतीय शैक्षिक संस्थाओं से प्राप्त की। वे अमेरिका में बस गईं और वहाँ के साहित्यिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से अपने लेखन को प्रभावित किया। उषा राजे सक्सेना ने लेखन के साथ-साथ संपादन, अनुवाद और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काम किया।

▶ प्रवास के दौरान उषा राजे सक्सेना ने हिन्दी साहित्य के प्रचार और प्रवासी साहित्य को उजागर करने का कार्य किया

कृतित्व:

उषा राजे सक्सेना का लेखन प्रमुख रूप से प्रवासी साहित्य, स्त्री मुद्दे और मानवता पर आधारित है। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रवासी भारतीयों के अनुभव, उनके संघर्ष और सामाजिक-सांस्कृतिक द्वंद्व को गहराई से चित्रित किया है।

प्रमुख कृतियाँ:

कविता संग्रह:

1. एक जीवन और बाकी कई
2. नम्रता और निर्भीकता
3. धार्मिक धारा

कहानी संग्रहः

1. सामाजिक संदेश
2. पानी की तलाश

अनुवादः

उन्होंने भारतीय और विदेशी साहित्य का अनुवाद भी किया, जिसमें भारतीय संस्कृति और जीवन को पश्चिमी समाज में प्रस्तुत किया गया।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **प्रवासी जीवन का चित्रणः**

उषा राजे सक्सेना की रचनाओं में प्रवासी भारतीयों की मानसिकता, उनके द्वितीयक जीवन और संस्कृति से जुड़ी भावनाएँ प्रमुखता से उभरती हैं।

- भारतीय संस्कृति के साथ जुड़ाव और पश्चिमी समाज में समायोजन के संघर्ष पर लेखन

- **स्त्री विषयक रचनाएँः**

उनकी लेखनी में स्त्री के संघर्ष, उसकी स्वतंत्रता और समाज में उसके स्थान को विशेष स्थान मिला है।

- **सांस्कृतिक द्वंद्वः**

भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच की टकराहट और सामंजस्य की खोज उषा की रचनाओं में प्रमुख रूप से देखने को मिलती है।

- **भाषा और शैलीः**

उनकी लेखन शैली में गहरी संवेदनाएँ और सटीक चित्रण मिलता है। वे सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करती हैं।

सम्मान और पुरस्कार

- भारतीयों के जीवन और संघर्ष का सजीव चित्रण

उषा राजे सक्सेना को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

उनके लेखन ने उन्हें साहित्यिक समुदाय में एक प्रमुख स्थान दिलाया।

1.4.2.11 अचला शर्मा

अचला शर्मा हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख लेखिका और कवयित्री हैं, जो विशेष रूप से प्रवासी साहित्य में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाती हैं। उनका लेखन प्रवासी जीवन, स्त्री विमर्श और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित है। अचला शर्मा ने अपने लेखन के माध्यम से न केवल भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर किया, बल्कि प्रवासी भारतीयों के अनुभवों को भी साहित्यिक मंच पर पेश किया।

- प्रवासी जीवन, स्त्री विमर्श और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित रचनाएँ

अचला शर्मा -व्यक्तित्वः

अचला शर्मा का जन्म भारत में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भारत में

प्राप्त की और बाद में उच्च शिक्षा के लिए विदेश यात्रा की। अचला शर्मा ने भारत के बाद विदेश में बसने का निर्णय लिया और वहाँ प्रवासी भारतीयों के जीवन और संस्कृति से जुड़े विषयों पर अपनी रचनाएँ लिखीं।

पेशेवर जीवनः

वे एक समर्पित लेखिका होने के साथ-साथ संपादक और पत्रकार भी हैं। उनके लेखन में मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक समरसता और स्त्री अधिकारों के मुद्दे प्रमुख रूप से देखने को मिलते हैं।

कृतित्व

अचला शर्मा का लेखन प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाता है, जिसमें उन्होंने भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच के द्वंद्व, प्रवासी जीवन के कठिनाइयों और नारी के संघर्षों को शिद्दत से उकेरा है।

प्रमुख कृतियाँः

कविता संग्रहः

1. जन्मों का हिसाब
2. अधूरी कविताएँ
3. वो जो नहीं थे

कहानी संग्रहः

1. सपने, संघर्ष और सीरत
2. अजनबी साए

निबंध और आलेखः

अचला शर्मा ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, विशेषकर प्रवासी जीवन, नारी के अधिकार और भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं पर।

▶ अचला शर्मा का लेखन प्रवासी साहित्य की महत्वपूर्ण कड़ी

साहित्यिक विशेषताएँ

▶ **प्रवासी जीवन का चित्रणः**

अचला शर्मा की रचनाओं में प्रवासी भारतीयों के संघर्ष, उनकी सांस्कृतिक पहचान और उनके द्वितीयक जीवन का चित्रण बहुत स्पष्ट रूप से मिलता है।

▶ अचला शर्मा का लेखन मुख्यतः महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनके अधिकार और स्वतंत्रता के मुद्दों पर आधारित है

▶ **स्त्री विमर्श**

उनका लेखन महिलाओं की सामाजिक स्थिति, उनके अधिकार और स्वतंत्रता के मुद्दों पर आधारित है। वे अपने लेखन में स्त्री की मजबूरी, संघर्ष और उसकी पहचान पर चर्चा करती हैं।

▶ संवेदनशीलता और यथार्थवादः

उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाएँ और समाज की जटिलताएँ यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत की जाती हैं।

▶ **संस्कृतिक द्वंद्वः**

भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच के अंतर और उनके बीच सामंजस्य की कोशिश, उनकी लेखन का एक प्रमुख हिस्सा है।

1.4.2.12 देवी नागरानी

▶ प्रवासी भारतीयों के अनुभवों, उनके जीवन के संघर्षों और भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं

देवी नागरानी हिन्दी साहित्य की एक प्रमुख और सम्मानित प्रवासी लेखिका हैं। उनकी रचनाएँ विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों के अनुभवों, उनके जीवन के संघर्षों और भारतीय समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से प्रवासी समाज की समस्याओं और उनके मानसिक संघर्षों को समाज के सामने रखा है। देवी नागरानी की रचनाएँ पाठकों को प्रवासी जीवन के वास्तविक पक्ष से परिचित कराती हैं।

देवी नागरानी -व्यक्तित्वः

▶ विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक संगठनों से जुड़ी हुई हैं

देवी नागरानी का जन्म भारत में हुआ। हालांकि, वे बहुत कम उम्र में परिवार के साथ विदेश चली गईं। उन्होंने अपनी शिक्षा भारत और विदेश में प्राप्त की। वे कई वर्षों से कनाडा में रहती हैं, जहाँ उनके लेखन को विशेष पहचान मिली है। प्रवासी जीवन और संस्कृति पर उनका लेखन गहरा प्रभाव डालता है, विशेष रूप से भारतीय प्रवासियों की समस्याओं पर।

देवी नागरानी ने लेखन के अलावा अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भाग लिया है। वे विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक संगठनों से जुड़ी हुई हैं और प्रवासी साहित्य को समृद्ध बनाने के लिए काम करती हैं।

कृतित्वः

देवी नागरानी की रचनाएँ मुख्य रूप से प्रवासी जीवन, स्त्री संघर्ष और संस्कृति और पहचान के मुद्दों पर आधारित हैं। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से इन विषयों को गहराई से और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

प्रमुख कृतियाँः

कविता संग्रहः

1. पंखों के बिना
2. संगम

3. सपनों का उजाला

कहानी संग्रहः

1. अजनबी देश
2. पलायन
3. मूल्यांकन

निबंध और आलेखः

उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रवासी जीवन, महिला अधिकारों और समाजिक मुद्दों पर लेखन किया है।

साहित्यिक विशेषताएँ

- **प्रवासी जीवन का चित्रणः**

देवी नागरानी की रचनाओं में प्रवासी जीवन की जटिलताएँ, संघर्ष और सांस्कृतिक पहचान को उजागर किया गया है। उनके लेखन में प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन और संघर्ष का वास्तविक चित्रण मिलता है।

- **स्त्री विमर्श**

उनका लेखन महिलाओं के संघर्ष, उनकी स्वतंत्रता और समाज में उनके स्थान पर आधारित है। वे अपनी रचनाओं में स्त्री के अधिकारों और उनके संघर्ष को प्रमुखता से प्रस्तुत करती हैं।

- **संस्कृतियों का टकराव और सामंजस्यः**

भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच के द्वंद्व और उनके बीच सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता पर वे विचार करती हैं।

- **मानवता और संवेदनशीलताः**

उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाएँ और समाज की जटिलताओं का गहरा चित्रण किया जाता है। वे पाठकों को समाज और संस्कृति पर पुनः विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं।

- प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन और संघर्ष का वास्तविक चित्रण

साहित्यिक महत्व

- **प्रवासी साहित्य में योगदानः**

देवी नागरानी ने प्रवासी साहित्य को एक नया आयाम दिया। उनकी रचनाएँ प्रवासी भारतीयों के मानसिक संघर्षों और सांस्कृतिक द्वंद्व को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

- **स्त्री चेतना का उभारः**

उनका लेखन महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

► **सांस्कृतिक समन्वयः**

भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच सामंजस्य और सामूहिकता की आवश्यकता पर देवी नागरानी ने अपने लेखन से ध्यान आकर्षित किया है।

सम्मान और पुरस्कार

► हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण आवाज़

देवी नागरानी को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनके लेखन को कई प्रमुख साहित्यिक संस्थाओं ने सराहा है और उनकी रचनाएँ विभिन्न साहित्यिक मंचों पर प्रस्तुत की गई हैं।

1.4.3 प्रवासी हिन्दी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना

► भारतीय संस्कृति और पश्चिमी समाज के बीच का द्वंद्व, संघर्ष और समन्वय प्रमुख विषय हैं

प्रवासी हिन्दी साहित्य, विशेष रूप से कहानियाँ, उन प्रवासी भारतीयों के जीवन और अनुभवों की कथा प्रस्तुत करती हैं, जिन्होंने अपनी मातृभूमि से दूर जाकर दूसरे देशों में अपना जीवन बसाया। प्रवासी लेखकों ने अपनी कहानियों के माध्यम से न केवल अपनी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखा, बल्कि नए समाज में उन पर पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों को भी दर्शाया। इनमें सांस्कृतिक संवेदना का एक गहरा रूप देखने को मिलता है, जिसमें भारतीय संस्कृति और पश्चिमी समाज के बीच का द्वंद्व, संघर्ष और समन्वय प्रमुख विषय हैं।

सांस्कृतिक संवेदना के प्रमुख आयाम :-

► **भारतीय संस्कृति की पहचानः**

► भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाज़ों और पारिवारिक संबंधों के महत्व को प्रस्तुत करती हैं

प्रवासी लेखकों की कहानियाँ अक्सर भारतीय संस्कृति, रीति-रिवाज़ों और पारिवारिक संबंधों के महत्व को प्रस्तुत करती हैं। ये कहानियाँ अपने पात्रों के माध्यम से उन सांस्कृतिक मान्यताओं और परंपराओं को चित्रित करती हैं, जो प्रवासी भारतीयों के जीवन में गहरे बसे होते हैं। परिवार का महत्व, संस्कार, त्यौहारों की धूम और भारतीय सभ्यता की विशेषताएँ इन कहानियों में प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं।

► **संस्कृति का संकट और समायोजनः**

► प्रवासी जीवन का एक बड़ा पहलू यह है कि पात्रों को दो अलग-अलग संस्कृतियों

प्रवासी जीवन का एक बड़ा पहलू यह है कि पात्रों को दो अलग-अलग संस्कृतियों- भारतीय और पश्चिमी-के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। इस संघर्ष में कई बार उन्हें अपनी पहचान और सांस्कृतिक जड़ों से समझौता करना पड़ता है। प्रवासी कहानियाँ अक्सर उस द्वंद्व को दिखाती हैं, जिसमें पात्र भारतीय परंपराओं और पश्चिमी आधुनिकता के बीच झूलते रहते हैं।

► मूल संस्कृति से जुड़ावः

► लोग अपनी भारतीय संस्कृति से पूरी तरह जुड़ा महसूस करते हैं

प्रवासी जीवन में अपनी मातृभूमि से दूर होने के बावजूद, लोग अपनी भारतीय संस्कृति से पूरी तरह जुड़ा महसूस करते हैं। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि हालांकि वे बाहरी दुनिया में रहते हैं, लेकिन अंदर से वे अपनी जड़ों को कभी नहीं भूलते। यह संस्कृति के प्रति गहरी संवेदनशीलता और आत्मीयता को प्रकट करती है।

▶ **भाषाई संवेदनाएँ:**

प्रवासी कहानियों में अक्सर भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। हिन्दी भाषा का प्रयोग उन लेखकों के लिए सांस्कृतिक पहचान का एक साधन बन जाता है। प्रवासी पात्रों के लिए अपनी मातृभाषा में बातचीत करना और सांस्कृतिक प्रतीकों का इस्तेमाल करना महत्वपूर्ण होता है, जो उनके भारतीय होने का अहसास कराता है।

▶ मातृभाषा में बातचीत करना और सांस्कृतिक प्रतीकों का इस्तेमाल करना महत्वपूर्ण होता है

▶ **नई सांस्कृतिक पहचानः-**

प्रवासी समाज के बीच रहते हुए भी लोग नई सांस्कृतिक पहचान विकसित करते हैं। वे भारतीय संस्कृति के साथ-साथ पश्चिमी संस्कृति का भी हिस्सा बनते हैं। यह परिवर्तन उनके व्यक्तिगत जीवन, परिवार और समाज में दिखता है। यह उनकी सोच और जीवनशैली को प्रभावित करता है, जो प्रवासी कहानियों में विशेष रूप से देखा जाता है।

▶ **संस्कार और परंपराओं की निरंतरताः**

प्रवासी कहानियाँ यह दिखाती हैं कि कैसे भारतीय परिवार अपनी परंपराओं और संस्कारों को प्रवासी देशों में भी जीवित रखते हैं। चाहे वह पूजा-पाठ हो, या त्यौहारों का आयोजन, ये कहानियाँ भारतीय परिवारों में परंपराओं के पालन को दर्शाती हैं। इसमें बच्चों को संस्कारित करने की कोशिशें भी प्रदर्शित होती हैं, जो भारतीय संस्कृति के प्रति जुड़ाव को बनाए रखने की कोशिश करती हैं।

▶ भारतीय परिवार अपनी परंपराओं और संस्कारों को प्रवासी देशों में भी जीवित रखते हैं

प्रवासी कहानियों में सांस्कृतिक संवेदना के उदाहरण :-

▶ सुषम बेदी की कहानियाँ:

सुषमा बेदी की कहानियाँ प्रवासी भारतीयों के मानसिक संघर्ष, उनकी सांस्कृतिक धरोहर और नए समाज में उनकी पहचान को बारीकी से चित्रित करती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच की खाई और समायोजन की प्रक्रिया को दर्शाया गया है।

▶ कैसे भारतीय परिवार अपनी परंपराओं और संस्कारों को प्रवासी देशों में भी जीवित रखते हैं इसका सुन्दर चित्रण

▶ अचला शर्मा की रचनाएँ:

अचला शर्मा की कहानियों में प्रवासी जीवन के संघर्षों, भारतीय संस्कृति और पश्चिमी प्रभावों के बीच के द्वंद्व को गहरे तरीके से दिखाया गया है। उनके पात्र अपनी भारतीय पहचान बनाए रखते हुए नए समाज में समायोजन की कोशिश करते हैं, जो सांस्कृतिक संवेदनाओं को उजागर करता है।

▶ प्रवासी जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक पहचान और भारतीय परंपराओं के साथ समायोजन की प्रक्रिया

▶ देवी नागरानी की कहानियाँ:

देवी नागरानी की कहानियाँ प्रवासी भारतीयों के जीवन के वास्तविक पक्ष को दर्शाती हैं। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा और प्रवासी समाज के संघर्षों का चित्रण मिलता है। वे अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाती हैं कि कैसे प्रवासी भारतीय अपनी सांस्कृतिक पहचान को खोने के बावजूद, उसे भीतर से महसूस करते हैं।

निष्कर्ष

प्रवासी हिन्दी कहानियाँ सांस्कृतिक संवेदना की गहरी समझ और अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुकी हैं। इन कहानियों में प्रवासी जीवन के संघर्ष, सांस्कृतिक पहचान और भारतीय परंपराओं के साथ समायोजन की प्रक्रिया को प्रभावी तरीके से दर्शाया गया है। इन रचनाओं के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि प्रवासी समाज में सांस्कृतिक और सामाजिक बदलावों के बावजूद, अपनी संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखना एक निरंतर प्रक्रिया है। प्रवासी हिन्दी साहित्य ने इस विषय को न केवल साहित्यिक रूप से प्रस्तुत किया है, बल्कि यह उन प्रवासी समुदायों के वास्तविक जीवन और संघर्षों का सशक्त चित्रण भी है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासी हिन्दी साहित्य की एक सशक्त परंपरा है। विश्व के लगभग सभी देशों में भारत के प्रवासी साहित्यकार रहते हैं। उनके द्वारा साहित्य की विविध विधाओं में प्रभूत मात्रा में रचना भी हो रही है। तेजेंन्द्र शर्मा की रचनाएँ न केवल प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ कहती हैं, बल्कि वैश्विक दृष्टिकोण से मानवीय संवेदनाओं को समझने का अवसर भी प्रदान करती हैं। वे प्रवासी साहित्य के ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने अपने अनुभवों को हिन्दी साहित्य में पिरोकर उसे वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है। अनिल जनविजय की कविताएँ और अनुवाद दोनों ही साहित्यिक गहराई, संवेदनशीलता और वैश्विक दृष्टिकोण का उदाहरण हैं। वे प्रवासी साहित्य के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और मानवीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। सुषम बेदी ने हिन्दी साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि प्रवासी अनुभवों को साहित्य के माध्यम से सजीव और प्रासंगिक बनाया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य की परंपरा पर प्रकाश डालिए।
2. हिन्दी के प्रमुख प्रवासी रचनाकारों के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. प्रवासी हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त सांस्कृतिक संवेदना पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्युअनंत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदु संधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्युअनंत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी
13. प्रवासी आवाज - अंजना संधरी
14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन
15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन, सं प्रो प्रदीप श्रीधर
2. प्रवासी लेखन नई जमीन नया आसमान, अनिल जोशी
3. प्रवासी हिन्दी साहित्य दशा एवं दिशा, प्रो प्रदीप श्रीधर

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 02

प्रतिनिधी प्रवासी कविताएँ

Block Content

Unit 1: प्रवासी कविताओं में युगबोध, प्रवासी कविता - संवेदना और शिल्प

Unit 2: चाहती है लौटना - अंजना संधीर

Unit 3: प्रार्थना - अनिल जनविजय

Unit 4: मेरे गाँव में - पूर्णिमा वर्मन

Unit 5: ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य - तेजेंद्र शर्मा

Unit 6: देस की छाँव - सुधा ओम ढींगरा

Unit 7: खुशबू वतन की - देवी नागरानी

Unit 8: वह अनजान आप्रवासी - अभिमन्यु अनत

Unit 9: अस्त-व्यस्त में - मोहन राणा

इकाई 1

प्रवासी कविताओं में युगबोध, प्रवासी कविता - संवेदना और शिल्प

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी कविताओं में निहित युगबोध समझता है
- प्रवासी कविताओं की संवेदना के बारे में समझ लेता है
- प्रवासी कविताओं के शिल्प के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

शताब्दियों पहले ही भारत के श्रमिक और मज़दूर लोग दुनिया के विभिन्न देशों में आजीविका और अच्छी जिंदगी के सपने लेकर गए। नए देश में विभिन्न प्रकार के संघर्षों से जूझते हुए भी अपनी मिट्टी की ओर उनका लगाव और मातृभूमि के प्रति प्रेम उनकी रचनाओं की प्रमुख विशेषता रही। प्रवासी कविताओं की संवेदना में मुख्य रूप से गृहातुरता की भावना हम देख सकते हैं।

परदेश में रहकर भी भारतीय लोग अपनी वतन के प्रति प्रेम एवं लगाव रखते हैं। प्रवासी साहित्य में हम जहाँ भी देखें मातृभूमि के प्रति लालसा दिखता है। किसी कारणवश जो वे छोड़कर गए हैं, उसे वापस पाने की, अपने वतन की खु शबू को एक बार फिर अपने रगों में अनुभव करने की तीव्र चाह उनकी रचनाओं से झलकता है।

इसके साथ ही अन्य देश में झेले गए भेदभाव, कठिन परिस्थितियाँ और सांस्कृतिक विषमताओं का भी ज़िक्र उनकी रचनाओं में मिलता है। प्रवासी साहित्य वेदनाओं का साहित्य है। अजनबीपन एवं अकेलापन के दर्द से त्रस्त भारतीय अपनों के पास लौटने के लिए विवश होता है और अपने इस चाहत को साहित्य द्वारा प्रस्तुत करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासी कविता, युग बोध, संवेदना, शिल्प, प्रमुख प्रवासी कवि

Discussion / चर्चा

2.1.1 प्रवासी कविता में युगबोध

- सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन

प्रवासी कविता में युगबोध का तात्पर्य उस समय के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों से है, जिनसे प्रवासी भारतीय प्रभावित होते हैं। यह कविता उस युग के अनुभवों, संघर्षों और बदलावों का संवेदनात्मक, दृष्टिगत और चिंतनशील चित्रण करती है। प्रवासी कवियों का युगबोध उनके प्रवासी जीवन के संघर्षों, पहचान के संकट, समाज के साथ उनके संबंध और स्वदेश से जुदा होने के बावजूद अपनी जड़ों से जुड़े रहने की मानसिकता से प्रभावित होता है।

प्रवासी कविताओं में युगबोध के प्रमुख आयाम

- **दो संस्कृतियों का द्वंद्व**

- भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच संघर्ष और सामंजस्य

प्रवासी कविता का एक प्रमुख पहलू भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच संघर्ष और सामंजस्य है। कवि अक्सर दोनों संस्कृतियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं। इस द्वंद्व को कविता के माध्यम से व्यक्त करना उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष को स्पष्ट करता है। भारतीय समाज की परंपराओं और पश्चिमी समाज की आधुनिकता के बीच यह कवि अपनी पहचान की तलाश में रहते हैं।

- **स्वदेश की याद और घर वापसी का सपना**

- स्वदेश लौटने की इच्छा

प्रवासी कवि अक्सर अपनी मातृभूमि, घर, परिवार और संस्कृति की यादों से जूझते हैं। उनके मन में स्वदेश लौटने की इच्छा होती है, लेकिन वे जानते हैं कि यह मात्र सपना हो सकता है। यह युगबोध उन कवियों की मानसिकता को दर्शाता है, जो विदेश में रहते हुए भी अपनी जड़ों को नहीं भूल सके। उनकी कविताओं में स्वदेश के प्रति प्रेम और वहाँ की सांस्कृतिक धरोहर का आदर प्रकट होता है।

- **समाज और राजनीति के बदलाव**

- नस्लवाद और पहचान के संकट

प्रवासी कविता समाज और राजनीति में हो रहे बदलावों पर भी टिप्पणी करती है। खासतौर पर, प्रवासी भारतीयों को पश्चिमी देशों में जिन सामाजिक और राजनीतिक दबावों का सामना करना पड़ता है, वह उनकी कविताओं का केंद्रीय विषय बनता है। सामाजिक असमानताएँ, नस्लवाद और पहचान के संकट को कविता के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

- **स्मृति और निर्वासन का दर्द**

- खोई हुई पहचान और अस्मिता की तलाश

प्रवासी कवियों का युगबोध अक्सर स्मृति और निर्वासन के दर्द से भी जुड़ा होता है। वे न केवल अपने भूतकाल को याद करते हैं, बल्कि यह महसूस करते हैं कि वे अपने जीवन के एक अहम हिस्से से दूर हैं। यह निर्वासन का दुःख उनके लेखन में एक गहरी संवेदनशीलता पैदा करता है। उनका कवि-स्वभाव इस दर्द को शब्दों में ढालता है और

अपनी खोई हुई पहचान और अस्मिता की तलाश में रहता है।

▶ **आध्यात्मिकता और संस्कृति की खोज**

प्रवासी कवियों का युगबोध आध्यात्मिकता और संस्कृति की खोज में भी अभिव्यक्त होता है। पश्चिमी समाज में रहते हुए, कई प्रवासी कवि अपने भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की पुनः खोज करते हैं। वे अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक जड़ों के साथ जुड़ने का प्रयास करते हैं, जो उन्हें पश्चिमी जीवनशैली के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।

▶ मूल्यों की पुनः खोज

▶ **प्रवासी अनुभव का वैविध्य**

प्रवासी कविता में यह युगबोध भी दिखाई देता है कि प्रवासी भारतीयों के अनुभव और संघर्ष व्यक्तिगत ही नहीं, बल्कि सामूहिक भी होते हैं। कविता में यह दिखाई देता है कि एक प्रवासी की कहानी दूसरों से मेल खाती है, लेकिन फिर भी हर किसी का अनुभव अलग होता है। प्रवासी जीवन में सामाजिक असमानताएँ, सांस्कृतिक विसंगतियाँ और आत्मनिर्भरता की चुनौतियाँ इस युग के प्रमुख तत्व हैं।

▶ सामूहिक अनुभव

2.1.2 प्रवासी कविता: संवेदना और शिल्प

प्रवासी कविता का उद्देश्य केवल प्रवासी जीवन के संघर्ष और अनुभवों को व्यक्त करना नहीं है, बल्कि यह प्रवासी भारतीयों की संवेदनाओं और शिल्प को उस समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक बदलावों के संदर्भ में प्रकट करना है। प्रवासी कवि न केवल अपनी मातृभूमि से दूर जाकर एक नए समाज में जीवन यापन करते हैं, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर, पहचान और पारंपरिक मूल्यों के साथ जुड़ी संवेदनाओं को भी व्यक्त करते हैं। साथ ही, ये कविताएँ एक ऐसे शिल्प का निर्माण करती हैं, जो उन अनुभवों और भावनाओं को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करता है।

▶ सांस्कृतिक धरोहर, पहचान और पारंपरिक मूल्यों के साथ जुड़ी संवेदनाओं को भी व्यक्त करते हैं

प्रवासी कविता की संवेदना

प्रवासी कविता की संवेदना में निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्व होते हैं:

▶ **नम्रता और प्रेम**

प्रवासी कवियों की संवेदना में एक गहरी नम्रता और प्रेम का तत्व होता है, जो उनके घर और मातृभूमि के प्रति अटूट जुड़ाव को दर्शाता है। स्वदेश से दूर रहने के बावजूद, वे अपनी मातृभूमि, वहाँ के परिवारों और पारिवारिक मूल्यों की यादों से जुड़े रहते हैं। यह प्रेम और यादें कविताओं में गहरे रूप से व्यक्त होती हैं।

▶ मातृभूमि के प्रति अटूट जुड़ाव को दर्शाता है

▶ **वियोग और दूरियाँ**

प्रवासी कवि अपनी कविताओं में स्वदेश से वियोग और दूरियों का दुःख प्रकट करते हैं। यह वियोग भावनाओं का एक प्रमुख स्रोत बनता है, जो कवियों के लेखन में निरंतर उभरता है।

▶ स्वदेश से वियोग और दूरियों का दुःख

जैसे -

"घर से जितनी दूरी तन की
उतना समय पर रहा मेरा मन
धूप छाँव का खेल जिंदगी
क्या बसंत, क्या सावन!
नेत्र मूँदकर कभी देखा जाते
वही मिट्टी के घर आंगन। "

यह वियोग सिर्फ भौतिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक रूप से भी होता है, क्योंकि वे अपनी पहचान और संस्कृति के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं।

▶ संस्कृति और पहचान का संकट

प्रवासी कविता में संस्कृति और पहचान का संकट एक महत्वपूर्ण संवेदना बनकर उभरता है। प्रवासी भारतीयों को दो संस्कृतियों, भारतीय और पश्चिमी, के बीच संतुलन बनाने की कठिनाई होती है। इस संघर्ष को वे कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं, जहाँ उनकी पहचान, मूल्यों और परंपराओं के प्रति गहरी संवेदनाएँ दिखाई देती हैं। इस संघर्ष की काव्यात्मक अभिव्यक्ति कई बार दर्द, असमंजस और आत्मविश्लेषण के रूप में प्रकट होती है। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा में त्योहारों का विशेष महत्व है। प्रवासी कविता में भारतीय संस्कृति की विशिष्टता देखते ही बनता है। कवि राघव आनंद शर्मा कहते हैं-

"हर गाँव में रामायण की गूँज सुनाना

घर-घर में हनुमान के झंडे फहराना।"

इस प्रकार प्रवासी कवि अपनी संस्कृति और भाषा को अपनी अस्मिता से जोड़कर रखा है। मॉरीशस के कवि मुनीश्वर लाल चिंतामणि की 'मेरी हिन्दी' नामक कविता में हिंदी के प्रति उनका स्नेह, सम्मान और लगाव देख सकते हैं, जैसे -

▶ दो संस्कृतियों, भारतीय और पश्चिमी, के बीच संतुलन बनाने की कठिनाई

"उस आदमी से जाकर कहो कि
मेरी हिन्दी भाषा
एक ऐसी खूबसूरत चीज़ है
जिसने मेरी संस्कृति को
अब भी बचाए रखा है
जिसने मेरी पहचान को
अब भी बनाए रखा है।"

▶ आध्यात्मिक जड़ों को फिर से खोजने की कोशिश

▶ आध्यात्मिकता और आत्म-खोज

प्रवासी कवियों के लेखन में आध्यात्मिकता और आत्म-खोज का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्वदेश से दूर रहते हुए वे अपनी आध्यात्मिक जड़ों को फिर से खोजने

की कोशिश करते हैं। यह कविता के माध्यम से अपनी संस्कृति, धर्म और परंपराओं से जुड़ने की एक प्रक्रिया बनती है, जो उनकी संवेदनाओं को गहरी अर्थवत्ता देती है।

▶ समाज और राजनीति का प्रभाव

▶ नस्लवाद, भेदभाव, सामाजिक असमानताएँ और राजनीतिक संघर्ष

प्रवासी जीवन में समाज और राजनीति की बदलती धारा भी कवियों की संवेदना को प्रभावित करती है। नस्लवाद, भेदभाव, सामाजिक असमानताएँ और राजनीतिक संघर्ष उन संवेदनाओं का हिस्सा होते हैं जो प्रवासी कवि अपनी कविताओं में व्यक्त करते हैं। इन कविताओं में समकालीन सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणी और विचार होता है।

प्रवासी कविता का शिल्प

▶ भाषा और शैली में नए प्रयोग करते हैं

प्रवासी कविता का शिल्प उस संवेदना को व्यक्त करने के लिए जो प्रवासी जीवन के अनुभवों, संघर्षों और सोच के बीच उभरती है, अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रवासी कवि न केवल अपनी भाषा और शैली में नए प्रयोग करते हैं, बल्कि कविता के शिल्प का उपयोग करके अपनी गहरी भावनाओं को सटीक रूप से प्रस्तुत करते हैं।

▶ काव्य रूप और भाषा का प्रयोग

▶ हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का मिश्रण

प्रवासी कवि अपनी कविताओं में हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का मिश्रण कर रहे हैं, जिसे हिन्दी-इंग्लिश या हिंग्लिश कहा जाता है। यह भाषा का मिश्रण उनके जीवन और समाज के बदलते रूप को अभिव्यक्त करता है, जो दोनों संस्कृतियों के बीच के द्वंद्व को प्रकट करता है। यह शिल्प प्रवासी जीवन के सामूहिक अनुभव को व्यक्त करने का एक प्रभावशाली तरीका है।

▶ स्मृतियाँ और चित्रात्मकता

▶ चित्रात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान

प्रवासी कविताओं में चित्रात्मकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कवि अपने शब्दों के माध्यम से स्वदेश की यादों को चित्रित करते हैं। वे सांस्कृतिक और प्राकृतिक चित्रों का उपयोग करते हैं ताकि पाठक प्रवासी जीवन के अनुभवों को महसूस कर सकें। स्मृतियों का चित्रण कविताओं में भावनात्मक गहराई और स्पष्टता जोड़ता है।

▶ संवेदनात्मक नयापन

▶ नए प्रतीकों, मेटाफ़र्स और काव्य रूपों का प्रयोग

प्रवासी कवि अक्सर अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए नये रूपों और शैलियों का सहारा लेते हैं। वे आधुनिक शिल्प के साथ पारंपरिक काव्य रूपों का मिश्रण करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ और भी प्रभावशाली बन जाती हैं। उनकी कविताओं में नए प्रतीकों, मेटाफ़र्स और काव्य रूपों का प्रयोग यह सुनिश्चित करता है कि संवेदना गहरी और सशक्त हो।

▶ लय और ध्वनि का प्रयोग

▶ लय का प्रवाह कविता को एक अलग गहराई और अर्थ देता है

प्रवासी कवि अपनी कविताओं में लय और ध्वनि का विशेष ध्यान रखते हैं। ध्वनियों के माध्यम से वे उस मानसिक और भावनात्मक संघर्ष को व्यक्त करते हैं जो प्रवासी जीवन में होता है। लय का प्रवाह कविता को एक अलग गहराई और अर्थ देता है। प्रवासी कवि अपने शिल्प के माध्यम से इस संघर्ष को एक सामूहिक और व्यक्तिगत

रूप में प्रस्तुत करते हैं।

▶ कविता की संरचना

▶ परंपरागत और आधुनिक दोनों रूपों का सम्मिलित प्रयोग

प्रवासी कविता में कविता की संरचना परंपरागत और आधुनिक दोनों रूपों को सम्मिलित करती है। कभी-कभी प्रवासी कवि मुक्त छंद (free verse) का प्रयोग करते हैं, तो कभी वे छंदबद्ध कविता (metered poetry) में भी अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। यह संरचना उनके विचारों के प्रवाह और भावनाओं की अभिव्यक्ति के अनुरूप होती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासी कविता का संवेदनात्मक और शिल्पात्मक रूप दोनों ही प्रवासी जीवन के अनुभवों, संघर्षों और सोच को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवेदना के स्तर पर, यह कविता प्रवासी जीवन के अकेलेपन, पहचान के संकट, सांस्कृतिक संघर्ष और स्वदेश के प्रति प्रेम की गहरी भावनाओं को व्यक्त करती है। वहीं शिल्प के दृष्टिकोण से, प्रवासी कवि कविता के रूप, भाषा, चित्र और लय में नए प्रयोग करते हैं, ताकि अपनी संवेदनाओं को प्रभावी और सशक्त तरीके से प्रस्तुत कर सकें। प्रवासी कविता एक ऐसी काव्यशक्ति बन गई है जो न केवल व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और मानसिक संघर्ष को भी उजागर करती है। प्रवासी कविताओं में अपने समय की सामाजिक राजनीतिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का वास्तविक और यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रवासी कविताओं की संवेदना और शिल्प अपने में अलग होती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्रवासी कविताओं में अभिव्यक्त युगबोध पर चर्चा कीजिए।
2. संवेदना की दृष्टि से प्रवासी कविता का मूल्यांकन कीजिए।
3. प्रवासी कविता की शिल्पगत विशेषताओं पर विचार कीजिए।
4. प्रवासी साहित्य में पहचान का संकट किस प्रकार व्यक्त हुआ है?
5. प्रवासी साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा क्या क्या व्यक्त करते हैं?
6. प्रवासी लोग अपने वतन पर लौटकर आने की तीव्र इच्छा रखते हैं। इसका कारण क्या क्या हो सकता है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी
13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर
14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन
15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन, प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर
2. प्रवासी साहित्य दशा और दिशा, प्रदीप श्रीधर
3. http://kavitakosh.org.

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

चाहती है लौटना - अंजना संधीर

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्यकार अंजना संधीर की 'चाहती है लौटना' कविता का परिचय प्राप्त कर लेता है
- 'चाहती हैं लौटना' कविता का भावगत और शिल्पगत सौंदर्य समझ लेता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासी साहित्यकारों की रचनाओं में मुख्यतः निहित स्वदेश के प्रति प्रेम अपनी मिट्टी के प्रति लगाव आदि बातों को अन्य सभी विधाओं की अपेक्षा कविता के माध्यम से बड़े ही अनुभूति प्रवण ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है।

अंजना संधीर हिंदी की प्रतिष्ठित प्रवासी कवयित्री, लेखिका और साहित्यकार हैं। उनका जन्म भारत में हुआ, लेकिन वे कई दशकों से अमेरिका में रहकर हिंदी साहित्य की सेवा कर रही हैं। अंजना संधीर प्रवासी भारतीय साहित्य में एक सशक्त नाम हैं, जो अपनी कविताओं, गीतों, और लेखों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, परंपरा, और सामाजिक मूल्यों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करती हैं।

प्रमुख योगदान

- काव्य रचनाएँ

अंजना संधीर की कविताएँ प्रवासी भारतीयों की भावनाओं, उनके संघर्ष, और मातृभूमि के प्रति उनके प्रेम को उजागर करती हैं। उनकी कविताओं में नॉस्टेल्जिया और देशप्रेम के भाव गहराई से उभरते हैं।

- **प्रमुख कृतियाँ**

उनकी प्रमुख पुस्तक 'भारत से अमेरिका तक' (2002) बेहद लोकप्रिय रही। इस पुस्तक में उन्होंने प्रवासी भारतीयों के अनुभवों और भावनाओं को कविताओं के माध्यम से खूबसूरती से व्यक्त किया है।

- **भाषा और शैली**

उनकी भाषा सरल, भावपूर्ण और सशक्त है। वह अपने लेखन में भारतीय संस्कृति और पश्चिमी जीवन शैली के बीच के सामंजस्य को व्यक्त करती हैं।

- **सांस्कृतिक सेवाएँ**

अंजना संधीर ने हिंदी भाषा और साहित्य को विदेशों में प्रचारित करने के लिए कई कार्यक्रमों और संगठनों से

जुड़कर काम किया है।

- **सम्मान और पुरस्कार**

उनके साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं।

- **विशेषताएँ**

- उनकी रचनाएँ भारतीय संस्कृति की गहराई और प्रवासी जीवन की जटिलताओं का जीवंत चित्रण करती हैं।
- आप साहित्य के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी सक्रिय रहती हैं।
- अंजना संधीर हिंदी साहित्य की उन हस्तियों में से हैं, जिन्होंने विदेश में रहते हुए भी अपनी मातृभाषा और संस्कृति के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंजना संधीर की कविता 'चाहती है लौटना' में प्रवासी जीवन की गहरी संवेदनाओं और शिल्प का सुंदर मिश्रण है। इस कविता में प्रवासी भारतीय की मानसिकता, उसकी संस्कृति से जुड़ी यादें, और स्वदेश की ओर वापसी की भावना को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया गया है। कविता की संवेदना और शिल्प को समझने के लिए हमें दोनों पहलुओं को विस्तार से देखना होगा।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्वदेशी प्रेम, भारतीय संस्कृति से लगाव, अपनी मिट्टी में वापस जाने की चाह

Discussion / चर्चा

चाहती है लौटना - अंजना संधीर

ये गयाना की साँवली-सलोनी,

काले-लम्बे बालों वाली

तीखे-तीखे नैन-नक्श, काली-काली आँखों वाली

भरी-भरी, गदराई लड़कियाँ

अपने पूर्वजों के घर, भारत

वापस जाना चाहती हैं।

इतने कष्टों के बावजूद,

भूली नहीं हैं अपने संस्कार।

सुनती हैं हिन्दी फ़िल्मी गाने

देखती हैं, हिन्दी फ़िल्में अंग्रेजी सबटाइटिल्स के साथ

जाती हैं मन्दिरों में

बुलाती हैं पुजारियों को हवन करने अपने घरों में।

और, कराती हैं हवन संस्कृत और अंग्रेजी में।

संस्कृत और अंग्रेजी के बीच बचाए हुए हैं

अपनी संस्कृति।

सजाती हैं आरती के थाल, पहनती हैं भारतीय

पोशाकें तीज-त्योहारों पर।

पकाती हैं भारतीय खाने, परोसती हैं अतिथियों को

पढ़ती रहती हैं अपनी बिछुड़ी संस्कृति के बारे में

और चाहती हैं लौटना

उन्हीं संस्कारों में जिनसे बिछुड़ गईं थीं

बरसों पहले उनकी पीढ़ियाँ।

सारांश

प्रवासी साहित्य की सशक्त हस्ती अंजना संधीर की 'चाहती है लौटना' कविता में लेखिका कहती है की साँवली-सलोनी, काले-लम्बे बालों वाली तीखे-तीखे नैन-नक्श, काली-काली आँखों वाली, भरी-भरी, गदराई लड़कियाँ अपने पूर्वजों के देश वापस जाना चाहती है। अर्थात विदेश में पले बढे प्रवासी भारतीयों की अगली पीढ़ी अपने पूर्वजों के देश अर्थात भारत लौटना चाहते हैं। उनकी रगों में भारतीय संस्कृति का लहू बहता है, और यह भी हो सकता है की उनका भारतीय माता पिता उन्हें अपनी संस्कृति का पर्याप्त ज्ञान देकर एवं स्वदेशी परवरिश देकर बड़ा किया हो। जो भी हो वे आज अपने वतन लौटना चाहते है।

▶ वतन वापस जाने की चाह

विदेश में रहकर भी वे अपने संस्कृति को छोड़ देना नहीं चाहते। अपने संस्कृति रूपी धरोहर को बनाए रखने के लिए वे हिन्दी फिल्मी गानें सुनते हैं। अंग्रेज़ी सबटाइटल्स लगाकर हिन्दी फिल्में भी देखते हैं। वे मंदिर भी जाते हैं और पूजारी को घर में हवन करने के लिए भी बुलाते हैं। और हवन करते हैं संस्कृत और अंग्रेजी में। संस्कृत और अंग्रेजी के बीच में वह अपनी संस्कृति को बचाए रखने की कोशिश करते हैं। क्योंकि वह पूरी तरह से हिंदी या संस्कृत को नहीं जानते इसलिए अपनी समझ में आने के लिए वे अंग्रेज़ी का प्रयोग करते हैं। वे तीज त्योहारों पर और भारतीय उत्सवों पर भारतीय

▶ भाषाथी कठिाई के बीच संस्कृति का बचाव

वस्त्र पहनते हैं और आरती का थाल भी सजाते हैं। वह भारतीय खाना पकाते हैं, परोसते हैं और अतिथियों को देते भी है। वह अपनी पुरानी पीढ़ियों से बिछुड़ी संस्कृति के बारे में अतिथियों से कहते हैं और उन्हें पढ़ाते रहते हैं। और वे अपने पूर्वजों के देश में लौटना चाहते हैं।

संवेदना

▶ मातृभूमि के प्रति गहरा प्रेम

कविता में मुख्य भावनात्मक धारा स्वदेश वापसी की इच्छा की है। प्रवासी जीवन के बीच जहाँ व्यक्ति अपने घर और अपनी जड़ों से दूर होता है, वहीं स्वदेश लौटने की इच्छा एक अंदरूनी संघर्ष बनकर सामने आती है। यह इच्छा केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी होती है। कविता में इस इच्छा की गहरी संवेदना को महसूस किया जा सकता है। लौटने की चाह केवल एक जगह पर वापस जाने का नहीं, बल्कि एक पहचान, संस्कृति और परंपरा से जुड़ने का प्रतीक है। कविता में कवयित्री कहती है-

▶ स्वदेश लौटने की इच्छा एक अंदरूनी संघर्ष

"सजती है आरती के थाल पहनती है भारतीय
पोशाकें तीज त्योहार पर।"

▶ वियोग और आत्मीयता

कविता में वियोग की भावना को भी प्रमुखता से व्यक्त किया गया है। प्रवासी जीवन में स्वदेश से दूर होने का दुःख हमेशा बना रहता है। यह वियोग केवल पारिवारिक या भौतिक नहीं होता, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक होता है। कवि उस टूटे हुए संबंध और मानसिक असंतुलन को महसूस करता है, जो अपनी जड़ों से दूर जाने के कारण उत्पन्न होता है। स्वदेश की याद और वहाँ के परिप्रेक्ष्य की ओर लौटने की चाहत में यह वियोग और आत्मीयता उभरकर आती है।

▶ मानसिक और सांस्कृतिक वियोग

"और चाहती है लौटना
उन्हें संस्कारों में जिनसे बिछुड गई थी।"

▶ सांस्कृतिक संकट और पहचान के प्रश्न

कविता में संस्कृति और पहचान का संकट भी अभिव्यक्त होता है। जब व्यक्ति अपने देश से दूर किसी दूसरे समाज में निवास करता है, तो वह अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी समस्याओं से गुज़रता है। कविता में यह संघर्ष प्रदर्शित होता है, जहाँ प्रवासी भारतीय अपनी पारंपरिक मान्यताओं, जीवनशैली और भाषा के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। यह संकट उसके भीतर गहरे भावनात्मक द्वंद्व को जन्म देता है, जो लौटने की चाहत से जुड़ा होता है।

▶ गहरे भावनात्मक द्वंद्व

जैसे -

"पकाती है भारतीय खाने, परोसती है अतिथियों को
पढ़ती रहती है अपनी बिछुड़ी संस्कृति के बारे में"

▶ वर्तमान और अतीत का मिलाजुला रूप

▶ अतीत को याद करने की भावना और वर्तमान के दर्द

कविता में वर्तमान और अतीत के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वर्तमान में प्रवासी जीवन की कठिनाई और अलगाव है, जबकि अतीत में घर, परिवार और स्वदेश के साथ बिताए गए समय की यादें हैं। यह अतीत को याद करने की भावना वर्तमान के दर्द और अकेलेपन से कहीं अधिक गहरी होती है। यह समय के बीच का अंतर, प्रवासी जीवन के संघर्ष और संवेदनाओं को दर्शाता है।

शिल्पगत विशेषताएँ:

▶ रूपक और प्रतीक

▶ रूपक और प्रतीक का प्रभावी इस्तेमाल

अंजना संधीर की कविता में रूपक और प्रतीक का इस्तेमाल बहुत प्रभावी है। स्वदेश लौटने की इच्छा का प्रतीक केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा की एक यात्रा भी बन जाता है। स्वदेश की ओर लौटने की भावना एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जो न केवल भौतिक यात्रा को, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक पुनः साक्षात्कार को भी व्यक्त करती है। यह प्रतीक कविता को और अधिक गहरे अर्थ देती है।

▶ सजीव और भावनात्मक भाषा

▶ कविता में शब्द गहरी भावनात्मक स्थिति को व्यक्त करता है

कविता में सजीव और भावनात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है, जो पाठक को गहरे भावनात्मक अनुभव से जोड़ता है। कवि अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यह भाषा न केवल पाठक को विचार करने पर मजबूर करती है, बल्कि उसकी संवेदनाओं को भी छू जाती है। कविता में शब्दों का चयन और उनका संयोजन उस गहरी भावनात्मक स्थिति को व्यक्त करता है, जिसमें कवि स्वयं और प्रवासी जीवन को अनुभव करता है।

▶ छंद और लय का संयोजन

▶ प्रवासी जीवन की गति और संघर्ष को व्यक्त करता है

कविता में छंद और लय का संयोजन प्रवासी जीवन की गति और संघर्ष को व्यक्त करने के लिए किया गया है। कविता में प्रवासी जीवन के उथल-पुथल, दर्द और स्वदेश लौटने की इच्छा के बीच एक लयात्मक तालमेल होता है।

▶ भावनाओं का अभिव्यक्तिकरण

▶ भावनाओं का सशक्त अभिव्यक्तिकरण

कविता में भावनाओं का सशक्त अभिव्यक्तिकरण किया गया है। प्रत्येक शब्द, वाक्य और छंद प्रवासी जीवन की बेचैनी, स्वदेश लौटने की चाहत और पहचान के संकट की गहरी अनुभूति को व्यक्त करता है। कविता का शिल्प और संरचना इस भावना को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त रूप से चयनित हैं।

▶ प्रवासी जीवन की गहरी संवेदनाओं और शिल्प का बेहतरीन उदाहरण

अंजना संधीर की कविता 'चाहती है लौटना' प्रवासी जीवन की गहरी संवेदनाओं और शिल्प का बेहतरीन उदाहरण है। कविता की संवेदना में स्वदेश से दूर होने का दुःख, पहचान का संकट, संस्कृति और परंपरा की तलाश और लौटने की चाहत की भावना प्रमुख हैं। वहीं, शिल्प के स्तर पर कविता में रूपक, प्रतीक, लय और भाषा का उपयोग उन संवेदनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए किया गया है। इस

कविता के माध्यम से अंजना संधीर ने प्रवासी जीवन के संघर्षों और भावनात्मक द्वंद्व को न केवल समझाया है, बल्कि उन भावनाओं की गहराई और जटिलता को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'चाहती है लौटना' कविता में युगबोध प्रवासी जीवन के उस आंतरिक संघर्ष को दर्शाता है जो घर लौटने की भावना और सांस्कृतिक पहचान के पुनर्निर्माण की तलाश से जुड़ा है। यह कविता न केवल प्रवासी व्यक्ति की आकांक्षाओं को व्यक्त करती है, बल्कि यह वैश्वीकरण, आधुनिकता, और संस्कृति के संघर्ष के समय की मानसिकता को भी उजागर करती है। कवि ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि वापसी केवल भौतिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी होनी चाहिए, और यह युगबोध प्रवासी समाज में हो रहे गहरे परिवर्तन और पहचान की तलाश का प्रतीक है।

प्रमुख प्रवासी साहित्यकार श्रीमती अंजना संधीर की 'चाहती है लौटना' कविता में एक प्रवासी भारतीय की घर लौटने की कामना और अपनी सांस्कृतिक विरासत को जिलाए रखने की कामना देख सकते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. "चाहती है लौटना" कविता में अभिव्यक्त गृहातुरता पर विचार कीजिए।
2. भारतीय संस्कृति के प्रति प्रवासियों के मन में जो लगाव है 'चाहती है लौटना' कविता के आधार पर स्पष्ट करें।
3. चाहती है लौटना कविता का आस्वादन टिप्पणी तैयार कीजिए ।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं. रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी

7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय

8. प्रवासी हिन्दी साहित्य : संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार

9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी प्रवासी साहित्य - कमल किशोर गोयनका

2. प्रवासी हिंदी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org.

इकाई 3

प्रार्थना - अनिल जनविजय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रार्थना कविता के भाव और शिल्पगत सौंदर्य समझ लेता है
- प्रार्थना कविता में निहित नारी वादी चेतना पर विचार करता है
- प्रार्थना कविता का सारांश समझता है

Background / पृष्ठभूमि

पुरुष सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करने वाली, स्त्री पुरुष समानता की ज़रूरत पर ज़ोर देने वाली कविता।

अनिल जनविजय (Anil Janvijay) समकालीन हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख और सशक्त कवि, लेखक और अनुवादक हैं। उनका जन्म 28 जुलाई 1957 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में हुआ। अनिल जनविजय ने हिन्दी कविता और साहित्य में नए विचारों और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाएँ आधुनिक समाज, मानवता और जीवन के जटिल पहलुओं को गहराई से समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास करती हैं।

अनिल जनविजय की कविताएँ आधुनिक समाज मानवता और जीवन की जटिलताओं को गहराई से समझ कर प्रस्तुत करती है।

प्रमुख विशेषताएँ:

- **रचनात्मकता**

अनिल जनविजय की कविताओं में संवेदनशीलता, बौद्धिकता और भावनाओं का अद्भुत मेल देखने को मिलता है। उनकी कविताएँ आम जीवन के अनुभवों और संघर्षों को गहराई से व्यक्त करती हैं।

- **भाषायी विविधता**

वह हिन्दी साहित्य के साथ-साथ रूसी साहित्य के विशेषज्ञ भी हैं। उन्होंने रूसी साहित्य के कई महत्वपूर्ण कवियों और लेखकों की कृतियों का हिन्दी में अनुवाद किया है, जैसे अलेक्ज़ेंडर पुश्किन, अन्ना अख़्मातोवा और बोरिस पास्तरनाक।

► **प्रकाशित रचनाएँ**

अनिल जनविजय की कई काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें उनकी संवेदनशीलता और चिंतनशीलता स्पष्ट झलकती है। उनके काव्य संग्रहों में भाषा की सहजता और गहराई मिलती है।

हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने के साथ-साथ उन्होंने भारतीय साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका रूसी साहित्य से हिन्दी और हिन्दी से रूसी में अनुवाद कार्य सराहनीय है।

वह साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादन में भी सक्रिय रहे हैं। उनकी साहित्यिक गतिविधियों ने कई नवोदित कवियों और लेखकों को प्रेरित किया है।

अनिल जनविजय वर्तमान में मुख्य रूप से विदेश (रूस और जर्मनी) में रहते हैं, लेकिन उनकी साहित्यिक सक्रियता हिन्दी जगत के साथ निरंतर बनी रहती है। वे साहित्यिक मंचों, ब्लॉग और सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्यकारों और पाठकों से जुड़े रहते हैं।

उनकी साहित्यिक दृष्टि और कृतियाँ उन्हें हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभों में शामिल करती हैं।

अनिल जनविजय की कविता 'प्रार्थना' एक गहरी आध्यात्मिक और मानसिक अभिव्यक्ति है, जो जीवन की जटिलताओं, समाज की असमानताओं और व्यक्ति की आंतरिक स्थिति पर प्रकाश डालती है। कविता का नाम ही इसे एक प्रार्थना की तरह प्रस्तुत करता है, जिसमें एक व्यक्ति या कवि अपने अस्तित्व और जीवन के अर्थ को तलाशने की कोशिश करता है। इस कविता में संवेदना और शिल्प दोनों का अनूठा संयोजन है, जो पाठकों को एक गहरी सोच और भावनात्मक अनुभव से जोड़ता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

नई चेतना, पुरुष सत्तात्मकता का विरोध, नारी शक्ति पर विश्वास।

Discussion / चर्चा

प्रार्थना - अनिल जनविजय

कवि राजा खु शहाल के लिए

यह दुनिया

औरतों के हाथों में दे दो

रोटी की तरह गोल और फूली

इस पृथ्वी पर

प्रेम की मधुर आँच हैं

रस माधुर्य का स्रोत हैं

इस सृष्टि में

जीवन की पवित्र कोख हैं औरतें

औरतों के हाथों में

सम्हली रहेगी यह दुनिया

बेहतर और सुन्दर बनेगी

रचना की प्रेरणा हैं औरतें

सूर्य की ऊष्मा हैं

ऊर्जा का उदगम हैं

हर्ष हैं हमारे जीवन का

उल्लास हैं

उज्ज्वल, निर्द्वन्द्व ममता की सर्जक हैं

हे पुरुषो !

एक ही प्रार्थना है तुमसे

यह हमारी दुनिया

औरतों के हाथों में दे दो

अगर तुम सुरक्षित रखना चाहते हो इसे

अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए

सारांश

- औरत दुनिया के बेहतर और सुन्दर बना सकती है

प्रवासी साहित्य के जाने-माने लेखक अनिल जनविजय अपनी प्रार्थना नामक कविता में स्त्री पक्ष को उजागर करते हुए अपनी बात रखते हैं। इस कविता में कवि कहते हैं कि, कवि राजा अगर तुम दुनिया की खु शहाली चाहते हो तो इस दुनिया को औरतों के हाथ में दे दो। कवि आगे कहता है कि यह पृथ्वी जो है रोटी की तरह गोल और फूली हुई है और उसमें प्रेम की मधुर आँच है और इस पृथ्वी पर रस माधुरी का अनेक स्रोत बहते हैं। और इस सृष्टि में जीवन की पवित्र कोख वाली है औरतें। इससे हम दो अर्थ निकाल सकते हैं एक तो यह है की औरतों की कोख पवित्र है और दूसरा इस पवित्र सृष्टि में औरतों की भूमिका क्या है। कवि आगे कहता है कि औरतों के हाथों में यह

दुनिया संभाली रहेगी और बेहतर और सुंदर बनती जाएगी। अर्थात औरतों में दुनिया को बेहतर और सुंदर बनाने की क्षमता है। और कवि आगे कहता है की औरतों में रचना की प्रेरणा है उनमें सृजनात्मकता की शक्ति है। और उनमें सूर्य की तरह ऊष्मा है और वह ऊर्जा के स्रोत है। कवि औरतों को हमारे जीवन का हर्ष एवं उल्लास का स्रोत मानती है। और निर्द्वन्द्व ममता एवं उज्ज्वलता के भी प्रतिरूप मानते हैं।

▶ औरतों में सृजन-ात्मक क्षमता है

अंतिम पंक्तियों में कवि पुरुषों से प्रार्थना करते हैं कि, हे पुरुषों, में तुमसे एक ही प्रार्थना करता हूँ कि अगर तुम इस पृथ्वी को, इस दुनिया को सुरक्षित एवं अगली पीढ़ी के लिए बनाए रखना चाहते हैं, तो इस दुनिया को औरतों के हाथों में दे दो। वह अपनी सृजनात्मक क्षमता एवं संरक्षण में उसे अगली पीढ़ी के लिए बनाए रखेगी।

संवेदना

▶ जीवन की जटिलताएँ और आंतरिक संघर्ष

▶ कवि जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और मानसिक उलझनों को प्रकट करते हैं

'प्रार्थना' कविता में कवि जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और मानसिक उलझनों को प्रकट करते हैं। यह कवि की आंतरिक प्रार्थना की तरह व्यक्त होती है, जिसमें वह अपने जीवन की असमानताओं, दर्द और समस्याओं को परमात्मा से साझा करता है। कविता में जीवन के प्रति एक गहरी चिंतनशीलता और मानसिक संघर्ष व्यक्त होता है, जो पाठक को उस मानसिक और भावनात्मक द्वंद्व से जुड़ने के लिए प्रेरित करता है।

कवि अपने अस्तित्व के उद्देश्य और जीवन के सार को समझने की कोशिश करता है। 'प्रार्थना' के माध्यम से, वह अपने आंतरिक भ्रमों को साफ करना चाहता है और अपने जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास करता है।

▶ मानवता और समाज की आलोचना

▶ यह कविता केवल व्यक्तिगत प्रार्थना नहीं है

कविता में कवि मानवता और समाज की असमानताओं पर भी विचार करता है। यह कविता केवल व्यक्तिगत प्रार्थना नहीं है, बल्कि समाज में फैली हुई समस्याओं, असमानताओं और अन्याय के प्रति एक आंतरिक आह्वान भी है। कवि समाज में हो रही असमानताओं, संघर्षों और दुराग्रहों के खिलाफ अपनी प्रार्थना के रूप में आवाज़ उठाता है, जो उसे बेहतर, अधिक सकारात्मक और न्यायपूर्ण जीवन की ओर मार्गदर्शित करने की कोशिश करती है।

▶ प्रेम और दया

▶ पूरी मानवता के लिए आशीर्वाद की कामना

कविता में प्रेम और दया की अपील भी है, जहाँ कवि परमात्मा से सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए आशीर्वाद की कामना करता है। यह भाव कविता में गहरी संवेदनात्मक शक्ति को जन्म देता है, क्योंकि कवि समाज की अच्छाई, शांति और प्रेम की कामना करता है।

शिल्प

▶ साधारण और प्रभावी भाषा

अनिल जनविजय की कविता 'प्रार्थना' में भाषा बहुत ही साधारण और सीधी है, लेकिन इसका प्रभाव अत्यधिक गहरा है। कविता में प्रयुक्त शब्द सरल होते हैं, लेकिन उनका प्रभाव पाठक पर गहरा पड़ता है। कविता का शिल्प इस प्रकार का है कि हर शब्द अपनी गहरी भावनाओं को व्यक्त करता है और उसमें कोई अतिरिक्त अलंकार या जटिलता नहीं होती। साधारण शब्दों में भी कवि जीवन की गहरी समस्याओं और मानवता के विषय में बात करता है, जिससे यह कविता और भी प्रभावी बन जाती है।

▶ प्रयुक्त शब्द सरल, लेकिन प्रभाव गहरा

▶ छंद और लय

कविता में छंद और लय का संयोजन भी बहुत ही प्रभावी तरीके से किया गया है। कविता में प्रवाह और लय के कारण एक संगीतात्मक तत्व आ जाता है, जो इसे एक प्रार्थना की तरह महसूस कराता है। इस लयात्मकता से कविता के भावनात्मक आयाम को और अधिक गहराई मिलती है। इसका शिल्प पाठकों को ध्यान से पढ़ने और कविता के माध्यम से अपना आंतरिक अनुभव महसूस करने के लिए प्रेरित करता है।

▶ प्रवाह और लय के कारण एक संगीतात्मक तत्व आ जाता है

▶ रूपक और प्रतीकों का प्रयोग

कविता में रूपक और प्रतीकों का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है। कवि अपने जीवन की समस्याओं, संघर्षों और आंतरिक इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का उपयोग करते हैं। प्रार्थना के रूप में जीवन के बेहतर होने की आकांक्षा और समाज के उत्थान के प्रतीक के रूप में यह कविता एक गहरी काव्यात्मक अर्थवत्ता रखती है।

▶ रूपक और प्रतीकों का प्रभावशाली प्रयोग

▶ मुक्तक शैली

अनिल जनविजय ने इस कविता में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है, जिससे कविता में किसी भी काव्यात्मक सीमा का बंधन नहीं होता। मुक्तक शैली में भावनाओं और विचारों का प्रवाह स्वतंत्र होता है, जो कवि की स्वतंत्रता और आंतरिक संघर्ष को और अधिक स्पष्ट करता है। यह शैली कविता के शिल्प को और अधिक प्रभावशाली और स्वाभाविक बनाती है।

▶ मुक्तक शैली में भावनाओं और विचारों का प्रवाह स्वतंत्र होता है

▶ संवेदनात्मक भाषा शैली

कविता के संवेदनात्मक संकेत और विचारों का रूपक एक साथ चलते हैं, जहाँ प्रत्येक शब्द और वाक्य पाठक को अंदर की ओर सोचने के लिए प्रेरित करता है। कवि की आंतरिक स्थिति और उसके द्वारा व्यक्त की जा रही प्रार्थना का शिल्प, पाठक को न केवल कविता से जुड़ने के लिए, बल्कि खुद के आंतरिक जीवन की तलाश करने के लिए भी प्रेरित करता है।

▶ संवेदनात्मक संकेत और विचारों का रूपक एक साथ चलते हैं

अनिल जनविजय की कविता 'प्रार्थना' एक गहरी संवेदना और शिल्प का संगम है। कविता में जीवन के जटिल पहलुओं, आध्यात्मिक खोज और समाज में फैली असमानताओं पर विचार करते हुए कवि ने प्रार्थना के माध्यम से एक सकारात्मक और

- गहरी संवेदना और शिल्प का संगम

सुधारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। कविता का शिल्प साधारण भाषा, लयात्मक प्रवाह, रूपक और प्रतीकों के प्रभावशाली प्रयोग के माध्यम से उन गहरी संवेदनाओं को व्यक्त करता है, जो पाठकों के दिलों को छू जाती हैं। यह कविता एक प्रेरणा है जो न केवल व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों को समझने का अवसर देती है, बल्कि समाज और मानवता के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए भी प्रेरित करती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'प्रार्थना' कविता समकालीन भारतीय समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और बदलावों की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। यह कविता न केवल समाज के सुधार की आकांक्षा को व्यक्त करती है, बल्कि यह आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टिकोण से बदलाव की ओर प्रेरित करती है। अनिल जनविजय ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि समाज में बदलाव लाने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने भीतर के संघर्षों और समाज की वास्तविकताओं को पहचानें और उन्हें सुधारने की दिशा में कदम उठाएँ। नारी शक्ति पर विश्वास रखने वाले कवि ने सामाजिक बदलाव के लिए नारी के योगदान को स्पष्ट किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'प्रार्थना' कविता में नारी शक्ति का कैसा चित्रण किया गया है?
2. 'प्रार्थना' कविता का संवेदना और शिल्प के धरातल पर मूल्यांकन कीजिए।
3. 'प्रार्थना' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय

8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार

9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर

2. प्रवासी साहित्य दशा और दिशा - प्रदीप श्रीधर

3. http://Kavitakosh.org.

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

मेरे गाँव में - पूर्णिमा वर्मन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्यकार पूर्णिमा वर्मन के बारे में समझ लेता है
- मेरे गाँव में कविता के भाव एवं शिल्प का आस्वादन कर सकता है
- मेरे गाँव में कविता का सारांश समझता है

Background / पृष्ठभूमि

पूर्णिमा वर्मन की कविता 'मेरे गाँव में' एक सजीव और गहरी संवेदना से भरी हुई कविता है, जिसमें गाँव के जीवन, वहाँ की सरलता, पारंपरिक जीवनशैली और आधुनिकता के बीच की दरार की स्थिति को चित्रित किया गया है। इस कविता के माध्यम से कवि ने गाँव की जीवनधारा, उसकी धड़कन और वहाँ की पवित्रता को आत्मसात किया है। (कविता में संवेदना और शिल्प दोनों के मेल से एक भावनात्मक चित्र उभरता है, जो पाठकों को गाँव के वास्तविक रूप से जोड़ने का काम करता है।)

Keywords / मुख्य बिन्दु

मातृभूमि के प्रति लालसा, भारत का ग्रामीण जीवन

Discussion / चर्चा

मेरे गाँव में - पूर्णिमा वर्मन

मेरे गाँव में कोई तो होगा

कम्प्यूटर पर बैठा मेरी राह देखता

मेरी पाती पढ़ने वाला

मेरी भाषा, मेरा दर्द समझने वाला

मेरी लिपि को मेरी तरहा रचने वाला

मेरी मिट्टी की ख़ुशबू में रचा-बसा-सा

मेरी सोच समझने वाला

या कोई मेरी ही तरहा

घर से बिछुड़ा

भारत की मिट्टी का पुतला

परदेशी-सा दिखने वाला

एकाकी कमरे में बैठा

खोज मोटरों में

उलझा-सा

टंकित करता होगा–

तरह-तरह से नाम पते

भाषा और रुचियाँ

ढूँढ रहा होगा

अपनों को मेरी तरहा

जीवन की आपाधापी में रमा हुआ भी

पूरा करने को कोई

बचपन का सपना।

अपनों की आशा का सपना

देश और भाषा का सपना।

मेरे गाँव में

बड़े-बड़े अपने सपने थे

दोस्त-गुरु परिचित कितने थे

बड़े घने बरगद के नीचे

बड़ी-बड़ी ऊँची बातें थीं

कहाँ गये सब?

कोई नज़र नहीं आता है

यह सब कैसा सन्नाटा है?

तोड़ो, यह सन्नाटा तोड़ो

नये सिरे से सब कुछ जोड़ो

दूर वहीं से हाथ हिलाओ

मेरी अनुगूँजों में आओ

आओ सफ़र लगे ना तन्हा

बोलो साथ-साथ तुम हो ना !

सारांश

'मेरे गाँव में' प्रवासी साहित्यकार पूर्णिमा वर्मन द्वारा रचित प्रवासी मानसिकता से रूबरू कराने वाली एक सुंदर कविता है। इस कविता में लेखिका अपनी प्रतीक्षा एवं आशा को प्रकट करते हैं। वह कहती है कि मेरे गाँव में भी कोई होगा जो कंप्यूटर के सामने बैठकर मेरी तरह किसी का राह देख रहा होगा। लेखिका अपनी ही तरह आशाओं से युक्त किसी व्यक्ति की तलाश में है। वह आशा प्रकट करती है कि कोई ना कोई उसी की तरह मिल ही जाएगा। उसी की तरह पुस्तक पढ़ने वाला, उसी की तरह भाषा बोलने वाला, उसकी दर्द को समझने वाला और अपनी ही लिपि में अपनी ही तरह रचना करने वाला। मिट्टी की खु शबू में रच कर, बस कर जीने वाला और लेखिका की सोच को समझने वाला। कोई तो होगा जो कंप्यूटर पर लेखिका की ही तरह राह देख रहा होगा।

▶ लेखिका की अपनी ही तरह किसी को खोज निकालने की कोशिश

लेखिका आगे अपनी बात को और अच्छी तरह व्यक्त करना चाहती है। वह कहती है कि कोई मेरे ही तरह अपने घर से बिछड़ यानी अपने देश से बिछड़े होंगे। यहाँ पर प्रवासी मानसिकता हमारे सामने आती है। वह कहती है कि भारत की मिट्टी का एक पुतला, परदेसी सा दिखने वाला लेकिन अंदर से एकदम भारतीय बना हुआ कोई तो एकांत रूप में अपने कमरे में बैठकर मोटरों की सहायता से यानी कि कंप्यूटर की सहायता से टाइपिंग करता होगा। अपनी भाषा और लिपि को किसी नाम पर किसी पते पर वह अपनी ही तरह की आशाओं को व्यक्त करता होगा।

▶ प्रवासी मानसिकता

लेखिका कहती है कि कोई मेरी ही तरह जीवन की इस होड़ में भी अपनी कोई बचपन का पुराने सपने को पूरा करने की कोशिश में लग रहा होगा। कोई अपनी आशा का सपना, देश और भाषा का सपना देख रहा होगा। अगली पंक्तियों में कवियत्री की एकांकीपन, अकेलापन हमें दिखता है। वह कहती है कि मेरे गाँव में बड़े-बड़े सपने बुनने वाले बड़े-बड़े लोग थे, दोस्त एवं गुरु एवं परिचित लोग थे। बड़े घने बरगद के नीचे बड़ी-बड़ी ऊँची बातें होती थी, लेकिन अब सब कहाँ गायब हो गए।

▶ गाँव की यादें

परदेस की सन्नाटा कवियत्री को खायी जाती है। वह कहती है कोई नज़र नहीं आता यह कैसा सन्नाटा है। इस सन्नाटे को तोड़ दो। नए सिरे से सब कुछ एक बार फिर से

▶ परदेश की घुटन

जोड़ दो। कवियत्री की गूँजों में अनुगूँज बनकर सबको उनके साथ नया सफर शुरू करने के लिए लेखिका सबको आह्वान करती है और यहीं पर कविता समाप्त होती है।

संवेदना

▶ **गाँव की सरलता और प्राकृतिक सौंदर्यः**

▶ गाँव के जीवन के सौंदर्य

कविता में गाँव की सरलता और वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता की संवेदना प्रकट की गई है। कवि अपने गाँव के प्राकृतिक दृश्य, जैसे हरे-भरे खेत, खेतों में काम करती महिलाएँ, बच्चे खेलते हुए और आकाश में उड़ते पक्षी, इन सभी को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत करते हैं। यह चित्रण गाँव के जीवन के सौंदर्य को उजागर करता है, जो शहरी जीवन की भागदौड़ और अशांति से बहुत अलग है।

▶ **गाँव के जीवन में सांस्कृतिक संबंध**

▶ गाँव की सामाजिक एकता

कविता में गाँव की सांस्कृतिक धारा और वहाँ के पारंपरिक रिश्तों का भावनात्मक चित्रण है। कवि गाँव में रहने वाले लोगों के बीच गहरे रिश्तों, साझा जीवन और सहयोग की भावना को महसूस करते हैं। यह गाँव की सामाजिक एकता और उसके सामूहिक संस्कारों की पहचान को दर्शाता है। कविता में यह संवेदना इस रूप में उभरती है कि गाँव में हर व्यक्ति दूसरे से जुड़ा हुआ है और यह जुड़ाव मानवीय भावना और रिश्तों की प्रामाणिकता को बनाए रखता है।

▶ **आधुनिकता और गाँव के पुराने मूल्यों के बीच टकराव**

▶ बदलाव गाँव की सहजता और पारंपरिक जीवन को प्रभावित करता है

कविता में आधुनिकता और पारंपरिक मूल्यों के बीच टकराव की भी संवेदना है। जैसे-जैसे शहरीकरण और आधुनिकता गाँव तक पहुँचने लगी है, यह बदलाव गाँव की सहजता और पारंपरिक जीवन को प्रभावित करता है। कवि इस बदलाव को एक दर्दनाक अनुभव के रूप में महसूस करते हैं, क्योंकि यह पुराने मूल्यों, परंपराओं और गाँव की मासूमियत को मिटा देता है। कविता में यह संवेदना छिपी हुई है कि यह बदलाव गाँव के लिए एक संकट के रूप में आ रहा है, जो उसकी असली पहचान और जीवनशैली को प्रभावित कर रहा है।

▶ **वियोग और यादें**

▶ कवि अपने गाँव की सादगी और हरियाली की याद करते हैं

कविता में वियोग और यादों की एक गहरी भावना है। कवि अपने गाँव से दूर होने के कारण वहाँ की सादगी और हरियाली की याद करते हैं। यह वियोग न केवल भौतिक दूरी से, बल्कि मानसिक और भावनात्मक जुड़ाव से भी होता है। कवि अपने गाँव की पुरानी यादों को संजोते हुए, वहाँ की नीरवता और शांति को याद करते हैं। यह भावनात्मक तत्व कविता की गहराई को बढ़ाता है।

जैसे -

ढूँढ रहा होगा
अपनों को मेरी तरह

जीवन की आपाधापि में रमा हुआ भी
पूरा करने को कोई
बचपन का सपना।

शिल्पगत विशेषताएँ

▶ सरल और स्वाभाविक भाषा

▶ सरल और स्वाभाविक भाषा का उपयोग

'मेरे गाँव में' कविता में सरल और स्वाभाविक भाषा का प्रयोग किया गया है, जो गाँव की असली भावना और जीवन के सच्चे रूप को व्यक्त करती है। कवि ने अपने शब्दों के माध्यम से गाँव की सादगी, उसकी निस्सीमता और उसकी मासूमियत को बहुत प्रभावी तरीके से चित्रित किया है। इस कविता में कोई जटिलता या अलंकार नहीं है, बल्कि एक सहजता है, जो पाठक को सीधे गाँव के जीवन में प्रवेश करने का अवसर देती है।

▶ चित्रात्मकता

▶ चित्रात्मकता का अद्भुत प्रयोग

कविता में चित्रात्मकता का अद्भुत प्रयोग किया गया है। कवि ने गाँव के दृश्यों, वहाँ के वातावरण और जीवनशैली को शब्दों के माध्यम से चित्रित किया है। ये चित्र न केवल दृश्यात्मक हैं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी पाठक को गहरे रूप से प्रभावित करते हैं। कविता में चित्रों का उपयोग उस समय और स्थान की भावना को पूरी तरह से संप्रेषित करता है।

▶ मुक्तक रूप

▶ बहुत स्वाभाविक और मुक्त लय और प्रवाह

कविता में मुक्तक रूप का प्रयोग किया गया है, जिससे कविता की लय और प्रवाह बहुत स्वाभाविक और मुक्त हो जाता है। यह कवि को अपनी भावनाओं को पूरी स्वतंत्रता से व्यक्त करने की क्षमता देता है। कविता की लय प्रवाहमयी और प्राकृतिक है, जो गाँव के जीवन के सरल और मुक्त रूप को दर्शाती है।

▶ संवेदनात्मकता और प्रतीकों का प्रयोग

▶ गाँव के जीवन की गहराई को प्रतीकों के माध्यम से उकेरा

कविता में संवेदनात्मकता और प्रतीकों का प्रयोग भी बहुत प्रभावी तरीके से किया गया है। गाँव के जीवन को कवि ने न केवल शब्दों से व्यक्त किया है, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से उसकी गहराई को उकेरा है। जैसे पक्षियों का उड़ना, खेतों में काम करना और झोपड़ियाँ - ये सारे प्रतीक गाँव के शुद्ध और असंवेदनशील जीवन की पहचान हैं।

▶ अलंकारों का सीमित प्रयोग

▶ विचारों को सीधे और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया

कविता में अलंकारों का सीमित प्रयोग किया गया है, जिससे कविता की सहजता और प्रवाह बनी रहती है। कवि ने ज़्यादा अलंकारों के बजाय अपने विचारों को सीधे और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है, जो गाँव के वास्तविक जीवन को बिना किसी कृत्रिमता के चित्रित करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

पूर्णिमा वर्मन की कविता 'मेरे गाँव में' एक सरल, सजीव और गहरी संवेदनाओं से भरी हुई कविता है। इसमें गाँव के जीवन की सहजता, उसके सांस्कृतिक मूल्य और आधुनिकता के प्रभाव को बहुत प्रभावी तरीके से व्यक्त किया गया है। कविता का शिल्प सरल और चित्रात्मक है, जिससे पाठक गाँव के जीवन में पूरी तरह से घुसपैठ कर सकता है। यह कविता केवल एक स्थान या जीवनशैली का वर्णन नहीं करती, बल्कि यह पाठक को एक आंतरिक यात्रा पर ले जाती है, जिसमें गाँव की सादगी, उसकी पवित्रता और उसके भीतर छिपे हुए संघर्षों को महसूस किया जा सकता है।

पूर्णिमा वर्मन की कविता 'मेरे गाँव में' में भारतीय समाज में हो रहे परिवर्तनों, ग्रामीण जीवन की सच्चाइयों और समाज में व्याप्त असमानताओं पर गहरी दृष्टि डालती है। यह कविता न केवल वर्तमान ग्रामीण भारत की चित्रात्मकता प्रस्तुत करती है, बल्कि यह समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को भी उजागर करती है, जो भारतीय समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

आधुनिकता की बोलबाला के कारण भारतीय ग्रामीण परिवेश में जो बदलाव आया है उसका यथार्थ चित्रण इसमें किया गया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'मेरे गाँव में' कविता में अभिव्यक्त शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. 'मेरे गाँव में' अभिव्यक्त संवेदना पर विचार कीजिए।
3. मेरे गाँव में कविता का आस्वादन टिप्पणी लिखिए

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु

6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी

7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय

8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार

9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर

2. प्रवासी साहित्य दशा और दिशा - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org.

इकाई 5

ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य -तेजेंद्र शर्मा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- 'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' कविता के भाव शिल्प और युगबोध से अवगत हो जाता है
- कविता की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रदेयताओं को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

तेजेन्द्र शर्मा की कविता 'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' एक अत्यंत गहरी और विचारशील कविता है, जिसमें कवि अपने देश के आने वाले भविष्य को लेकर अपनी चिंता, आशाएँ और उम्मीदें व्यक्त करते हैं। इस कविता में सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों से भविष्य की छाया की कल्पना की गई है, जिसमें देश के निर्माण और दिशा के बारे में कवि की संवेदनाएँ और दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से व्यक्त होते हैं। कविता का शिल्प और उसकी संवेदना दोनों ही एक प्रभावशाली संयोजन हैं, जो पाठक को देश के सामाजिक बदलावों और समस्याओं के प्रति जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

देश का भविष्य, समाज में फैली असमानता, संघर्ष

Discussion / चर्चा

ऐ इस देश के बननेवाले भविष्य - तेजेंद्र शर्मा

ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य

काश!

मैं तुम्हें

अपने देश के बनने वाला भविष्य

कह पाता! और मिलता मुझे

सुकून! शांति ! और सुख!

उठो इस देश के भविष्य

और वस्तुःस्थिति को पहचानो

अब तुम्हें उठाना है

पढ़ाई के अतिरिक्त

और भी एक बोझ!

यह मज़दूर की सरकार है

मज़दूर को

बोझा ढोना, आना ही चाहिये

मज़दूर की सरकार का हुक्म है

तुम्हें पढ़ाई के लिये

उठाना होगा

और भी अधिक कर्ज़

यही है तुम्हारा फ़र्ज़

पहले महंगा हुआ पेट्रोल

फिर पार्किंग

सुपर मार्केट हुई

सुपर महंगी

अब मकानों को देखने के

भी लगेंगे दाम

हे राम !

इस देश के बनने वाले भविष्य

का वर्तमान

घमासान ! परेशान !

बोझा उठाओ, जुट जाओ

देखना

कहीं कमर ना मुड़ जाए

भविष्य कहीं

कुबड़ा न हो जाए !

सारांश

▶ महंगाई पर आशंका

प्रवासी साहित्यकारों में प्रमुखता से ली जाने वाली नाम है तेजेंद्र शर्मा। उनकी बहुचर्चित कविता है 'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य'। इस कविता में अपने देश में बढ़ती महंगाई को देखते हुए कवि अपना आशंका व्यक्त करते हैं। कवि कहता है कि काश इस अवस्था को देखकर मैं कह पाता कि यह मेरे देश के बनने वाले भविष्य है। और यह कहकर में सुकून, शांति एवं सुख का अनुभव कर सकते।

▶ महंगाई का ज़म्मेदार सरकार है

कवि पाठकों को आह्वान देते हैं कि उठो और इस देश के भविष्य के बारे में सोचो। इस देश के भविष्य एवं उसकी वस्तुस्थिति को पहचानो। अब तुम्हें उठना ही होगा। पढ़ाई के अतिरिक्त और भी बोझ तुम्हें उठाना होगा। यहाँ पर जो सरकार है वह मज़दूरों की सरकार है। और मज़दूर को बोझ ढोना तो आना ही चाहिए। यह मजदूर की सरकार का हुक्म है। अर्थात यहाँ पर महंगाई लोगों पर धोपी गई चीज के रूप में कवि व्यक्त करते हैं और उसका जिम्मेदार सरकार को मानते हैं। और कवि आगे कहते हैं कि अगर तुम्हें पढ़ाई करना है तो तुम्हें एक और कर्ज उठाना होगा। यानी पढ़ाई के लिए अधिक पैसे की जरूरत होने लगी है और इस पर कवि प्रहार करते हैं। यहाँ दूसरा अर्थ भी निकलता है कि, विधार्थियों को पढ़ाई के साथ ही अपने देश की भविष्य की चिंता रूपी बोझ भी उठना होगा।

▶ भविष्य का कुबड़ा होने की आशंका

कवि कहता है कि पहले तो पेट्रोल महंगा हुआ, फिर पार्किंग महंगी होने लगी। सुपर मार्केट हुई और सुपर महंगी होने लगी और अब डर लगता है कि कहीं मकान को देखने पर भी दाम न लग जाए। कवि आगे कहता है कि इस देश के बनने वाले भविष्य का वर्तमान देखकर मैं बहुत परेशान हो रहा हूं, क्योंकि यह भविष्य यह बोझ ढोता ढोता कहीं कुबड़ा ना हो जाए यानि कि यह बोझ उठाते उठाते हमारा भविष्य कहीं बर्बाद ना हो जाए।

संवेदना

▶ **देश के भविष्य के प्रति चिंता**

▶ कवि भविष्य को लेकर एक तटस्थ और आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं

कविता में देश के भविष्य को लेकर कवि की गहरी चिंता व्यक्त की गई है। यह चिंता केवल राजनीतिक या आर्थिक मामलों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित है। कविता में यह चिंता प्रकट होती है कि जिस दिशा में यह देश बढ़ रहा है, क्या वह सही दिशा है? कवि भविष्य को लेकर आशावादी होने के बजाय, एक तटस्थ और आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। यह कविता पाठक को भी वर्तमान समय की स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

▶ **सामाजिक असमानताएँ और बदलाव की आवश्यकता**

कविता में सामाजिक असमानताओं और निर्माणात्मक बदलाव की आवश्यकता की

▶ समाज में फैली असमानताओं, भेदभाव और आंतरिक संघर्षों पर प्रकाश डाला है

भावना व्यक्त होती है। देश के भविष्य को लेकर कवि ने समाज में फैली असमानताओं, भेदभाव और आंतरिक संघर्षों पर प्रकाश डाला है। यह संवेदना इस बात की ओर इशारा करती है कि जब तक समाज में समानता, न्याय और भाईचारे की भावना का विकास नहीं होगा, तब तक देश का भविष्य उज्ज्वल नहीं हो सकता। इस विचार को कविता के माध्यम से गहरे और सशक्त रूप से व्यक्त किया गया है।

▶ **आध्यात्मिक और सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता**

▶ संस्कृति और आंतरिक मूल्यों में भी बदलाव लाना ज़रूरी है

कविता में एक गहरी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता की आवश्यकता की बात की गई है। कवि मानते हैं कि के वल बाहरी संरचनात्मक बदलाव से देश का भविष्य नहीं सुधर सकता, बल्कि उसकी सांस्कृतिक और आंतरिक मूल्यों में भी बदलाव लाना ज़रूरी है। यह संवेदना कविता में देश के सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और उसे पुनर्जीवित करने की दिशा में एक आह्वान के रूप में प्रस्तुत होती है।

▶ **आशावाद और उम्मीद**

▶ कविता के अंत में एक उम्मीद की किरण दिखाई देती है

हालांकि कविता में देश के भविष्य की कई चिंताएँ हैं, लेकिन कवि ने आशावाद और उम्मीद का संदेश भी दिया है। कविता के अंत में एक उम्मीद की किरण दिखाई देती है, जो यह विश्वास दिलाती है कि अगर समाज और लोग अपने कर्तव्यों और ज़िम्मेदारियों को समझते हुए सही दिशा में कदम बढ़ाएँगे, तो देश का भविष्य बेहतर हो सकता है। यह आशावाद कविता को संतुलित करता है, जिससे पाठक निराश होने के बजाय प्रेरित होते हैं।

शिल्प

▶ **समान्य भाषा और प्रभावी संवाद**

▶ विचारों और संवेदनाओं को बिना जटिल शब्दावली या अलंकार के व्यक्त किया है

'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' कविता में सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है। कवि ने अपने विचारों और संवेदनाओं को बिना किसी जटिल शब्दावली या अलंकार के सीधे तौर पर व्यक्त किया है। यह कविता की प्रभावशीलता को बढ़ाता है, क्योंकि इस तरह की भाषा पाठक को सहजता से कविता से जुड़ने और उसके संदेश को समझने में मदद करती है। कवि का शिल्प पाठकों से सीधे संवाद करता है, जिससे उनकी भावनाओं और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाता है।

▶ **मुक्तक रूप**

▶ यह शिल्प कविता में लचीलापन प्रदान करता है

कविता का शिल्प मुक्तक रूप में है, जिससे कवि को अपने विचारों को बिना किसी काव्यात्मक बंदिश के व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलती है। यह शिल्प कविता में एक लचीलापन प्रदान करता है, जिससे कवि समाज, राजनीति और भविष्य की बातों को मुक्त रूप से व्यक्त कर सकते हैं। मुक्तक रूप की यह विशेषता कविता को एक विचारपूर्ण और विवेचनात्मक स्वर देती है, जो पाठक को गहरे सोचने के लिए प्रेरित करती है।

▶ **रूपक और प्रतीकों का प्रयोग**

कविता में रूपक और प्रतीकों का सशक्त प्रयोग किया गया है। भविष्य को लेकर

▶ प्रतीक देश के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की ओर इशारा करते हैं

कवि ने अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है, जैसे देश का निर्माण, समाज में बदलाव, और नई पीढ़ी का कर्तव्य। ये प्रतीक देश के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की ओर इशारा करते हैं। कवि ने रूपक का उपयोग करके एक गहरी सोच और दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है, जो पाठक को न केवल देश के वर्तमान से जोड़ता है, बल्कि भविष्य की दिशा के बारे में भी सोचने पर मजबूर करता है।

▶ काव्यात्मकता और गंभीरता का संतुलन

▶ गंभीरता और आस्थावान तरीके से शब्दों का चयन किया है

कविता में एक काव्यात्मकता और गंभीरता का संतुलन भी है। कवि ने अपनी चिंताओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए गंभीरता और आस्थावान तरीके से शब्दों का चयन किया है, लेकिन इसके साथ ही एक काव्यात्मक सुंदरता भी मौजूद है, जो कविता को आकर्षक और सोचने योग्य बनाती है। यह संतुलन कविता को सरल और गहरी, दोनों ही रूपों में प्रभावी बनाता है।

▶ ताल और लय

▶ विचारों का प्रवाह एक लयात्मक तरीके से चलता है

कविता की ताल और लय पर विचार किया गया है, जो इसके भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है। कविता में विचारों का प्रवाह एक लयात्मक तरीके से चलता है, जिससे पाठक को कविता के संदेश को आत्मसात करने में आसानी होती है। कविता का शिल्प इस तरह से निर्मित किया गया है कि यह पूरी कविता में निरंतरता और गहरी सोच की लहर पैदा करता है।

तेजेन्द्र शर्मा की कविता 'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' में संवेदना और शिल्प का अद्भुत मिश्रण है। कविता में देश के भविष्य के बारे में कवि की गहरी चिंताएँ, आशाएँ और उम्मीदें व्यक्त होती हैं। देश की सामाजिक असमानताओं, संस्कृति में बदलाव की आवश्यकता और भविष्य के निर्माण में सक्रिय भागीदारी की भावना कविता की मुख्य संवेदनाएँ हैं। वहीं, कविता का शिल्प उसकी सहजता, मुक्तता और प्रतीकों के प्रभावी प्रयोग के माध्यम से गहरी सोच और चेतना उत्पन्न करता है। यह कविता न केवल देश के भविष्य के बारे में विचार करने के लिए प्रेरित करती है, बल्कि समाज और व्यक्ति की भूमिका को लेकर भी एक गंभीर संदेश देती है।

▶ भविष्य के निर्माण में सक्रिय भागीदारी की भावना

'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' कविता में युगबोध की गहरी अभिव्यक्ति है, जो तेजेन्द्र शर्मा की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। यह कविता भारतीय समाज की वर्तमान स्थिति और भविष्य के संभावित बदलावों पर ध्यान केंद्रित करती है, जो समाज में हो रहे बदलावों, असमानताओं और विस्थापन को लेकर एक मज़बूत संदेश देती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य' कविता में युगबोध भारतीय समाज में हो रहे बदलावों और भविष्य के दृष्टिकोण को दर्शाती है। यह कविता सामाजिक असमानताओं, राजनीतिक संघर्षों और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के बारे में एक गहरा संदेश देती है। तेजेन्द्र शर्मा ने इस कविता के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी मानसिकता, राजनीति और सांस्कृतिक पहचान को सही दिशा में विकसित करें। कविता भविष्य में समतामूलक समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण की दिशा में एक प्रेरणा देती है, जो समाज के हर वर्ग को समान अधिकार और सम्मान देने का लक्ष्य रखे।

तेजेन्द्र शर्मा ने इस कविता के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी मानसिकता, राजनीति और सांस्कृतिक पहचान को सही दिशा में विकसित करें। कविता भविष्य में समतामूलक समाज और सशक्त राष्ट्र के निर्माण की दिशा में एक प्रेरणा देती है, जो समाज के हर वर्ग को समान अधिकार और सम्मान देने का लक्ष्य रखे।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. देश के भविष्य के प्रति कवि क्यों चिंतित है?
2. इस कविता में प्रकट आशावादी किरणों पर चर्चा कीजिए।
3. महंगाई किस प्रकार देश की भाविष्य को कुबड़ा बना देगा? चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय

8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार

9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रोफेसर प्रदीप श्रीधर

2. प्रवासी साहित्य दशा और दिशा - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org.

इकाई 6

देस की छाँव - सुधा ओम ढींगरा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्यकार सुधा ओम ढींगरा से परिचित हो जाता है
- 'देश की छाँव' कविता में अभिव्यक्त प्रवासी मानसिकता और संवेदना से परिचित हो जाता है

Background / पृष्ठभूमि

सुधा ओम ढींगरा की कविता 'देस की छाँव' प्रवासी साहित्य का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसमें देश से दूर रहने के बावजूद, कवि की अपनी मातृभूमि और उसकी संस्कृति के प्रति गहरी संवेदना और लगाव का प्रतीक मिलता है। यह कविता प्रवासी भारतीयों की मानसिक स्थिति, उनकी भावनाओं और मातृभूमि से संबंधों को सजीव रूप में प्रस्तुत करती है। कविता में, जहाँ एक ओर कवि ने अपनी संवेदनाओं को व्यक्त किया है, वहीं दूसरी ओर कविता का शिल्प भी अत्यधिक प्रभावी और संवेदनशील है, जो पाठकों को एक गहरी आंतरिक यात्रा पर ले जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मातृभूमि की याद, अपनी संस्कृति से लगाव

Discussion / चर्चा

देस की छाँव - सुधा ओम ढींगरा

साजन मोरे नैना भर-भर हैं आवें

देस की याद में छलक-छलक हैं जावें

याद आवे

वो मन्दिर

वो गुरुद्वारा

वो धर्मशाला

वो पुराना पीपल का पेड़

जिस तले बैठ

कच्ची अम्बियाँ थीं खाई

जेठ की भरी दुपहरी में

नंगे बदन

सँकरी गलियों में

दौड़ थी लगाई—

सावन की झड़ी में

तेज फ़ुहारों में

भीग-भीग कर

मन्दिर का दिया था जलाया

हाँ साजन,

मोरे नैना भर-भर हैं आवें

देस की याद में छलक-छलक हैं जावें .

तू काहे निर्मोही है हुआ

देस लौटने का नाम न लिया

गर्मी की चिलचिलाती धूप

सर्दी की ठिठुरन याद है आवे

यहाँ की हीटिंग-कूलिंग न भावे

यहाँ की चुप्पी भी खा जावे

तुझे भाये डालरॅ

मुझे भाये रौनक

तुझे भाये एकल परिवार

मुझे भाये संयुक्त परिवार

इन्ही मतभेदों में

लौट न पाई देस

रह गई परदेस

साजन,

तभी तो मोरे नैना भर-भर हैं आवें

देस की याद में छलक-छलक हैं जावें

छलक-छलक हैं जावें।

सारांश

'देस की छाँव' सुधा ओम ढींगरा द्वारा लिखित बहुत ही मार्मिक कविता है। इसमें लेखिका अपनी साजन से अपने देश लौटने की चाहत के बारे में कहती है। लेखिका कहती है कि साजन मेरा आँख भर आता है यानी कि उसे बहुत ही दुख होता है। अपने देश को याद करते हुए वह रोने लगती है। वह कहती है कि मुझे देश की बहुत याद आती है। देश में जो मंदिर है, गुरुद्वारा है, वहाँ की जो धर्मशाला है और जो पुराने पीपल का पेड़ है जिसके तले पर बैठकर कच्चे आम खाई थी, उस सब की याद में लेखिका रोती है। भरी दोपहरी में नंगे बदन पर संकरी गलियों से वे दौड़ लगाई करती थी। वे अपनी बचपन की खूबसूरत अनुभूतियों को याद करती हुई आज दुख का अनुभव कर रही है। गर्मी में भी नहीं सावन में भी भीग भीग कर मंदिर का दिया जलाने के लिए जाती थी और यह सब सोच कर उसकी आँख भर भर आती है और छलक छलक जाती है। और वह इस बात को अपनी साजन को समझाने की कोशिश करती है।

► देश की याद

अपनी साजन से वह पूछती है कि मेरा नैना भर भर आता है, अपने देश की याद में छलक छलक जाता है, और तुम ऐसा निर्मोही होकर क्यों खड़ा है? तुम्हें अपने देश लौटने का चाहत नहीं है क्या? तुम तो कभी भी देश लौटने का नाम भी नहीं लिया। वहाँ की गर्मी और चिलचिलाती धूप और वहाँ की ठिठुरती सर्दी सब मुझे बहुत भाते हैं। और यहाँ की जो हीटिंग कूलिंग से मुझे कोई वास्ता नहीं और मुझे यह सब पसंद ही नहीं आता।

► प्ररदेश की मौसम से भी परेशानी

कवियत्री आगे कहती है कि यहाँ की चुप्पी भी मुझे खा जाती है। तुम्हें यहाँ का डॉलर पसंद है लेकिन मुझे अपने देश की रौनक से मतलब है। तुम्हें एकल परिवार पसंद है यानी कि अणुकुटुंब पसंद है, लेकिन मुझे तो संयुक्त परिवार में रहना, सबके साथ मिलकर खु शियां मनाना अच्छा लगता है। इन्हीं मत भेदों के कारण में आज भी परदेश में रह गई है। मैं कभी भी अपने देश वापस नहीं जा पाई। अरे साजन तू मेरे नैनों में देखो, मेरी आँखों में देखो, यह भर भर आते हैं छलक छलक जाते हैं अपने देश की याद में मुझे रोना आता है।

► पारिवारिक समस्याएँ

संवेदना

► **मातृभूमि से गहरा लगाव**

कविता की संवेदना में मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा और लगाव व्यक्त किया गया

▶ मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा और लगाव

है। कवि देश की छाँव को अपनी सुरक्षा और सांत्वना के रूप में देखते हैं, जो उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से शांति प्रदान करती है। इस छाँव के माध्यम से कवि अपनी जड़ों से जुड़ाव महसूस करते हैं, भले ही वे भौतिक रूप से अपने देश से दूर हों। कविता के माध्यम से यह महसूस होता है कि चाहे व्यक्ति कहीं भी हो, उसकी असली शांति और सुरक्षा अपने देश की मिट्टी और संस्कृति में ही है।

▶ दूसरी जगह पर होने का अकेलापन

▶ मातृभूमि की छाँव और उसके सान्निध्य की कमी खलती है

कविता में एक तरफ अकेलेपन और दूरियों की संवेदना भी है। प्रवासी जीवन की कठिनाइयों को व्यक्त करते हुए कवि बताते हैं कि चाहे वे दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हों, अपनी मातृभूमि की छाँव और उसके सान्निध्य की कमी हमेशा खलती है। यह भावनात्मक ऊहापोह प्रवासी जीवन की वास्तविकता को बयां करता है, जहाँ एक ओर व्यक्ति अपनी नई ज़िंदगी में व्यस्त होता है, वहीं दूसरी ओर उसकी आत्मा अपनी जड़ों की तलाश करती रहती है।

▶ मातृभूमि की याद

▶ आत्मा हमेशा अपनी मातृभूमि से जुड़ी रहती है

कविता में मातृभूमि की याद का ज़िक्र बहुत भावुक रूप से किया गया है। यह यादें के वल भौतिक और प्राकृतिक तत्वों की नहीं होतीं, बल्कि उन जज़्बातों और अनुभवों की भी होती हैं, जो व्यक्ति को उस जगह के साथ जुड़ा हुआ महसूस कराती हैं। यह संवेदना उस गहरी भावनात्मक अवस्था को व्यक्त करती है, जिसमें व्यक्ति भले ही शारीरिक रूप से कहीं और हो, उसकी आत्मा हमेशा अपनी मातृभूमि से जुड़ी रहती है।

▶ समाज और संस्कृति की पहचान

▶ मातृभूमि की संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज़ और पहचान बेहद महत्वपूर्ण होती है

कविता में यह भी दर्शाया गया है कि किसी भी प्रवासी व्यक्ति के लिए उसकी मातृभूमि की संस्कृति, उसकी भाषा, रीति-रिवाज़ और पहचान बेहद महत्वपूर्ण होती है। ये चीज़ें उसकी सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा होती हैं, जो उसे किसी भी स्थान पर अकेला महसूस नहीं होने देतीं। यह सांस्कृतिक संवेदना और उस देश की छाँव के रूप में सुरक्षा महसूस करना एक गहरी भावनात्मक अनुभूति है।

शिल्प

▶ सरल और सहज भाषा

▶ शब्दों की सादगी और प्रवाह कविता को सहज बनाती है

कविता की भाषा अत्यंत सरल और सहज है, जिससे कवि की भावनाएँ प्रभावी ढंग से व्यक्त होती हैं। शब्दों की सादगी और प्रवाह कविता को सहज और मन को छूने वाला बनाती है। कवि ने अपने विचारों को बिना किसी अलंकार या जटिलता के सीधे रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक कविता से आसानी से जुड़ सकते हैं। यह शिल्प प्रवासी जीवन की संवेदनाओं को अधिक सजीव और प्रभावशाली बना देता है।

▶ मुक्तक रूप

▶ बिना किसी काव्यात्मक सीमाओं के व्यक्त किया गया है

'देस की छाँव' कविता में मुक्तक रूप का प्रयोग किया गया है। इस रूप में कविता के विचारों और संवेदनाओं को बिना किसी काव्यात्मक सीमाओं के व्यक्त किया गया

है। मुक्तक रूप कवि को अधिक स्वतंत्रता और लचीलापन देता है, जिससे वे अपनी भावनाओं और विचारों को बिना किसी अनुशासन के पूरी तरह से व्यक्त कर सकते हैं। यह रूप कविता की सहजता और प्रभाव को और बढ़ाता है।

- **प्रतीकों का प्रयोग**

▶ प्रतीकों का प्रभावी प्रयोग

कविता में प्रतीकों का प्रभावी प्रयोग किया गया है, जैसे 'देस की छाँव'। यह प्रतीक केवल भौतिक छाँव का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह मातृभूमि, संस्कृति और जड़ों से जुड़ाव की भावना को भी व्यक्त करता है। कवि ने छाँव के माध्यम से प्रवासी जीवन की तन्हाई और उसकी घरेलू ज़रूरतों को चित्रित किया है। यह प्रतीक कविता में एक गहरी भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रतीकात्मकता को जोड़ता है।

- **छोटे वाक्य और संतुलन**

▶ विचारों को स्पष्ट और तीव्र रूप से व्यक्त करते हैं

कविता में छोटे वाक्य और संवेदनाओं का संतुलन देखा जाता है। छोटे वाक्य अधिक प्रभावशाली होते हैं क्योंकि वे विचारों को स्पष्ट और तीव्र रूप से व्यक्त करते हैं। कविता में प्रत्येक शब्द का महत्व है और यह संतुलन कविता के शिल्प को मज़बूत करता है। यह संतुलन कविता के भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है और इसे पाठक तक पूरी ताकत से पहुँचाता है।

- **रूपक और मेटाफ़र का प्रयोग**

▶ भावनात्मक सुरक्षा और आत्मिक शांति के रूपक

कविता में रूपक और मेटाफ़र का उपयोग किया गया है, जो कविता को और अधिक गहरे अर्थों से भर देता है। 'देस की छाँव' जैसी अभिव्यक्तियाँ न केवल भौतिक छाँव का संदर्भ देती हैं, बल्कि यह भावनात्मक सुरक्षा और आत्मिक शांति के रूपक के तौर पर काम करती हैं। यह शिल्प कविता की गहराई और उसके संदेश को सशक्त बनाता है।

▶ संवेदना और शिल्प दोनों का समन्वय

सुधा ओम ढींगरा की कविता 'देस की छाँव' में संवेदना और शिल्प दोनों का समन्वय है, जो प्रवासी जीवन की गहरी संवेदनाओं को प्रभावी रूप से व्यक्त करता है। कविता में मातृभूमि से जुड़ी यादों, सांस्कृतिक पहचान और मानसिक तन्हाई की संवेदनाएँ हैं, जो पाठकों को एक गहरी भावनात्मक यात्रा पर ले जाती हैं। शिल्प के दृष्टिकोण से कविता सरल, सहज और प्रभावशाली है, जिसमें प्रतीकों, मुक्तक रूप और छोटे वाक्यों का सटीक प्रयोग किया गया है। इस कविता के माध्यम से सुधा ओम ढींगरा ने प्रवासी भारतीयों के दिलों में अपनी मातृभूमि के प्रति गहरे लगाव और उसके बिना जीने की मुसीबत को चित्रित किया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

सुधा ओम ढींगरा की कविता 'देस की छाँव' में संवेदना और शिल्प दोनों का समन्वय है, जो प्रवासी जीवन की गहरी संवेदनाओं को प्रभावी रूप से व्यक्त करता है। कविता में मातृभूमि से जुड़ी यादों, सांस्कृतिक पहचान और मानसिक तन्हाई की संवेदनाएँ हैं, जो पाठकों को गहरी भावनात्मक यात्रा पर ले जाती हैं। शिल्प के दृष्टिकोण से कविता सरल, सहज और प्रभावशाली है, जिसमें प्रतीकों, मुक्तक रूप और छोटे वाक्यों का सटीक प्रयोग किया गया है। इस कविता के माध्यम से सुधा ओम ढींगरा ने प्रवासी भारतीयों के दिलों में अपनी मातृभूमि के प्रति गहरे लगाव और उसके बिना जीने की मुश्किल स्थिति को चित्रित किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'देस की छाँव' कविता के आधार पर प्रवासी भारतीयों की मानसिकता पर विचार कीजिए।
2. 'देस की छाँव' कविता के भाव पक्ष और शिल्प पक्ष पर चर्चा कीजिए।
3. 'देस की छाँव' कविता की मार्मिकता पर चर्चा चलाईए।
4. लेखिका देश वापस क्यों नहीं जा पाई ?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं. रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी प्रवासी साहित्य - कमल किशोर गोयनका

2. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 7

खुशबू वतन की - देवी नागरानी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्यकार देवी नागरानी का परिचय प्राप्त कर लेता है
- 'खुशबू वतन की' कविता में निहित संवेदना, शिल्प से अवगत हो जाता है

Background / पृष्ठभूमि

देवी नागरानी की कविता 'खुशबू वतन की' प्रवासी साहित्य का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसमें कवि ने मातृभूमि और देश से जुड़ी गहरी संवेदनाओं और भावनाओं को व्यक्त किया है। यह कविता न केवल एक प्रवासी भारतीय के दिल की आवाज़ है, बल्कि यह भारत की मिट्टी, संस्कृति और अपनी जड़ों के प्रति उस गहरे जुड़ाव का प्रतीक है जो प्रवासी भारतीय अनुभव करते हैं। कविता के माध्यम से, देवी नागरानी ने उन भावनाओं का बयान किया है, जो एक व्यक्ति को अपनी मातृभूमि से दूर रहने पर महसूस होती हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासी मानसिकता, भारतीय संस्कृति से जुड़ाव, मातृभूमि से जुड़ी संवेदना

Discussion / चर्चा

खु शबू वतन की - देवी नागरानी

बादे-सहर वतन की, चंदन सी आ रही है

यादों के पालने में मुझको झुला रही है।

ये जान कर भी अरमां होते नहीं हैं पूरे

पलकों पे ख़्वाब 'देवी' फिर भी सजा रही है।

कोई कमी नहीं है हमको मिला है सब कुछ

दूरी मगर वतन से मुझको खला रही है।

पत्थर का शहर है ये, पत्थर के आदमी भी

बस ख़ामशी ये रिश्ते, सब से निभा रही है।

शादाब मेरे दिल में इक याद है वतन की

तेरी भी याद उसमें, घुलमिल के आ रही है।

'देवी' महक है इसमें, मिट्टी की सौंधी सौंधी

मेरे वतन की खुशबू, के सर लुटा रही है।

सारांश

देवी नागरानी द्वारा रचित खु शबू वतन की नामक प्रवासी कविता बहुत छोटी एवं सुंदर कविता है। इसमें स्वदेश की याद एवं महक कवियत्री को मोहित करती है। कवियत्री यहाँ कहती है कि मेरे वतन की खु शबू जो है चंदन की सी खु शबू है। और चंदन की सी खु शबू अब उसे महसूस होती है और यह खु शबू से यादों की पालने में वह झूल रही है। परदेस की सारी सुख सुविधाओं को पाकर भी उसके अरमान अब भी जाग रहे हैं यानी कि उसके पलकों में ख्वाब रूपी देवी फिर से अपने देश के सपने सजाती है। लेखिका कहती है कि यहाँ पर हमें कोई कमी नहीं है। अर्थात परदेश में उसे किसी भी प्रकार की कमी नहीं खलती है। जिन सुख सुविधाओं के लिए वह परदेश में आई है वह सब उसे प्राप्त हुई है और उसकी जिंदगी में खु शहाली ही खु शहाली है। फिर भी वतन से दूर रहकर उसका मन हमेशा रोने को है। देश से बिछड़ने का दर्द उसे रुलाने पर तुली हुई है।

▶ स्वदेश लेखिका को मोहित करती है

लेखिका परदेश के बारे में भी कहती है। जिस देश में वह रह रही है यह पत्थर का देश है। यहाँ के लोग भी पत्थर के ही है। उनमें कोई संवेदना नहीं है। अपने देश की सी नरम एवं मासूम चेहरे यहाँ नहीं दिखते। यहाँ सबसे खामोशी के रिश्ते हैं अर्थात यहाँ पर कोई भी आपस में बात नहीं करते। यही खामोशी के रिश्ते एक दूसरे के साथ निभा रहे हैं। लेखिका आगे कहती है कि अपने देश की अपने वतन की याद के साथ-साथ मुझे तुम्हारी याद भी आ रही है। तुम्हारा याद भी मेरे देश की यादों के साथ घुल मिल गया है। आगे कवियत्री अपनी देश की मिट्टी की सौंधी गंध के बारे में कह रही है वह कहती है कि, देवी महक है अपनी मिट्टी में, अपनी वतन की खु शबू के सर से भी बहत्तर है। और यह सब लेखिका को मोहित करती है।

परदेश की असंवेदनशीलता

संवेदना

▶ मातृभूमि की याद और जुड़ाव

कविता की संवेदना में मातृभूमि से गहरा जुड़ाव और उसकी यादों का ज़िक्र है। कविता का केंद्रीय विचार यह है कि भले ही व्यक्ति अपने वतन से दूर चला जाता है, लेकिन उसकी यादें और वहाँ की खुशबू हमेशा उसके दिल और आत्मा में बसी रहती

▶ प्रवासी जीवन की मानसिक और भावनात्मक जटिलताओं को उद्घाटित करती है

हैं। 'खुशबू वतन की' में वतन की खुशबू के प्रतीक के माध्यम से कवि यह व्यक्त करते हैं कि मातृभूमि का अनुभव एक ऐसे ताज़े अहसास की तरह होता है, जो कभी मिटता नहीं है, चाहे आप दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हों। यह संवेदना प्रवासी जीवन की मानसिक और भावनात्मक जटिलताओं को उद्घाटित करती है।

▶ सांस्कृतिक और भौतिक छाया की खोज

▶ सांस्कृतिक जुड़ाव प्रवासी की असल पहचान बना रहता है

कविता में संस्कृति और भौतिकता की एक अव्यक्त अनुभूति तलाश की जाती है। कवि वतन की खुशबू को केवल एक भौतिक इंद्रिय के रूप में नहीं, बल्कि उस संस्कृति और पहचान की तरह देखते हैं, जिसे प्रवासी व्यक्ति हर रोज अपनी ज़िंदगी में महसूस करता है। यह छाया हमेशा साथ होती है और कवि इसे अपने जीवन के हर हिस्से में तलाशते हैं। यह सांस्कृतिक जुड़ाव किसी भी दूसरे देश में होने के बावजूद एक प्रवासी की असल पहचान बना रहता है।

▶ प्रवासी अनुभव की तन्हाई और पीड़ा

▶ प्रवासी जीवन की यथार्थता

कविता में प्रवासी अनुभव की तन्हाई और पीड़ा की भी गहरी अभिव्यक्ति है। भले ही व्यक्ति नए देश में आकर कुछ हद तक अपनी ज़िंदगी बना लेता है, परंतु उस नए देश में अपनी मातृभूमि की यादें, उसकी खुशबू और वहाँ की पहचान हमेशा उसके साथ होती है। यह पीड़ा और खोने का अहसास कविता में अभिव्यक्त होता है, जो एक भावनात्मक तनाव पैदा करता है। यह कविता प्रवासी जीवन की यथार्थता को सामने लाता है, जिसमें एक अनकहा दुःख और अकेलापन छिपा होता है।

▶ वतन की खुशबू और आत्मीयता

▶ वतन की खुशबू देश से जुड़ी यादों का रूपक है

कविता में वतन की खुशबू को आत्मीयता और सांस्कृतिक जुड़ाव का प्रतीक माना गया है। यह खुशबू केवल एक गंध नहीं है, बल्कि यह अपनी संस्कृति, सभ्यता और देश से जुड़ी यादों का रूपक है, जो प्रवासी व्यक्ति के दिल में हमेशा जीवित रहती है। कवि ने इसे एक भावनात्मक दृष्टिकोण से व्यक्त किया है। कविता की यह संवेदना है कि वतन की खुशबू हमेशा अपने साथ रहती है, वह व्यक्ति को निरंतर सांत्वना देती है, भले वह कहीं भी क्यों न हो।

शिल्प

▶ सरल और भावुक भाषा

▶ शब्दों की सादगी और प्रवाह कविता को सहज और प्रभावशाली बनाती ह

देवी नागरानी की कविता की भाषा सरल, भावुक और सजीव है। वे सीधे शब्दों में अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं, ताकि पाठक को कविता से गहरा जुड़ाव हो सके। शब्दों की सादगी और प्रवाह कविता को सहज और प्रभावशाली बनाती है। यही सरलता कविता को व्यापक पाठक वर्ग के लिए सुलभ बनाती है।

▶ प्रतीकों और रूपकों का प्रयोग

कविता में प्रतीकों और रूपकों का प्रयोग कुशलता से किया गया है। 'वतन की खुशबू' एक केंद्रीय प्रतीक है, जो केवल गंध का संकेत नहीं है, बल्कि यह मातृभूमि

► 'वतन की खुशबू' एक केंद्रीय प्रतीक है

की उन भावनाओं और यादों का प्रतीक है जो प्रवासी भारतीय के दिल में हमेशा मौजूद रहती हैं। यह रूपक कविता को एक गहरी सांस्कृतिक और भावनात्मक लय प्रदान करता है और पाठक को मातृभूमि के प्रति एक मज़बूत भावनात्मक जुड़ाव महसूस कराता है।

► **स्वाभाविक प्रवाह**

► कविता का शिल्प स्वाभाविक और लयबद्ध है

कविता का शिल्प स्वाभाविक और लयबद्ध है, जिसमें शब्दों का प्रवाह बहुत सरलता से चलता है। कविता में कोई कठोरता नहीं है, बल्कि यह स्वाभाविक रूप से कविता के विचारों और संवेदनाओं को व्यक्त करती है। यह संगीतात्मकता कविता को एक प्रवाहमयी और गहरी प्रभावशीलता देती है, जो पाठक को पूरी तरह से कवि की भावनाओं में डुबो देती है।

► **सहजता**

► मातृभूमि से जुड़े रहने की भावना

कविता में एक आशापूर्ण लय है, जो प्रवासी जीवन के दुःख और पीड़ा के बावजूद उम्मीद और सांत्वना का संकेत देती है। 'वतन की खुशबू' इस उम्मीद का प्रतीक बन जाती है, जो प्रवासी व्यक्तियों को हमेशा प्रेरित करती है और उन्हें अपनी मातृभूमि से जुड़े रहने की भावना देती है। शिल्प के स्तर पर यह कविता पाठक को उम्मीद और विश्वास की ओर प्रेरित करती है।

► **गंभीर और भावनात्मक संतुलन**

देवी नागरानी ने अपनी कविता में गंभीरता और भावनात्मक संतुलन बनाए रखा है। यह संतुलन कविता के प्रभाव को गहरा करता है और उसकी संवेदनाओं को सटीक रूप से दर्शाता है। कवि की भावनाएँ काव्यात्मक रूप से उभरी हुई हैं, जो पूरे पाठक वर्ग को कवि के साथ मानसिक और भावनात्मक रूप से जोड़ देती हैं।

► वतन के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना

देवी नागरानी की कविता 'खुशबू वतन की' एक गहरी संवेदना और शिल्प का सुंदर मिश्रण है। कविता में मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा, यादों का अहसास और प्रवासी जीवन की पीड़ा और तन्हाई को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कविता का शिल्प सरल और प्रभावी है, जिसमें प्रतीकों का सशक्त प्रयोग किया गया है। यह कविता मातृभूमि से जुड़ी गहरी भावनाओं को व्यक्त करती है और प्रवासी भारतीयों के दिल में उनके वतन के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को जीवित रखती है। यह कविता न केवल एक प्रवासी व्यक्ति की संवेदनाओं को व्यक्त करती है, बल्कि यह सभी पाठकों को अपनी मातृभूमि से जुड़ने और उसे समझने की प्रेरणा देती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

देवी नागरानी की कविता 'खुशबू वतन की' एक गहरी संवेदना और शिल्प का सुंदर मिश्रण है। कविता में मातृभूमि के प्रति गहरी श्रद्धा, यादों का अहसास और प्रवासी जीवन की पीड़ा और तन्हाई को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कविता का शिल्प सरल और प्रभावी है, जिसमें प्रतीकों का सशक्त प्रयोग किया गया है। यह कविता मातृभूमि से जुड़ी गहरी भावनाओं को व्यक्त करती है और प्रवासी भारतीयों के दिल में उनके वतन के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को जीवित करती है। यह कविता न केवल एक प्रवासी व्यक्ति की संवेदनाओं को व्यक्त करती है, बल्कि यह सभी पाठकों को अपनी मातृभूमि से जुड़ने और उसे समझने की प्रेरणा देती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. खुशबू वतन की कविता में अभिव्यक्त प्रवासी भारतीय के मन की पीड़ाओं को व्यक्त कीजिए।
2. खुशबू वतन की कविता की संवेदना और शिल्प पर विचार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा
10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत
11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा
12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी प्रवासी साहित्य - कमल किशोर गोयनका

2. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 8

वह अनजान आप्रवासी - अभिमन्यु अनत

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त करता है
- अभिमन्युअनत के साहित्यिक योगदान से परिचित हो जाता है
- 'वह अनजान आप्रवासी' कविता के भावगत विशेषताओं से परिचित हो जाता है
- कविता में अभिव्यक्त प्रवासी मानसिकता से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत द्वारा रचित हिन्दी कविता है 'वह अनजान आप्रवासी', जिसमें कवि ने विदेश में काम करने वाले गिरमिटिया मज़दूरों के जीवन संघर्ष को प्रकाश में लाने की कोशिश की है। जीविकोपार्जन के लिए मज़दूर प्रवासी बनते हैं और उनका जीवन अनेक संघर्षों से गुजरते हैं। इसका प्रभावपूर्ण चित्रण हमें इस कविता में देखने को मिलता है। प्रवासी होने का दर्द इस कविता के ज़रिए कवि सामने लाते हैं। लेखक एवं उनके परिवारवाले खुद प्रवासी जीवन की त्रासदियों को झेल चुके हैं। इसलिए भी उनका इस विषय में मार्मिक प्रस्तुतीकरण सहज ही स्वाभाविक है। इस तरह यह कविता जलते जीवन अनुभवों का दस्तावेज़ के रूप में पाठकों के सामने आते है। भाव एवं शिल्प की दृष्टि से अनगिनत विशेषताओं से युक्त यह कविता प्रवासी मानसिकता, संवेदना आदि को समझने के दृष्टिकोण से पढ़ने योग्य है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गिरमिटिया मज़दूर, जीवन संघर्ष, प्रवासी जीवन, गृहातुरता

Discussion / चर्चा

वह अनजान आप्रवासी - अभिमन्यु अनत

आज अचानक हवा के झोंकों से

झरझरा कर झरते देखा

गुलमोहर की पंखु ड़ियों को

उन्हें खामोशी में झुलसते छटपटाते देखा

धरती पर धधक रहे अंगारों पर

फिर याद आ गया अचानक

वह अनलिखा इतिहास मुझे

इतिहास की राख में छुपी

गन्ने के खेतों की वे आहें याद आ गयी

जिन्हें सुना बार-बार द्वीप का

प्रहरी मुड़िया पहाड़ दहल कर काँपा

बार-बार डरता था वह भीगे कोड़ों की बौछारों से

इसलिए मौन साधे रहा

आज जहाँ खामोशी चीत्कारती है

हरियालियों के बीच की तपती दोपहरी में

आज अचानक फिर याद आ गये

मजदूरों के माथे के माटी के वे टीके

नंगी छाती पर चमकती बूँदें

और धधकते सूरज के ताप से

गुलमोहर की पंखु ड़ियाँ ही जैसे

उनके कोमल सपने भी हुए थे

राख आज अचानक

हिंद महासागर की लहरों से तैर कर आयी

गंगा की स्वर-लहरी को सुन

फिर याद आ गया मुझे वह काला इतिहास

उसका बिसारा हुआ वह अनजान आप्रवासी देश के

अंधे इतिहास ने न तो उसे देखा था

न तो गूँगे इतिहास ने कभी सुनाई उसकी पूरी कहानी हमें

न ही बहरे इतिहास ने सुना था

उसके चीत्कारों को

जिसकी इस माटी पर बही थी

पहली बूँद पसीने की

जिसने चट्टानों के बीच हरियाली उगायी थी

नंगी पीठों पर सह कर बाँसों की

बौछार बहा-बहाकर लाल पसीना

वह पहला गिरमिटिया इस माटी का बेटा

जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना।

सारांश

प्रवासी साहित्य के सशक्त रचनाकार है अभिमन्युअनत। उनकी बहुत चर्चित एवं प्रवासी पूर्वजों की इतिहास पर प्रकाश डालने वाली कविता है वह अनजान आप्रवासी। इस कविता की शुरुआत में कवि कहते हैं कि एक दिन अचानक जब एक गुलमोहर की पंखु ड़ियों को हवा के झोंकों से झरझरा कर झरते हुए देखने पर और खामोशी से उन्हें धरती पर धधक रही अंगारों पर झुलसते छटपटाते देखने पर उन्हें अपनी अनलिखा इतिहास पर झुलस्ती हुई आग में कठिनाइयों को झेलने वाले अपने पूर्वजों की यानी की प्रथम प्रवासियों की याद आ गई। इतिहास की राख में छुपी हुई गन्ने की खेतों से निकलने वाली आहों की याद कवि को आ गया। प्रवासी पूर्वज जो है गिरमिटिया मजदूरों के रूप में मॉरीशस की प्रदेशों में आए थे। वहाँ पर उन्हें कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था। इन्हीं बातों पर कवि इस कविता के द्वारा प्रकाश डालने की प्रयास करते हैं।

▶ पूर्वजों की याद

इन मज़दूरों का अंग्रेजों ने बहुत ही अधिक शोषण किया था। वे भीगे कोड़ों की बौछारों से डरता था और इसलिए वह मौन साधे रहे और खामोशी से चीत्कारते रहा। हरियालियों के बीच में तपती गर्मियों में, भरे दोपहरी में वे काम करते रहे। उन मजदूरों के माथे पर माटी के टीके थे और उनकी नंगी छातियों पर चमकते बूंदें दिखाई देते थे। पंखु ड़ियों को अंगारों पर गिरते देख कर कवि को गिरमिटिया मजदूरों को एक बार फिर याद इसलिए आ गया क्योंकि उन मजदूरों का सपना भी इन्हीं गुलमोहर की पंखु ड़ियों की तरह धधकते सूरज के ताप से राख हो गए।

▶ मज़दूरा की कठिनाइयों का चित्र

आगे कवि कहता है कि हिंद महासागर की लहरों में से तैरकर आई हुई गंगा की स्वर लहरी को सुनकर कवि को फिर से वह काला इतिहास याद आने लगा। इस देश के अंधे इतिहास ने उन अनजाना प्रवासियों को कभी देखा ना था, ना ही इस गूंगी इतिहास ने उनकी पूरी कहानी को कभी सुना था। और इस बहरी इतिहास ने उनकी

▶ इतिहास ने इन मज़दरों को देखा ही नही

चीत्कारों को नहीं सुना था। इस इतिहास ने इन चट्टानों के बीच हरियाली उगाने वालों की पसीने की पहली बूंद को नहीं देखा था। इस माटी पर बही हुई उनकी लाल पसीने की तरफ यह इतिहास आँख मूँद लिया था। अपनी नंगी पीठों पर बाँसों की बौछार सह कर अपनी खून को पसीना करके उन्हें बहाकर इन लोगों ने इस चट्टानों के बीच में हरियाली उगाई थी।

▶ अपनापन का भाव

अंतिम पंक्तियों में कवि कहता है कि वह पहला गिरमिटिया मज़दूर जो इस माटी का बेटा है वह मेरा भी अपना है और तेरा भी अपना है। अर्थात कवि अपनी पूर्वजों के बारे में यहाँ कहता है, गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में यहाँ पर आकर खून पसीना बहाकर जिन्होंने हरियाली उगाई वह हमारा अपना है अर्थात भारतीय है।

शिल्पगत विशेषताएँ

▶ 'वह अनजान आप्रवासी' अत्यंत संवेदनशील और विचारोत्तेजक रचना है

अभिमन्यु अनत की कविता 'वह अनजान आप्रवासी' प्रवासी अनुभवों और पहचान के प्रश्नों को उठाने वाली एक अत्यंत संवेदनशील और विचारोत्तेजक रचना है। इसकी शिल्पगत विशेषताएँ इसे एक विशिष्ट काव्य रूप में प्रस्तुत करती हैं:

1. **मुक्त छंद की शैली**

यह कविता मुक्त छंद में लिखी गई है, जिसमें कोई निश्चित छंद, मात्राएँ या तुकांत योजना नहीं है। यह शैली आधुनिक कविता की पहचान है और कवि को अपने विचारों को खुलकर अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता देती है।

2. **प्रवासी चेतना का बिंबात्मक चित्रण**

कविता में प्रवासी जीवन की उखड़न, अजनबीपन और पहचान के संकट को प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से गहराई से चित्रित किया गया है। 'अनजान प्रवासी' स्वयं में एक प्रतीक बन जाता है - उस व्यक्ति का जो अपने ही इतिहास और समाज में विस्थापित हो गया है।

3. **आत्मचिंतन और संवेदनशीलता**

शिल्प की दृष्टि से कविता में गंभीर आत्ममंथन है। कविता का स्वर बेहद संवेदनशील, विवेकशील और आत्मावलोकनात्मक है, जो इसे भावनात्मक गहराई प्रदान करता है।

4. **संवादात्मक शैली**

▶ कहीं-कहीं स्वगत (monologue) शैली

कविता में कहीं-कहीं स्वगत (monologue) शैली झलकती है, जिसमें कवि जैसे स्वयं से या अपने जैसे किसी और प्रवासी से संवाद करता हुआ प्रतीत होता है।

5. **सांस्कृतिक एवं भाषिक विविधता का प्रयोग**

कवि मॉरीशस के हैं और कविता में प्रवासी जीवन के बहुसांस्कृतिक अनुभवों की झलक मिलती है। शिल्प में यह विविधता कविता को अधिक व्यापक और वैश्विक

परिप्रेक्ष्य देती है।

6. **भाषा की सहजता और प्रतीकात्मकता**

कविता की भाषा सहज, प्रवाही और प्रतीकात्मक है। शब्दों का चयन सटीक है, जिससे प्रवासी के मन में चल रहे द्वंद्व और अस्मिता की खोज स्पष्ट हो जाती है।

7. **स्मृति और इतिहास का अंतर्पाठ**

कविता में स्मृतियों, अतीत और सांस्कृतिक जड़ों की खोज एक महत्वपूर्ण शिल्पगत तत्व है। कविता एक स्तर पर इतिहास और वर्तमान के संवाद जैसी बन जाती है।

संवेदना

▶ खोती हुई जड़ें

1. **जड़ों से कटने का दुःख**

प्रवासी व्यक्ति को अपनी मातृभूमि की याद सताती है। वह अपनी संस्कृति, भाषा और पहचान को पीछे छोड़ आया है और नई भूमि में उसे अपनी जड़ें खोती हुई प्रतीत होती हैं।

▶ अजनबीपन

2. **पहचान का संकट**

वह नई भूमि में अजनबी है। वहाँ उसका अतीत, उसकी पहचान और उसका वजूद सब कुछ अजनबी लगता है। उसे समाज में अपनापन महसूस नहीं होता।

▶ गहरी बेचैनी और द्वंद्व

3. **अकेलापन और आत्मसंघर्ष**

प्रवासी व्यक्ति भीतर से अकेलापन महसूस करता है। वह बाहर से भले सामान्य दिखे, पर भीतर गहरी बेचैनी और द्वंद्व होता है।

4. **दो संस्कृतियों के बीच की उलझन**

प्रवासी व्यक्ति दो दुनियाओं के बीच फंसा होता है - एक ओर अपनी मातृभूमि की परंपराएँ और मूल्य और दूसरी ओर नई भूमि की आधुनिकता और अलग संस्कार।

5. **आत्ममंथन और अस्मिता की खोज**

वह बार-बार खुद से सवाल करता है - 'मैं कौन हूँ?', 'मैं कहाँ से आया और कहाँ जा रहा हूँ?'। यह प्रवासी की आत्मा की पुकार होती है।

कविता 'वह अनजान आप्रवासी' में प्रवासी मानसिकता सिर्फ भौगोलिक दूरी की नहीं, बल्कि भावनात्मक, सांस्कृतिक और मानसिक दूरी की भी अभिव्यक्ति है। यह उस व्यक्ति की कहानी है जो दो दुनियाओं के बीच झूल रहा है- न पूरी तरह वहाँ, न पूरी तरह यहाँ।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यु अनत द्वारा रचित कविता वह अनजान आप्रवासी में प्रवासी मानव की पीड़ा और उनकी यातनाओं का चित्रण है। इसमें मानवता की पीड़ा, अस्मिता की खोज और संस्कृति का संघर्ष देख सकते हैं। प्रवासी जीवन आम लोगों के लिए उतना सुखदायी नहीं है। अपनी वतन की यादें, परिवार की सामीप्यता की चाह, अपनापन की खोज आदि इनकी मानसिक स्थिति को बिखर देते ही है और साथ ही तन तोड़ मेहनत भी करना पड़ता है और पर्याप्त तनख्वाह भी नहीं मिलता। इस तरह प्रवासी जीवन अनेकों संघर्षों की गाथा बनकर रह जाती है। कवि इन्हीं बातों की ओर संकेत करते हैं। कोई भी व्यक्ति अपने मर्ज़ी से प्रवास के लिए नहीं जाता। यह उनकी मजबूरी है। लेकिन प्रवास में जाते वक्त उनकी कई सपनें होते है। इन सपनों एवं उम्मीदों के बलबूते पर ही वह यह सारी कठिनाईयाँ झेल जाते हैं। लेकिन प्रवास जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी ही यही है कि उनकी यह सपने धीरे धीरे टूट जाते है। इन्हीं सब बातों को कवि इस कविता के द्वारा व्यक्त करते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. वह अनजान आप्रवासी में अभिव्यक्त प्रवासी मानसिकता व्यक्त कीजिए।
2. वह अनजान आप्रवासी में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ पर चर्चा कीजिए।
3. वह अनजान आप्रवासी कविता की भाव और शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी प्रवासी साहित्य - कमल किशोर गोयनका

2. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 9

अस्त-व्यस्त में - मोहन राणा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी कवि मोहन राणा के काव्य संग्रहों से परिचित हो जाता है
- 'अस्त व्यस्त में' कविता की संवेदना से अवगत हो जाता है
- कविता की शिल्पगत विशेषताएँ समझ लेता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासी कवि मोहन राणा द्वारा रचित कविता प्रवासी मानसिकता का चित्रण करती हैं। आदमी की अस्त व्यस्त मानसिकता, अंतर्संघर्ष आदि कविता में अभिव्यक्त हुए हैं। आधुनिक जीवन की व्यस्तता, आत्मबोध और अस्तित्व की चिंता इस कविता का मुख्य विषय हैं। आदमी बहुत कुछ बटोरकर रखता है। वह कल के लिए जीता है। आनेवाले किसी संकट समय के लिए वे आज ही तैयारी में लगा रहता है। उसे लगता है कि कल को सुरक्षित करना है। लेकिन इस दौड़ में वह आज को जीना भूल जाता है और आज जब कल में परिवर्तित हो जाता है और कल का कुछ पता नहीं रहता बीते कल को देखकर पश्चताता है। कुछ हासिल करने की आड़ में वह एक जगह से दूसरी जगह जाता रहता है। और आसानी से पुरानी जगहों को छोड़ देता है। इस कविता में कवि मोहन राणा भी इसी बात की ओर संकेत करता है। अस्त व्यस्त में लिखी गई कविता को वह निहारता है। वह कहता है कि इसमें शायद पुराणों की गंध हो सकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

प्रवासी कविता, आधुनिक जीवन की व्यस्तता, आत्म संघर्ष, आत्म बोध, अस्तित्व की चिंता

Discussion / चर्चा

अस्तव्यस्त में - मोहन राणा

इन डिब्बों में एक लंबा अंतराल बंद है

अगर दिन की रोशनी न पहुँची इन तक

सोया रहेगा अतीत निश्चल पुरानों की गंध में

मनुष्य का मुखौटा पहने चींटी

की तरह जमा करता रहा अब तक मैं दिन-रात

किसी बुरे मौसम की आशंका में

मैं समय को बचा कर रखना चाहता था सुरक्षित चींजे बटोरते हुए

पर केवल चीजें ही बचीं साथ गत्ते में डिब्बों में

बंद कर उन्हें रखना है परछत्ती में

और भूल जाना कहीं

जगह ही नहीं बची याद रखने के लिए भी कुछ

यह सातवाँ घर है मेरा दस साल में

यह मेरा सातवाँ पता है दर साल में

मैं छोड़ आया हूँ खूद को सात बार दस साल में

घिरे हुए आकाश में कहीं

अकेली समुद्री चिड़िया की आवाज़

नये घर को जाती पुराने को लौटती

पैदल अपने पुरखों के रास्ते को नापती

घर बदलने की थकान

ध्यान न रहा कि महीना बीत गया पूरा

जाने कब लिखी यह कविता किसी अस्तव्यस्त में !

इसे फूल की तरह सूँघो इसमें पुरानों की गंध है

सारांश

▶ मनुष्य यादों की जगह चीजों को समेटता है

प्रमुख प्रवासी साहित्यकार मोहन राणा ने अपने 'अस्तव्यस्त में' नामक कविता में जीवन की अनिश्चितता और समय के बीत जाने की गति को दर्शाते हैं। कवि अपने जीवन के अनुभवों को डिब्बों में बँध करके रखते हैं। दरअसल कवि बस चीजों को ही बँध किए हैं और उन्होंने इतना सारा समान इकट्ठा किया है कि यादों के लिए कोई जगह ही नहीं बचा। सामानों को बँध करके रखा हुआ डिब्बों को देखकर कवि कहता है कि इन डिब्बों में बड़ा अंतराल बँध हैं। अगर दिन की रोशनी इन तक नहीं पहूँची होती तो अतीत निश्चल इसी तरह बँध रहता पुरानों के गंध लेकर। मनुष्य आजकल चींटी का मुखौटा पहनकर सामान इकट्ठा करता रहता है। उसे आनेवाले किसी बुरे दिन का डर सताता रहता है।

▶ पुरानी चीजों से अतीत का गंध निकलता है

कवि निरंतर घर बदलता रहा। जीव की आपाधापी में एक जगह से दूसरे जगह भागता रहा। और कहीं से भी किसी भी प्रकार का याद अपने साथ नहीं ले आया। वह बस चीजों को साथ ले आया। गत दस वर्षों में कवि सात घर बदले, सात पते बदले लेकिन कवि कोई भी याद अपने साथ नहीं ले गया। और आज कवि को इस बात का दुख है। आज कवि के पास बस चीजें ही है। और कुछ भी नहीं। कवि को लगता है कि इन सात जगहों में कवि खु द को छोड़ आया है। कवि नए घर में जाता और पुराने में लौट आता। और इन भाग दौड़ के बीच में कभी कवि ने एक कविता रच डाली। और आज उस कविता को सूंघकर देखने पर उसमें से पुरानों का गंध निकलता हुआ महसूस होता है।

संवेदना

1. **आत्मविस्थापन की पीड़ा**

कविता में यह भाव झलकता है कि प्रवासी व्यक्ति न तो पूरी तरह उस नई जगह का हो पाता है और न ही अपने पुराने स्थान से जुड़ा रह पाता है। यह दो दुनियाओं के बीच लटका हुआ अस्तित्व दर्शाता है।

2. **स्मृति और पहचान की तलाश**

प्रवासी जीवन में व्यक्ति अपनी पहचान को लेकर संघर्ष करता है। कविता में स्मृतियाँ बार-बार उभरती हैं - पुराने देश, लोग, जगहें - जिनसे अब केवल मानसिक संबंध रह गया है।

3. **आत्मसंवाद और अकेलापन**

कविता में कवि का आत्मसंवाद दिखाता है कि प्रवासी जीवन में एक अनकहा अकेलापन है। वह बाहरी दुनिया में तो 'अस्त-व्यस्त' है, लेकिन भीतर गहरी शांति और समझ की तलाश में है।

4. **भाषा और संस्कृति से दूरी**

प्रवासी जीवन में अपनी भाषा, संस्कृति और परिवेश से जो दूरी बन जाती है, वह एक गहरी अस्मिता का संकट खड़ा करती है, जो कविता की पंक्तियों में परोक्ष रूप से उभरता है।

कविता में अभिव्यक्त गृहातुरता और प्रवासी जीवन की विसंगतियां

- घर के प्रति लगाव और उसकी याद

अस्त-व्यस्त कविता में गृहातुरता (घर के प्रति लगाव और उसकी याद) और प्रवासी जीवन की विसंगतियाँ (असमानताएँ, टकराव और मानसिक उलझन) गहराई से दर्शाई गई हैं। यह कविता एक ऐसे व्यक्ति की भावनाओं को व्यक्त करती है जो अपने घर-गाँव से दूर किसी अनजान, अपरिचित जगह पर रह रहा है।

1. **गृहातुरता (घर की याद)**

कविता में यह भावना बार-बार उभरती है कि वक्ता अपने पुराने, परिचित और आत्मीय परिवेश को बहुत याद करता है।

- वक्ता अपने पुराने, परिचित और आत्मीय परिवेश को बहुत याद करता है

गाँव की सादगी, अपनापन, रिश्तों की गर्माहट और प्राकृतिक सौंदर्य की यादें उसे बार-बार लौटने को मजबूर करती हैं।

कविता के भावों में यह साफ झलकता है कि भले ही वह शारीरिक रूप से किसी और शहर में रह रहा है, मानसिक रूप से वह अपने 'घर' में ही उलझा हुआ है।

2. **प्रवासी जीवन की विसंगतियाँ**

प्रवासी जीवन में व्यक्ति एक अस्थायी, कृत्रिम और व्यस्त माहौल में जीता है। वहाँ अपनापन नहीं होता, हर कोई व्यस्त होता है।

व्यक्ति को अपनी पहचान, संस्कृति और भाषा को बचाए रखने की जद्दोजहद करनी पड़ती है।

- व्यक्ति एक अस्थायी, कृत्रिम और व्यस्त माहौल में जीता है

वहाँ की जिंदगी अस्त-व्यस्त है - न तो स्थायित्व है, न ही सच्चे रिश्ते। यह तनाव और मानसिक उलझन का कारण बनती है।

'अस्त-व्यस्त' कविता प्रवासी जीवन के उस अनुभव को उजागर करती है जिसमें व्यक्ति एक तरफ अपने 'घर' की मीठी यादों में डूबा रहता है और दूसरी तरफ वह अपने वर्तमान अस्त-व्यस्त जीवन के बोझ तले दबा होता है। यह द्वंद्व ही कविता का मूल भाव है।

शिल्पगत विशेषताएँ

मोहन राणा की कविता 'अस्त-व्यस्त में' समकालीन हिन्दी कविता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, अस्तित्व की अनिश्चितताओं और आंतरिक उलझनों को बेहद संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया गया है। इस कविता की शिल्पगत विशेषताएँ इसे एक अलग पहचान देती हैं:

1. **मुक्त छंद का प्रयोग**

कविता में मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है, जिससे कवि को भावों की गहराई और प्रवाह को बिना किसी बंधन के व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलती है।

2. **सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता**

▶ आंतरिक उलझन और मानसिक बिखराव का भी प्रतीक

मोहन राणा की कविता में अस्त-व्यस्त के वल बाहरी अव्यवस्था नहीं, बल्कि आंतरिक उलझन और मानसिक बिखराव का भी प्रतीक बन जाता है। कवि के प्रतीक अत्यंत सूक्ष्म और गहरे होते हैं, जो पाठक को सोचने पर मजबूर करते हैं।

3. **बिंबों की सघनता**

कविता में दृश्यात्मकता का बारीक इस्तेमाल मिलता है - जैसे कमरे की बिखरी चीज़ें, अनछुए पत्र, आधे पढ़े उपन्यास आदि, जो अस्तित्व की बिखराहट को दर्शाते हैं। ये बिंब पाठक के सामने एक चित्र की तरह उभरते हैं।

4. **आत्म-चिंतन और दार्शनिक स्वर**

शिल्प की दृष्टि से यह कविता आत्म-चिंतनात्मक है, जिसमें कवि अपने अस्तित्व, समय और स्मृति के साथ संवाद करता है। इसका स्वर कहीं-कहीं दार्शनिक हो जाता है।

5. **सादा लेकिन प्रभावशाली भाषा**

▶ शब्द सरल हैं लेकिन उनका प्रयोग बहुत अर्थगर्भित

भाषा में कोई आडंबर नहीं है। शब्द सरल हैं लेकिन उनका प्रयोग बहुत अर्थगर्भित है। हर पंक्ति में गहराई छुपी होती है, जो धीरे-धीरे पाठक के मन में खुलती है।

6. **धीमा और सजग लयात्मक प्रवाह**

यद्यपि कविता तुकांत नहीं है, फिर भी उसमें एक अंदरूनी लय है - जो विचारों और भावनाओं के प्रवाह से बनती है। यह लय कविता को एक खास आवाज़ और विवेकशील गति देती है।

7. **विराम और रिक्त स्थानों का प्रयोग**

कई बार कविता में विरामों और रिक्त स्थानों का प्रयोग भी शिल्प का हिस्सा बन जाता है, जो विचारों के अधूरेपन और अनकहेपन को दर्शाते हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रवासी साहित्यकार मोहन राणा ने 'अस्त व्यस्त में' नामक अपनी कविता में आधुनिक मानव जीवन की व्यस्तताओं, आत्म संघर्ष आदि को अभिव्यक्ति दी है। अपने अस्तित्व संकट, प्रवासी जीवन की गृहातुरता, विसंगतियाँ, स्मृतियाँ आदि को इसमें देखा जा सकता है।

आधुनिक मानव होड़ में लगे हैं। दूसरों के आगे निकाल जाने के लिए, अपनों से बहतर अपने को बनाने के लिए, आज से सम्पन्न कल बनाने के लिए। इस होड़ में वह अपने आप को भी भूल जाता है। वह लगातार मकान से मकान बदलता रहता है। कहीं से कहीं ओर जाकर बसता है। लेकिन इस बीच वह घर नहीं बना पाता। स्मृतियाँ नहीं बना पाता। जब टूटी फूटी बिखरी यादें उसे पुकारता है तो वह सोचता है कि यह कहाँ आ गए! डिब्बों में से पुराणों का गंध निकलता है। इन अस्त व्यस्तताओं के बीच लिखी गई कविता में से पुरानों का गंध उभरता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'अस्त व्यस्त में' कविता की भावगत विशेषताओं का चित्रण कीजिए।
2. एक प्रवासी कविता के रूप में 'अस्त व्यस्त में' कविता का मूल्यांकन कीजिए।
3. 'अस्त व्यस्त में' कविता की शिल्पगत विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी का प्रवासी साहित्य - डॉ. कमल किशोर गोयनका
2. प्रवासी भारतीयों में हिन्दी की कहानी - सुरेन्द्र गंभीर
3. अभिमन्यु अनत का कथा साहित्य - डॉ. शारदा पोटा
4. भारतीय डायस्पोरा विविध आयाम - सं रामशरण जोशी, राजीव रंजन राय
5. हिन्दी का भारतीय एवं प्रवासी महिला कथा लेखन - डॉ. मदुसंधु
6. प्रवासी भारतवासी - पं. बनारसीदास चतुर्वेदी
7. प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा - डॉ. कैलाश कुमार सहाय
8. प्रवासी हिन्दी साहित्य - संवेदना के विविध संदर्भ - डॉ. प्रतिभा मुदलियार
9. प्रवासी हिन्दी साहित्य की चुनौतियाँ - तेजेन्द्र शर्मा

10. हम प्रवासी - अभिमन्यु अनत

11. प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य - सं. विमलेश कांति वर्मा

12. प्रवासी साहित्य - एक विकास यात्रा - सुषम बेदी

13. प्रवासी आवाज़ - अजना संधीर

14. प्रवासी भारतीयों की पीड़ा - अरविंद मोहन

15. प्रवासी हिन्दी लेखक - डॉ. अल्का प्रदीप दीक्षित

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी प्रवासी साहित्य - कमल किशोर गोयनका

2. प्रवासी हिन्दी साहित्य अवधारणा एवं चिंतन - प्रदीप श्रीधर

3. http://kavitakosh.org

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 03

प्रतिनिधी कहानी संग्रह

Block Content

Unit 1: प्रवासी कहानी: संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिन्दी कहानिकार संक्षिप्त परिचय

Unit 2: वापसी (उषा प्रियंवदा)

Unit 3: कौन सी ज़मीन अपनी - डॉ. सुधा ओम ढींगरा

Unit 4: साँकल (ज़किया ज़ुबेरी)

Unit 5: देह की कीमत (तेजेंद्र शर्मा)

Unit 6: पिंजरा (नीलम मलकानिया)

इकाई 1

प्रवासी कहानी: संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिन्दी कहानिकार संक्षिप्त परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी प्रवासी साहित्य के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को समझता है
- हिन्दी प्रवासी साहित्य में प्रमुख लेखकों, ग्रंथों और विषयों से परिचित होता है
- हिन्दी प्रवासी कहानी में प्रयुक्त साहित्यिक उपकरणों, तकनीकों और शैलियों का ज्ञान प्राप्त होता है
- हिन्दी प्रवासी साहित्य में पहचान, संस्कृति और भाषा की अंतःक्रियाशीलता को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी प्रवासी साहित्य उन भारतीयों के जटिल अनुभवों को दर्शाता है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चले गए हैं, अपने साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत, भाषा और परंपराएँ लेकर गए हैं। यह साहित्य न केवल प्रवासी समुदाय के संघर्षों और विजयों को दर्शाता है, बल्कि पहचान, जुड़ाव, सांस्कृतिक संरक्षण और अनुकूलन के विषयों की भी खोज करता है। मुंशी प्रेमचंद और राजेंद्र यादव के 20वीं सदी के शुरुआती लेखन से लेकर किरण देसाई और झुम्पा लाहिड़ी जैसे समकालीन लेखकों तक, हिन्दी प्रवासी साहित्य भारतीय प्रवासियों की विविध आवाज़ों और दृष्टि कोणों को पकड़ने के लिए विकसित हुआ है।

मानव अनुभव की सूक्ष्म खोज के माध्यम से, हिन्दी प्रवासी साहित्य पहचान, संस्कृति और संबद्धता की जटिलताओं को समझने के लिए एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह साहित्य संवेदनशीलता और शिल्प की मांग करता है, जिसके लिए लेखकों को सार्वभौमिक विषयों के साथ सांस्कृतिक विशिष्टता को संतुलित करने और प्रवासी संदर्भ में भाषा, संस्कृति और पहचान की जटिलताओं को समझने की आवश्यकता होती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

हिन्दी प्रवासी साहित्य, संवेदनशीलता, शिल्प, पहचान, जुड़ाव, सांस्कृतिक संरक्षण, अनुकूलन, प्रवास, वैश्वीकरण, साहित्यिक विश्लेषण

Discussion / चर्चा

प्रवासी कहानी: एवं शिल्प

'प्रवासी साहित्य', हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें कविता, कहानी, लेख, उपन्यास, नाटक जैसी कई रचनाएँ रची जा रही हैं। कमला प्रसाद मिश्र, विवेकानन्द शर्मा, महावीर प्रसाद, अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर आदि प्रमुख हिन्दी प्रवासी लेखक हैं। साहित्य के इस क्षेत्र में महिला साहित्यकार भी सक्रिय हैं। लेखिकाओं की यह बहुलता प्रवासी साहित्य की विशेषता है।

प्रवासी लेखन की अन्य विशेषताएँ हैं -

1. पहचान की खोज
2. पुरानी यादें
3. पारिवारिक और वैवाहिक संबंधों के अलावा पुनः जड़े जमाना।
4. बहु सांस्कृतिक परिवेश आदि।

▶ प्रवासी रचनाएँ स्वानुभूत हैं

हिन्दी प्रवासी कहानी साहित्य विशाल और समृद्ध है। इन कहानियों का गहरा अध्ययन करने पर यह समझा जा सकता है कि ये कहानियाँ भारत से जुड़ी इन रचनाकारों की भूतपूर्व स्मृतियाँ नहीं है। इसके विपरीत वे अपने प्रवासी जीवन में जो देखते हैं और अनुभव करते हैं उसे उसी तीव्रता के साथ अपनी कहानियों का विषय बनाते हैं। इसलिए अधिकतर प्रवासी रचनाएँ स्वानुभूत हैं।

▶ महिला कथाकारों की संख्या अधिक है

प्रवासी साहित्य में महिला कथाकारों की संख्या अधिक है। उक्त साहित्य में उनका योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिन्दी की प्रवासी कहानियों में भारतीय तथा अन्य विदेशी संस्कृतियों के बीच का अंतर समझा जा सकता है। इन कहानियों के माध्यम से प्रवासी भारतीय समाज की वास्तविक तस्वीर हमारे सामने प्रस्तुत होती है।

▶ प्रवास की विभिन्न समस्याओं को दर्शाया जाता है

प्रवासी कहानियों में विस्थापन, हाशिए पर जाना, प्रवास जैसी विभिन्न समस्याओं को दर्शाया जाती है। ये रचनाकर विभिन्न मुद्दों जैसे संस्कृतिक टकराव, वैश्वीकरण, नैतिकता, मानवीय मूल्य, मानवाधिकार, जीवन मूल्य, महिलाओं के प्रति सचेतनता आदि को खुलकर लिखनेवाले हैं। अतः प्रवासियों की आशा एवं आकांक्षा, उनके दृष्टिकोण, भावनाएँ आदि को स्पष्ट रूप से कहानियों में चित्रित किया जाता है।

▶ रचनात्मक साहित्य

कीर्ति चौधरी, उषा राजे सक्सेना, दिव्या माथुर, गौतम सचदेव, उषा वर्मा, तेजेंद्र शर्मा, शैल अग्रवाल, कादंबरी मेहरा आदि इन कहानिकारों में प्रमुख हैं। प्रवासी कहानियाँ अधिकतर रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत आने के कारण इन्हें किसी साहित्यिक नियमों के अधीन नहीं किया जा सकता है। उन्हें गहरी आलोचना का विषय बनाने की कोई

ज़रूरत भी नहीं है।

प्रवासी कहानियाँ काफी संवेदनशील होती हैं। अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हुए भी ये कहानीकार अपनी संवेदनाओं को उसी अहमियत के साथ बचाए रखते हैं और उन्हें अपनी रचनाओं में प्रतिबिंबित करते हैं। प्रवास में जीवन का अनुभव करते हुए भी ये कहानीकार अपनी संस्कृतियों और अपनी जन्म भूमि को अपने दिल के करीब रखते हैं। कहानियों में वे आज की पीढ़ी की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को भी तीव्रता से उजागर करने का प्रयास करते हैं। भारतीय तथा अन्य विदेशी संस्कृतियों के द्वंद्व के साथ इन कहानियों में प्रवासी भारतीयों का मानसिक संघर्ष भी प्रस्तुत होते हैं।

▶ जन्म भूमि को अपने दिल के करीब रखते हैं

प्रवासी भारतीयों की विभिन्न समस्याएँ, घर की याद, वेश्यावृत्ति, नशीली दवाओं के तस्कर, भारत की यादें, विदेश में अपनी पहचान स्थापित करने के प्रवासियों के प्रयास, विभिन्न संघर्ष आदि प्रवासी जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याँए पाठक को विभिन्न कहानियों के माध्यम से अवगत होते हैं। प्रवासी भारतीय कहानीकारों ने हिन्दी की अपनी क्षेत्रीय शैली विकसित की है। इस प्रकार वे प्रवासी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं।

▶ प्रवासी जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याएँ

प्रवासी हिन्दी कहानियाँ अनूठी शैली और भाषा में लिखी जाती है। इसलिए हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में प्रवासी कहानिकारों की अहं भूमिका है। इन कहानियों की भाषा उस समाज को इंगित करने के लिए उपयुक्त है, जिसका वे प्रतिनिधित्व करती है और पाठक के लिए इसे समझना भी आसान है।

▶ अनूठी शैली और भाषा

प्रमुख प्रवासी हिन्दी कहानीकार -संक्षिप्त परिचय

प्रवासी कहानीकार अपनी भारतीय संस्कृति का प्रचार- प्रसार करके उसपर गर्व कर रहे हैं। अतः प्रवासी लेखक अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय भाषा हिन्दी को विश्व भाषाओं के पथ पर ले जाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। प्रमुख प्रवासी कहानीकार हैं -

1. **कीर्ती चौधरी**

जन्म	:	1 जनवरी 1934
जन्मस्थान	:	नईमपुर गांव (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा	:	एम. ए, पीएच. डी
मूलनाम	:	कीर्ती बाला सिन्हा
कार्य क्षेत्र	:	साहित्य
कहानी	:	'जहाँ नारा'
अन्य विशेषता	:	'तीसरा सप्तक' में कविताएँ प्रकाशित

▶ भारतीय और पश्चिमी समाज के बीच द्वंद्व की तस्वीर भी पेश करती हैं

2. **उषा प्रियंवदा**

जन्म	:	24 दिसंबर 1930
जन्मस्थान	:	कानपुर
शिक्षा	:	एम. ए, पीएच. डी (अंग्रेजी में)
कहानी संग्रह	:	वनवास,
		'कितना बड़ा झूठ',
		'जिन्दग़ी और गुलाब के फूल' (1961)
		'एक कोई दूसरा' (1966)
		'फिर वसंत आया' (1961)
		'कितना बड़ा झूठ' (1972)
पुरस्कार	:	पद्मभूषण (2007) और मोटूरी सत्यनारायण पुरस्कार

3. **अभिमन्यु अनत**

जन्म	:	8 अगस्त 1937
जन्मस्थान	:	त्रियोले गाँव (मॉरिशस)
कहानी संग्रह	:	'एक थाली समंदर'
		'खामोशी के चीकार'
		'इंसान और मशीन'
		'वह बीच का आदमी'
		'अब कल आएगा यमराज'
पुरस्कार	:	साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार
		मैथिली शरण गुप्त पुस्कार, यशपाल पुरस्कार आदि
निधन	:	4 जून 2018

4. **उषा राजे सक्सेना**

जन्म	:	22 नवंबर 1943
जन्मस्थान	:	गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
कहानी संग्रह	:	'मेरे अपने'
		'तान्या जीवन'
		'मुट्ठी भर उजियारा'

'वह कौन थी'

'चुनौती'

पुरस्कार : परमानंद साहित्य सम्मान

बाबु गुलाब राय स्मृति साहित्य सेवा सम्मान

विमन गोयल स्मृति पुरस्कार आदि....

5. **तेजेंद्र शर्मा**

जन्म : 21 अक्टूबर 1952

जन्मस्थान : पंजाब के जगरांव शहर

शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए, एम.ए, कंप्यूटर कार्य में डिप्लोमा।

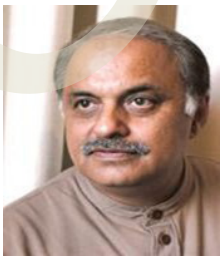

कहानियां। : 'काला सागर' (1990)

'ढिबरी टाईट' (1994)

'देह की कीमत' (1999)

'यह क्या हो गया' (2003)

'बेघर आँखें' (2007)

'सीधी रेखा की परतें' (2009)

'क़ब्र का मुनाफा' (2010)

'दीवार में रास्ता' (2012)

'मेरी प्रिय कथाएँ' (2014)

'सपने मरते नहीं' (2015)

'श्रेष्ठ कहानियाँ' (2015)

'गोरतलब कहानियाँ' (2017)

पुरस्कार : मोटूरी सत्यनारायण सम्मान 2011

प्रवासी भारतीय साहित्य भूषण सम्मान - 2003

6. **दिव्या माथुर**

जन्म : 23 मई 1949

जन्मस्थान : दिल्ली

शिक्षा : एम. ए. पत्रकारिता में डिप्लोमा

कहानी संग्रह : 'आशा'

'बचाय'

'टकराव'

'मेड इन इंडिया'

'अंतिम तीन दिन'

'आक्रोश'

पुरस्कार : आर्ट्स अचीवर

आटर्स काउन्सिल ऑफ इंडिया का सम्मान

प्रवासी साहित्य सम्मान

संस्कृति सेवा सम्मान आदि...

7. **गौतम सचदेव**

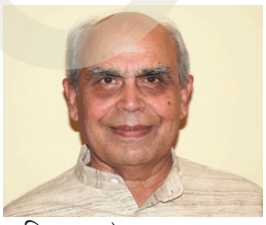

जन्म : 7 जून 1939

जन्मस्थान : पंजाब

शिक्षा : एम. ए, पी. एच. डी (दिल्ली विश्वविद्यालय)

कहानियाँ : 'आकाश की बेटी'

'जीवाला गुड़'

कहानी संग्रह : 'प्रकाशनाधीन'

'यादें सारा दर्जन पिंजरे'

'अटका हुआ पानी'

निधन : 27 जून 2012

8. **उषा वर्मा**

जन्म : 26 मई 1937

जन्मस्थान : बाराबंकी आस (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : एम.ए (दर्शन) लखनऊ विश्वविद्यालय

कहानी : सैनी

कहानी संग्रह : 'कारावास'

'ढूँढ किरी में चारों धाम'

'सिमकार्ड तथा अन्य कहानियाँ'

9. **शैल अग्रवाल**

जन्म : 21 जनवरी 1947

जन्मस्थान : बनारस

शिक्षा : एम. ए (अंग्रेजी), संस्कृत, चित्रकला और औनर्स पास की।

कहानी संग्रह : 'ध्रुवनात'

'बजेरा'

'सूरताल'

पुरस्कार : लक्ष्मीमल सिंघवी सम्मान (2006, 2014)

साहित्य सेवी सम्मान

हिंदी प्रचार प्रसार सम्मान

10. **सुधाओम ढींगरा**

जन्म : 7 सितंबर 1959

जन्मस्थल : पंजाब

शिक्षा : एम.ए, पीएच.डी, पत्रकारिता में डिप्लोमा।

कहानी संग्रह : वसुली

चलो फिर से शुरू करें

कहानियाँ : 'फंदा'

'ऐसी भी होली'

'और बाड़ बन गई'

'तलाश जारी है'

'परिचय की खोज'

'सूरज को निकालना है'

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी प्रवासी कहानी भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों के जटिल अनुभवों, सांस्कृतिक पहचान, जुड़ाव और सांस्कृतिक संरक्षण के बारे में बताता है। प्रवासी जीवन के सूक्ष्म चित्रण के माध्यम से यह साहित्य पहचान, सांस्कृतिक अनुकूलन, भाषा और प्रतिनिधित्व के विषयों पर गहराई से चर्चा करता है। मुंशी प्रेमचंद, राजेंद्र यादव, किरण देसाई और झुम्पा लाहिड़ी जैसे लेखक अभिनव कथा तकनीक, प्रतीकवाद और कल्पना का उपयोग करते हुए ऐसी कहानियाँ गढ़ते हैं जो सांस्कृतिक विशिष्टता को सार्वभौमिक विषयों के साथ संतुलित करती हैं। इस शैली में संवेदनशीलता, सहानुभूति और शिल्प की आवश्यकता होती है, जिसके लिए पाठकों को सांस्कृतिक पहचान, जुड़ाव और मानवीय अनुभव की पेचीदगियों से जुड़ने की आवश्यकता है। हिन्दी प्रवासी साहित्य का विश्लेषण करके, पाठकों में संस्कृति, भाषा और पहचान के बीच के अंतरसंबंधों की गहरी समझ विकसित होती है, जिससे सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सहानुभूति को बढ़ावा मिलता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. चुनिंदा हिन्दी प्रवासी कहानियों में सांस्कृतिक पहचान के विषय का विश्लेषण करें।
2. हिन्दी प्रवासी कहानी साहित्य में भाषा के महत्व पर चर्चा करें।
3. किसी विशिष्ट हिन्दी लघु कहानी में भारतीय प्रवासी जीवन के चित्रण की जाँच करें।
4. दो हिन्दी प्रवासी कहानियों में प्रवासी महिलाओं के प्रतिनिधित्व की तुलना और विश्लेषण करें।
5. हिन्दी प्रवासी कहानी में संवेदनशीलता और शिल्प की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. रामविलास शर्मा - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
2. डॉ. सुधा राय - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'
3. डॉ. रमेश चंद्र शाह - 'हिन्दी संस्कृति और परंपरा'
4. रूपर्ट स्नेल और वसुधा डालमिया द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक'
5. डॉ. रामविलास शर्मा - 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'हिन्दी प्रवासी साहित्यः एक आलोचनात्मक अध्ययन' - डॉ.रामविलास शर्मा
2. 'हिन्दी प्रवासीः एक साहित्यिक इतिहास'- डॉ. सुधा राय
3. 'हिन्दी साहित्य में प्रवासी और पहचान'- डॉ. रमेश चंद्र शाह
4. 'हिन्दी प्रवासी लेखनः विषय और तकनीक' -डॉ. विभूति राय
5. 'हिन्दी प्रवासी साहित्य की राजनीति' - डॉ. राजेंद्र कुमार

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 2

वापसी (उषा प्रियंवदा)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उषा प्रियंवदा की व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचय प्राप्त करता है
- 'वापसी' कहानीकी कथावस्तु समझता है
- मुख्य पात्र गजाघर बाबू का चरित्र जानता है
- मानवीय संबंधों के महत्व से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका उषा प्रियंवदा द्वारा लिखित 'वापसी' एक मार्मिक और आत्मनिरीक्षणात्मक कहानी है। यह कहानी मानवीय रिश्ते, पहचान और अपनी जड़ों की पुरानी यादों से भरी खोज की जटिलताओं का पता लगाती है। समीक्षकों द्वारा प्रशंसित यह कहानी ग्रामीण भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित है। शहर में रहने वाला इसका नायक एक लंबी अनुपस्थिति के बाद अपने पैतृक गाँव लौटता है। इस कहानी के माध्यम से प्रियंवदा ने अपनेपन, सांस्कृतिक विरासत और मानवीय संबंधों की नाज़ुकता के विषयों को एक साथ बुनकर भारतीय मध्यम वर्ग के परंपरा और आधुनिकता के साथ संघर्ष का एक सूक्ष्म चित्रण पेश किया है। अपने गीतात्मक गद्य और भावपूर्ण वर्णन के साथ, 'वापसी' हिन्दी साहित्य में एक मौलिक कृति बन गई है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

नोस्टाल्जिया, पहचान, सम्बन्ध, जड़ें, फ्लैशबैक, लालसा, उदासी, स्मृति, पैतृक गाँव, सांस्कृतिक विरासत, आत्म-खोज

Discussion / चर्चा

लेखक परिचय

▶ प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका और आलोचक

उषा प्रियंवदा (1936-वर्तमान) एक प्रसिद्ध हिन्दी लेखिका और आलोचक है। भारत के उत्तर प्रदेश में जन्मी, उन्होंने अपने उपन्यासों, लघु कथाओं और निबंधों के माध्यम से हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी रचनाएँ अक्सर सामाजिक परिवर्तन, महिला सशक्तिकरण और मानवीय संबंधों के विषयों का पता लगाती हैं।

भूमिका

उषा प्रियंवदा की 'वापसी' पैंतीस साल बाद गजधर बाबू की घर वापसी की एक दिल दहला देने वाली कहानी, जो उम्र बढ़ने, पहचान और पारिवारिक रिश्तों के संघर्षों की पड़ताल करती है।

कथावस्तु

उषा प्रियंवदा की 'वापसी' (1968) एक मार्मिक कहानी है। यह बदलते सामाजिक परिदृश्य में पहचान, जुड़ाव और बुढ़ापे के संघर्ष के विषयों की पड़ताल करती है। कहानी गजाधर बाबू के इर्द-गिर्द घूमती है। वे एक सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी है, जो पैंतीस साल की सेवा के बाद घर लौटता है।

उनकी नौकरी ऐसी है कि उन्हें छोटे रेलवे स्टेशनों पर रहना पड़ता है। उन छोटी जगहों पर वे न तो अपने बच्चों की पढ़ाई का ठीक से प्रबंध कर पाते थे और न ही अपनी पत्नी और बच्चों को अन्य सुविधाएँ दे पाते थे। यही सोचकर उसने शहर में एक घर बनवाया जहाँ उसकी पत्नी अपने बच्चों के साथ रहती थी।

▶ मुख्यपात्र गजाधर परिवार में वापस आने पर खुश

गजाधर बाबू के कुल चार बच्चे थे। दो बेटे, दो बेटियाँ। एक बेटी और एक बेटे की शादी हो चुकी थी। बेटी शादी के बाद ससुराल चली गई और बेटा अपनी माँ, पत्नी और छोटे भाई-बहन के साथ उसी घर में रह रहा था। छोटी बेटी अभी पढ़ाई कर रही थी। गजाधर बाबू अपने परिवार में वापस आने पर खुश थे। वे फिर से अपनी पत्नी के साथ रहना चाहते हैं। लेकिन उनकी पत्नी, विवाहित बेटा अमर और उसकी पत्नी, छोटा बेटा नरेंद्र और बेटी बसंती उन्हें कोई अहमियत नहीं देते।

▶ भावनात्मक स्वागत की उम्मीद

गजधर बाबू की वापसी से घर की मौजूदा व्यवस्था में खलल पड़ता है। वे अपनी पत्नी और बच्चों से जिस भावनात्मक स्वागत की उम्मीद कर रहे थे, वह नहीं होता। इसके विपरीत, सभी को लगता है कि गजधर बाबू उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप कर रहा है। उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों से वह स्नेह नहीं मिलता जिसकी वे उम्मीद कर रहे थे। इसके विपरीत उन्हें लगता है कि उस घर में उनके लिए कोई जगह नहीं है। पहले तो उनकी खाट ड्राइंग रूम में रख दी जाती है।

बाद में जब बहू आपत्ति करती है, तो उनसे पूछे बिना ही उन्हें एक कोठरी में डाल दिया जाता है। उनकी पत्नी शिकायत करती है कि न तो उनकी बेटी और न ही उनकी बहू घर के कामों में मदद करती हैं। लेकिन जब बेटी और बहू को खाना बनाने की जिम्मेदारी दी जाती है तो कोई भी इसे पसंद नहीं करता। जब वह घर के खर्च को सीमित करने के लिए नौकर को छुट्टी देता है तो इसे उसका हस्तक्षेप माना जाता है। वह अपने परिवार के रूखे व्यवहार से बहुत आहत होता है। उसके लिए सबसे बड़ा दुःख यह है कि उसकी पत्नी भी उसे समझने को तैयार नहीं है।

▶ परिवार के रूखे व्यवहार

जिस अकेलेपन से गजाधर बाबू भागे थे, वह कम होने के बजाय उसकी पत्नी और बच्चों के बीच बढ़ता जाता है। इस निराशा में वह उसी छोटी सी जगह पर लौट आता है जहाँ वह रेलवे में काम करता था, चीनी मिल में काम करने के लिए। वह अपनी पत्नी से साथ चलने को कहता है लेकिन वह मना कर देती है।

मुख्य पात्र

1. **गजाधर बाबू:** नायक, एक सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी जो पैंतीस साल बाद घर लौटता है।
2. **शांति:** गजधर बाबू की पत्नी, जो उनके जीवन से दूर हो गई है और उसे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है।
3. **रमेश:** गजधर बाबू का बेटा, जो अपने जीवन में व्यस्त है और अपने पिता के लिए बहुत कम चिंता दिखाता है।
4. **सुशीला:** गजधर बाबू की बेटी, जो शादीशुदा है और अलग रहती है, लेकिन अपने पिता की भावनाओं के प्रति उदासीन है।

▶ गजाधर बाबू, शांति, रमेश, सुशीला

सहायक पात्र:

1. **पोते:** गजधर बाबू के पोते, जो अपने दादा की तुलना में अपने जीवन में अधिक रुचि रखते हैं।
2. **पड़ोस की महिलाएँ:** पड़ोस की महिलाएँ जो गजधर बाबू के परिवार की गपशप और आलोचना करती हैं।
3. **पुराने दोस्त:** गजधर बाबू के रेलवे के दिनों के दोस्त, जो अपनी ज़िंदगी में आगे बढ़ चुके हैं।

▶ पोते, पड़ोस की महिलाएँ, पुराने दोस्त

चरित्र विश्लेषण

1. **गजाधर बाबू:** उम्र बढ़ने, अकेलेपन और अर्थ की खोज के संघर्षों का प्रतिनिधित्व करता है।

2. **शांतिः** पारिवारिक रिश्तों की बदलती गतिशीलता और भावनात्मक समर्थन में गिरावट का प्रतीक है।

3. **रमेश और सुशीलाः** युवा पीढ़ी की अपने बुजुर्गों के प्रति उदासीनता और उपेक्षा का उदाहरण देते हैं।

चरित्र चित्रण

गजाधर बाबु

'वापसी' कहानी गजाधर बाबू को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। इसलिए कहानी में मुख्य पात्र गजाधर बाबू हैं। कहानी में उनका चरित्र सबसे अधिक उभरकर आता है। उनके अलावा उनकी पत्नी का चरित्र अन्य पात्रों की तुलना में अधिक उभरकर आता है। अन्य सभी पात्र कहानी की आवश्यकता के अनुसार आते-जाते रहते हैं।

▶ गजाधर बाबू कहानी का केंद्र पात्र

गजाधर बाबू को इस कहानी का केंद्रीय पात्र या नायक कहा जा सकता है। पूरी कहानी उन्हीं के इर्द गिर्द घूमती है। गजाधर बाबू पर केंद्रित होने के बावजूद इसे चरित्र प्रधान कहानी कहना उचित नहीं है क्योंकि कहानी का मकसद गजाधर बाबू के चरित्र को उभारना नहीं है बल्कि उनके माध्यम से परिवारों में वृद्ध लोगों की बदलती स्थिति को दर्शाना है।

▶ घर के मुखिया हैं और परंपरागत दृष्टिकोण रखते हैं

गजाधर बाबू वैसे तो घर के मुखिया हैं और परंपरागत दृष्टिकोण रखते हैं। उनकी इच्छा है कि अपना आदेश ही पूरे परिवार के लिए सर्वमान्य होना चाहिए। वह इसका प्रयत्न भी करता है कि घर के सभी सदस्य उनके कहे अनुसार चले। लेकिन ऐसा होता नहीं। उनके इस आदेश देने की कोशिशों को घर के दूसरे सदस्य पसंद नहीं करते, बल्कि अपने-अपने ढंग से उसका विरोध भी करते हैं। यही नहीं उनका घर में मौजूद रहना भी शेष सदस्यों को अखरने लगता है।

▶ सहृदय और संवेदनशील व्यक्ति

वे सहृदय और संवेदनशील व्यक्ति हैं। अपने घर-परिवार के सदस्यों के प्रति ही नहीं उनके संपर्क में आने वाले दूसरों लोगों के प्रति भी वे स्नेह का भाव रखते हैं। अपनी पत्नी के प्रति भी उनके मन में गहरा लगाव है और नौकरी से रिटायर होने के बाद जल्दी से जल्दी घर पहुँचने की इच्छा के पीछे अपनी पत्नी के प्रति उनका यह लगाव भी है। पत्नी को लेकर कई मधुर स्मृत्तियाँ उनके मन में बसी हुई हैं। अपने बच्चों के प्रति भी उनके मन में स्नेह का भाव है।

▶ घर-परिवार के प्रति ज़िम्मेदारी का बोध

गजाधर में अपने घर-परिवार के प्रति ज़िम्मेदारी का बोध है। इसी वजह से वे बच्चों को टोकते हैं लेकिन उनकी इस भावना को बच्चे समझ नहीं पाते और उन्हें लगता है कि पिता उनपर शासन चलाने की कोशिश कर रहे हैं। अपनी पत्नी के काम के बोझ को हल्का करने के इरादे से जब वे यह फरमान जारी करते हैं कि सुबह का खाना बहू बनाएगी और शाम का खाना बसंती, तो बसंती यह कहते हुए विरोध करती है कि उसे कॉलेज भी जाना होता है। लेकिन पिता बेटी को समझाते हुए तर्क देते हैं, 'तुम सवेरे

पढ़ लिया करो। तुम्हारी माँ बूढ़ी हुई। उनके शरीर में अब वह शक्ति नहीं बची है। तुम हो, तुम्हारी भाभी हैं, दोनों को मिलकर काम में हाथ बँटाना चाहिए।' लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती, माँ की नज़रों में बसंती का काम से जी चुराने के पीछे मुख्य कारण अपनी सहेली शीला के यहाँ जाना है जहाँ उन्हीं के अनुसार 'बड़े-बड़े लड़के हैं'। एक पिता के लिए यह कथन निश्चय ही चिंता का विषय है।

एक कुँवारी लड़की ऐसे घर में बार-बार आये जाये जहाँ जवान लड़के हो तो उसका चिंतित होना स्वाभाविक है। और इसी वजह से वह जब एक दिन बसंती को शीला के घर जाते हुए देखते हैं तो उसे जाने से रोक देते हैं। बेटी नाराज हो जाती है और वह खाना-पीना छोड़ देती है।

▶ जीवन संबंधी नज़रिया परंपरावादी है

गजाधर बाबू का जीवन संबंधी नज़रिया परंपरावादी है। उनका मानना है कि स्त्रियों का कर्तव्य घर में रहना और घर के काम में हाथ बँटाना है। पढ़ाई उनके लिए इतनी ज़रूरी नहीं है। उनको ज़्यादा स्वतंत्रता देना भी उचित नहीं है। यही नज़रिया उनकी पत्नी का भी है और इसी कारण वह अपने पति से शिकायत भी करती है लेकिन उसने बदली हुई परिस्थितियों के साथ अपने को 'एडजस्ट' भी कर लिया है।

रूढ़िवादी नज़रिया

विडंबना यह है कि गजाधर बाबू अपनी बेटी पर आदेश चलाते हैं, बहू और पत्नी से भी उनकी अपेक्षाएँ हैं लेकिन बेटों को वे कुछ नहीं कहते। बसंती के बनाये खाने पर छोटा बेटा यह टिप्पणी करते हुए खाना छोड़कर उठ जाता है कि मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता। लेकिन बेटे के ऐसे व्यवहार पर गजाधर बाबू उसे कुछ नहीं कहते, बेटी की ही शिकायत पत्नी से करते हैं कि इतनी बड़ी लड़की हो गई और उसे खाना बनाने तक नहीं आता। बेटे और बेटी के बीच फर्क करने का जो रूढ़िवादी नज़रिया है वह गजाधर बाबू के पूरे व्यवहार में झलकता है।

गजाधर बाबू के अलावा जिन पात्रों का उल्लेख कहानी में आता है, वे सभी गजाधर बाबू के माध्यम से ही हमारे सामने प्रकट होते हैं। उनकी पत्नी, उनके बच्चे और उनका नौकर। ये सभी कहानी की परिधि में चक्कर लगाते हैं। कहानी के केंद्र में तो गजाधर बाबू ही बने रहते हैं।

▶ पिता को एक अवांछित मेहमान की तरह देखना

गजाधर बाबू की तरह उनकी पत्नी भी परंपरावादी है, लेकिन पति से अलग अपने बच्चों के साथ रहने की उनकी लंबी आदत ने उन्हें अपने पति से कुछ हद तक उदासीन बना दिया है। ऐसा होना बहुत स्वाभाविक प्रतीत नहीं होता। इसी तरह कहानी में बच्चों द्वारा पिता को एक अवांछित मेहमान की तरह देखना भी अतिरंजनापूर्ण लगता है। शेष पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ कहानी में इसी रूप में आती हैं कि स्वयं गजाधर बाबू उन्हें किस रूप में देखते हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'वापसी' भारतीय समाज में वृद्धावस्था, पारिवारिक गतिशीलता और पहचान के संकट का मार्मिक चित्रण है। कहानी भावनात्मक जुड़ाव और सहानुभूति के महत्व पर प्रकाश डालती है।

'वापसी' भारतीय समाज में वृद्धावस्था, पारिवारिक गतिशीलता और पहचान के संकट का एक मार्मिक और सेवेदनशील चित्रण है। उषा प्रियंवदा ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि सेवानिवृत्ति के बाद गजाधर बाबू जैसे व्यक्ति किस प्रकार अपने जीवन में अर्थ और उद्देश्य की तलाश करते हैं. पहले जिस परिवार के केन्द्र में वे थे, वही परिवार अब उन्हें उपेक्षित और अनावश्यक महसूस करता है। कहानी में यह भी दर्शाया गया है कि आधुनिक समाज में पारिवारिक संबन्धों की नींव किस तरह बदलती जा रही है; जंहा सम्मान और प्रेम की जगह उपेक्षा और बेरुखी ने ले ली है। बढती उम्र के साथ गजाधर बाबू को न केवल शारिरिक थकान बल्कि भावात्मक और मानसिक संघर्षों का भी सामना करना पडता है।

'वापसी' मानवीय स्थिति पर एक शक्तिशाली कहानी है, जो हमारे रिश्तों में सहानुभूति, समझ और करुणा के महत्व को उजागर करती है। गजधर बाबू की कहानी के माध्यम से प्रियंवदाजी अक्सर अनदेखा किए जाने वाले उम्र बढ़ने के संघर्षों और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. गजाधर बाबू का चरित्र चित्रण करें।
2. 'वापसी' कहानी में परिवार की अवधारणा का विश्लेषण करें।
3. 'वापसी' कहानी में गजाधर बाबू की आत्म-खोज की प्रक्रिया का वर्णन करें।
4. 'वापसी' की कहानी में नॉस्टेल्जिया की भावना का क्या महत्व है?
5. 'वापसी' कहानी में उम्र बढ़ने की संभावना और पारिवारिक जुड़ाव का चित्रण किया गया है। इस कहानी के आधार पर बढ़ती उम्र की समस्याओं का समाधान कैसे हो सकता है, इसपर विचार करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. 'वापसी' : उषा प्रियंवदा
2. 'हिन्दी कहानी: एक विश्वकोश' : डॉ. सुधा राय द्वारा (प्रकाशक: भारतीय ज्ञानपीठ)
3. 'हिन्दी कहानी: एक इतिहास' : डॉ. राम विलास शर्मा (प्रकाशक: नेशनल बुक ट्रस्ट)

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'वापसी: एक आलोचना' : डॉ. राम विलास शर्मा
2. 'उषा प्रियम्वदा की कहानियाँ' : डॉ. सुधा राय
3. 'वापसी: एक समीक्षात्मक अध्ययन' : डॉ. रमेश चन्द्र शाह
4. 'उषा प्रियम्वदा की कहानियाँ में नारी चेतना' : डॉ. विभूति राय
5. 'वापसी: एक साहित्यिक विभाग' : डॉ. राजेंद्र कुमार

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 3

कौन सी ज़मीन अपनी - डॉ. सुधा ओम ढींगरा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ऐतिहासिक घटनाओं की समझ और प्रवासी समुदायों पर उनके प्रभाव समझता है
- प्रवासी समुदायों को प्रभावित करने वाले सामाजिक मुद्दों (जैसे, नस्लवाद, सांस्कृतिक विस्थापन) के बारे में जागरूकता उत्पन्न होती है
- प्रवासी समुदायों में महिलाओं की भूमिका के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है
- साहित्यिक विषयों को वास्तविक दुनिया के मुद्दों से जोड़ने की क्षमता प्राप्त करता है
- समाजशास्त्र, नृविज्ञान, इतिहास और सांस्कृतिक अध्ययनों से संबंध को जान पाता है

Background / पृष्ठभूमि

प्रवासी समुदायों को उनके मूल देश और नए परिवेश के बीच सामंजस्य स्थापित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। इस अध्ययन में हम प्रवासन की ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक मुद्दों, महिलाओं की भूमिका, साहित्यिक दृष्टिकोण और विभिन्न विषयों से इसके संबंधों का विश्लेषण करेंगे। ऐतिहासिक घटनाओं की समझ और प्रवासी समुदायों पर उनका प्रभाव प्रवास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझे बिना प्रवासी समुदायों के वर्तमान स्वरूप का सम्यक अध्ययन संभव नहीं है। इतिहास में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई हैं जिन्होंने प्रवासन को प्रभावित किया है, जैसे कि उपनिवेशवाद, युद्ध, आर्थिक संकट और जलवायु परिवर्तन। उदाहरणस्वरूप, ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान भारत, चीन और अफ्रीका से बड़ी संख्या में श्रमिकों को अन्य देशों में भेजा गया। इस प्रकार के अनिवार्य प्रवास ने प्रवासी समुदायों के सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना को प्रभावित किया। भारत से मॉरिशस, गुयाना, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में श्रमिकों का पलायन इसका प्रमुख उदाहरण है। प्रवासी समुदायों को प्रभावित करने वाले सामाजिक मुद्दों (जैसे, नस्लवाद, सांस्कृतिक विस्थापन) के बारे में जागरूकताप्रवासी समुदायों को कई सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नस्लवाद, भेदभाव, सांस्कृतिक विस्थापन और पहचान का संकट ऐसे प्रमुख मुद्दे हैं जो उनके सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करते हैं। नस्लवाद और भेदभाव के कारण प्रवासियों को नौकरियों, शिक्षा और अन्य सामाजिक संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त करने में कठिनाइयाँ होती हैं। सांस्कृतिक विस्थापन भी एक बड़ी समस्या है, जिसमें प्रवासी समुदायों को अपनी पारंपरिक संस्कृति और नए समाज के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है। प्रवासी समुदायों में महिलाओं की भूमिका के बारे में अंतर्दृष्टिप्रवासी समुदायों में महिलाओं की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। वे न केवल परिवारों की आर्थिक और सामाजिक संरचना को

बनाए रखने में योगदान देती हैं, बल्कि प्रवास के दौरान उत्पन्न कठिनाइयों का सामना भी करती हैं। प्रवासी महिलाएँ दोहरे संघर्ष से गुजरती हैं - एक ओर उन्हें पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं की सीमाओं से लड़ना पड़ता है और दूसरी ओर नए समाज में स्वीकार्यता की चुनौती से जूझना पड़ता है। उदाहरण के लिए, भारतीय प्रवासी महिलाएँ कई बार घरेलू कामगार के रूप में कार्य करने को मजबूर होती हैं और उन्हें श्रमिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। प्रवासी साहित्य में प्रवासियों की पीड़ा, संघर्ष, नई पहचान की खोज और सांस्कृतिक द्वंद्व को व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, मॉरिशस के हिन्दी साहित्य में भारतीय प्रवासियों के संघर्ष को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। इसी प्रकार, भारतीय प्रवासी साहित्यकारों जैसे कि गिरमिटिया मज़दूरों की आत्मकथाएँ, भारतीय डायस्पोरा साहित्य में मोहनदास करमचंद गांधी की 'सत्य के प्रयोग' जैसी कृतियाँ प्रवासी अनुभव को समझने में सहायक हैं। प्रवासन केवल एक भौगोलिक घटना नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। प्रवासी समुदायों की समस्याओं, उनकी सांस्कृतिक पहचान और साहित्यिक योगदान का अध्ययन करने से हमें एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्राप्त होता है। यह अध्ययन न केवल प्रवासी समुदायों को समझने में मदद करता है, बल्कि हमें वैश्विक समाज की विविधता और एकजुटता के महत्व को भी दर्शाता है। प्रस्तुत अध्याय में डॉ.सुधा ओम ढींगरा द्वारा रचित कहानी कौन सी ज़मीन अपनी के माध्यम से उपर्युक्त सभी विषयों पर गहराई से अध्ययन करेंगे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समाजशास्त्र, अंतर्दृष्टिप्रवासी, डायस्पोरा साहित्य, विस्थापन, भौगोलिक घटना

Discussion / चर्चा

3.3.1 सुधा ओम ढींगरा

▶ प्रवासी हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर

सुधा ओम ढींगरा का जन्म 7 सितंबर को जालंधर, पंजाब में हुआ। वे प्रवासी हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने हिन्दी कथा साहित्य, कविता, नाटक, आलोचना, संपादन और अनुवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे अमेरिका में रहकर हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और हिन्दी साहित्य को अपनी सृजनात्मक लेखनी से समृद्ध किया।

▶ **प्रकाशित कृतियाँ**

उपन्यास: 'दृश्य से अदृश्य का सफ़र', 'नक़्क़ाशीदार केबिनेट'।

कहानी संग्रह: 'चलो फिर से शुरू करें', 'कथा-सप्तक', 'खिड़कियों से झाँकती आँखें', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ', 'सच कुछ और था', 'कमरा नंबर 103', 'कौन सी ज़मीन अपनी', 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'मेरी पसंदीदा कहानियाँ', 'मेरी कहानियाँ'।

कविता संग्रहः 'सरकती परछाइयाँ', 'धूप से रूठी चाँदनी', 'अन्य प्रमुख कृतियाँ'।

निबंध संग्रहः 'विचार और समय'।

साक्षात्कार संग्रहः 'साक्षात्कारों के आईने में'।

संपादनः 'अनेक हिन्दी साहित्यिक संकलनों का संपादन'।

अनुवादः उनकी कई कहानियाँ अंग्रेज़ी, मलयालम, पंजाबी और असमिया में अनूदित हो चुकी हैं।

▶ साहित्यिक योगदान और उपलब्धियाँ

▶ अमेरिका में हिन्दी कवि सम्मेलनों को लोकप्रिय बनाया

हिन्दी भाषा और साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।, अमेरिका में हिन्दी नाटकों के निर्देशन और मंचन में सक्रिय भूमिका निभाई। अमेरिका में हिन्दी कवि सम्मेलनों को लोकप्रिय बनाया और हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु आर्थिक सहायता एकत्रित की। हिन्दी चेतना पत्रिका का सात वर्षों तक संपादन किया।, अमेरिका के विश्वविद्यालयों में उनकी कहानियाँ और कविताएँ पढ़ाई जाती हैं।, उनकी कहानी 'कौन सी ज़मीन अपनी' पर लघु फिल्म बनाई गई।, उन्होंने प्रवासी हिन्दी साहित्य को एक सशक्त पहचान दिलाने में अहम योगदान दिया।

▶ पुरस्कार एवं सम्मान

▶ अनगिनत पुरस्कारों से सम्मानित

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण 'हिन्दी सेवी सम्मान' (2016, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित), हिन्दी विदेश प्रसार सम्मान (2013, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान), स्पंदन प्रवासी कथा सम्मान (2013), अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार (कहानी संग्रह 'कौन सी ज़मीन अपनी' हेतु), कमलेश्वर स्मृति कथा पुरस्कार (2010, 2018), साहित्य समर्था पत्रिका द्वारा विशेषांक, शांति गया प्रवासी रत्न सम्मान (2019), सूरज प्रकाश मरवाहा साहित्य रत्न अवार्ड (2020), The Great Indian Women Award (2021), निराला सम्मान (2020)

सामाजिक एवं सांस्कृतिक योगदान-2014 में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउंडेशन की स्थापना की, जो भारत में आर्थिक रूप से कमजोर बालिकाओं की शिक्षा और कंप्यूटर ट्रेनिंग के लिए कार्यरत है। अमेरिका में रामलीला के नाटकीय मंचन को लोकप्रिय बनाया, जिसे अब हजारों लोग देखने आते हैं। 1991 से हिन्दी नाटकों के मंचन द्वारा हिन्दी भाषा प्रचार के लिए धन एकत्रित किया। 1987 से 2020 तक 250 से अधिक कवि सम्मेलनों का संयोजन किया। हिन्दी विकास मंडल (नॉर्थ कैरोलाइना) और अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति, अमेरिका में विभिन्न पदों पर कार्य किया।

▶ हिन्दी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम योगदान दिया

सुधा ओम ढींगरा प्रवासी हिन्दी साहित्य की उन चुनिंदा हस्तियों में से हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने में अहम योगदान दिया है। उनकी साहित्यिक रचनाएँ सामाजिक चेतना को जागृत करने का कार्य करती हैं और प्रवासी भारतीयों के अनुभवों को प्रकट करती हैं। उनकी रचनाओं में प्रवासी जीवन की पीड़ा, संघर्ष, पहचान और

भावनात्मक द्वंद्व को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। हिन्दी साहित्य को उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से समृद्ध किया और उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

3.3.2 कथावस्तु

यह कहानी मनजीत सिंह सोढ़ी की है, जो अपनी पत्नी मनविंदर और बच्चों के साथ अमेरिका में रहते हैं। मनजीत सिंह का दिल हमेशा पंजाब के खेतों में बसा रहता है और वह अपनी सारी कमाई पंजाब में जमीन खरीदने में लगा देते हैं। उनकी पत्नी मनविंदर और बच्चे इस फैसले से नाखुश हैं, क्योंकि वे अमेरिका में एक स्थायी और सुरक्षित जीवन चाहते हैं।

▶ मनजीत सिंह सोढ़ी की कहानी

मनजीत सिंह अमेरिका में एक सफल व्यवसायी बन जाते हैं और उनकी पत्नी मनविंदर भी एक प्रतिष्ठित व्यवसाय चला रही हैं। लेकिन मनजीत का सपना हमेशा अपने गाँव लौटने और अपने खेतों में जीवन बिताने का रहता है। वह अपने बच्चों से कहते हैं कि वह अपनी अंतिम सांसें पंजाब में ही लेना चाहते हैं। यह विचार उनके परिवार को बेचैन कर देता है। वे चाहते हैं कि मनजीत अमेरिका में ही रहें और एक अच्छा घर बनाएँ, लेकिन मनजीत अपनी जिद पर अड़े रहते हैं।

बच्चों की शादियों के बाद भी, मनजीत का मन अपने गाँव की यादों में बसा रहता है। वह अपने खेतों, बचपन की यादों, अपनी माँ की ममता और पिता के गर्व भरे चेहरे को याद करते रहते हैं। वह सोचते हैं कि कैसे वह अपने गाँव के स्कूल को सुधार सकते हैं और बच्चों को बेहतर शिक्षा दे सकते हैं।

▶ भारत लौटने का समय आ गया

आखिरकार, उन्हें अपने व्यवसायों के खरीदार मिल जाते हैं और भारत लौटने का समय आ जाता है। भारत लौटने पर उनका परिवार उनका गर्मजोशी से स्वागत करता है, लेकिन जल्द ही वास्तविकता सामने आ जाती है। गाँव के हालात अब पहले जैसे नहीं रहे। उनकी बहुएँ कामचोर निकलीं और कोई भी उनकी मदद करने को तैयार नहीं था। मनविंदर को रसोई का सारा काम अकेले ही संभालना पड़ता है।

▶ अपने ही घर में अजनबी जैसा महसूस होना

मनजीत अपने पुश्तैनी घर में रहने और अपनी ज़मीन पर नया घर बनाने की इच्छा जताते हैं, लेकिन उनके परिवार के सदस्य इससे नाराज हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि मनजीत उनकी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं। धीरे-धीरे, मनजीत और मनविंदर को अपने ही घर में अजनबी जैसा महसूस होने लगता है।

मनजीत के लिए यह एक गहरा भावनात्मक आघात होता है। वह देखता है कि उसके अपने ही भाई अब उसे बाहरी व्यक्ति मानने लगे हैं। उसकी कल्पना में जो परिवार प्यार और अपनेपन से भरा था, वह अब स्वार्थ और ईर्ष्या से ग्रस्त हो चुका है।

▶ स्वार्थ और ईर्ष्या से ग्रस्त परिवार

एक रात, मनजीत ने अपने भाइयों को उनके पिता के साथ मिलकर उसकी हत्या की साजिश रचते हुए सुना। यह सुनकर वह पूरी तरह टूट जाता है। उन्हें एहसास होता है कि उनके अपने ही परिवार ने उन्हें धोखा दिया है।

मनविंदर, जो पहले ही हालात को भांप चुकी थी, तुरंत निर्णय लेती है कि उन्हें यह जगह छोड़ देनी चाहिए। आधी रात को, वे अपने पुराने सपनों और रिश्तों को पीछे छोड़कर गाँव से भाग जाती हैं।

▶ समय के साथ सब कुछ बदल जाता है

कहानी एक महत्वपूर्ण संदेश देती है- समय के साथ सब कुछ बदल जाता है और कभी-कभी पुरानी यादों की चमक हकीकत की सच्चाई से बहुत अलग होती है। मनजीत और मनविंदर ने अपने जीवन के तीन दशक अमेरिका में बिताए, लेकिन जब वे अपने सपनों की दुनिया में लौटे, तो वहाँ के लोग और परिस्थितियाँ पूरी तरह बदल चुके थे।

▶ रिश्तों और वास्तविकता के द्वंद्व

अब, उनके पास एक नया रास्ता चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। यह कहानी केवल एक एन.आर.आई. के संघर्ष की नहीं, बल्कि पहचान, रिश्तों और वास्तविकता के द्वंद्व की भी है। अंत अनिश्चित है, लेकिन यह मनजीत और मनविंदर के लिए एक नए जीवन की शुरुआत का संकेत देता है, जहाँ वे अपने टूटे हुए दिल को जोड़ने और अपने भविष्य को संवारने का प्रयास करेंगे।

3.3.3 पात्र एवं चरित्र चित्रण

1. **मनजीत सिंह सोढ़ी**

▶ जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ व्यक्ति

मनजीत सिंह सोढ़ी एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है। उसकी आत्मा में अपने गाँव और परिवार की गहरी छवि बसी हुई है। हालाँकि वह विदेश में रहता है, लेकिन उसका मन हमेशा अपने जन्मस्थान और वहाँ के लोगों के साथ जुड़ा रहता है। वह अपने गाँव की सादगी और संस्कृति को न केवल संजोकर रखता है, बल्कि उसे अपनी पहचान का अहम हिस्सा मानता है।

▶ मेहनत के बल पर सफलता

मनजीत मेहनती और ईमानदार स्वभाव का व्यक्ति है। उसने अमेरिका में अपनी मेहनत के बल पर सफलता हासिल की है। यह सफलता उसे आसानी से नहीं मिली, बल्कि इसके पीछे उसका दृढ़ संकल्प और कठिन परिश्रम रहा है। वह किसी भी काम को पूरे समर्पण के साथ करता है और अपने उसूलों पर अडिग रहता है। उसकी ईमानदारी और कड़ी मेहनत ही उसकी सबसे बड़ी पहचान है, जो उसे दूसरों से अलग बनाती है।

▶ परिवार के प्रति उसकी निष्ठा और प्रेम

अपने परिवार के प्रति उसकी निष्ठा और प्रेम अतुलनीय है। वह अपने प्रियजनों की खुशी और सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करता है। परिवार के लिए उसका समर्पण इस हद तक है कि वह अपनी इच्छाओं और सपनों को भी उनके लिए त्यागने को तैयार रहता है। उसके लिए परिवार केवल खून का रिश्ता नहीं, बल्कि एक भावनात्मक जुड़ाव और समर्थन का आधार है।

▶ पारंपरिक सोच वाला व्यक्ति

मनजीत एक पारंपरिक सोच वाला व्यक्ति है, जो अपनी संस्कृति और मूल्यों को गहराई से महत्व देता है। आधुनिकता की चकाचौंध में भी वह अपनी परंपराओं को नहीं भूलता। उसके विचार और आस्थाएँ उसकी परवरिश और संस्कारों से प्रभावित हैं। उसे अपनी जड़ों पर गर्व है और वह इन्हीं सिद्धांतों पर चलते हुए जीवन व्यतीत करना पसंद करता है।

हालाँकि मनजीत अत्यधिक भावुक और आदर्शवादी भी है। वह दुनिया को अपने सपनों और सिद्धांतों के अनुसार देखना चाहता है, जो कई बार वास्तविकता से मेल नहीं खाता। उसकी भावुकता कभी-कभी उसे कठिनाइयों में डाल देती है, क्योंकि वह हर स्थिति को दिल से लेता है। उसका यह आदर्शवादी दृष्टिकोण उसे वास्तविक दुनिया की कठोर सच्चाइयों से दूर कर सकता है, लेकिन यही उसकी शुद्धता और सच्चे दिल का प्रमाण भी है।

▶ अत्यधिक भावुक और आदर्शवादी

2. **मनविंदर कौर**

मनविंदर कौर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र सोच वाली महिला हैं, जो अपने पति और परिवार से गहरा प्रेम करती हैं। उनके लिए परिवार केवल एक ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि उनके जीवन का आधार है। उनकी सोच व्यावहारिक है और वे अपने परिवार की खुशहाली को सबसे अधिक महत्व देती हैं। वे अपने प्रियजनों की देखभाल करने और उन्हें सुरक्षित और संतुष्ट रखने के लिए हर संभव प्रयास करती हैं।

▶ सशक्त, आत्मनिर्भर और स्वतंत्र सोच वाली महिला

वह एक व्यावहारिक और समझदार महिला हैं, जो जीवन की वास्तविकता को भली-भांति समझती हैं। उनकी सोच आदर्शों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे परिस्थितियों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखती हैं। वे जानती हैं कि जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन उनका सामना धैर्य और बुद्धिमत्ता से किया जाना चाहिए। वे अपनी सोच और अनुभवों के आधार पर सही निर्णय लेने की क्षमता रखती हैं, जिससे वे अपने परिवार को हर परिस्थिति में मज़बूती से संभालती हैं।

▶ व्यावहारिक और समझदार महिला

मनविंदर एक कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ एक सफल व्यवसायी भी हैं। अमेरिका में रहते हुए उन्होंने अपनी पहचान बनाई और अपने लिए एक मज़बूत स्थान स्थापित किया। वे न केवल अपने घर को सुचा' रूप से चलाती हैं, बल्कि अपने व्यवसाय को भी सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाने में सक्षम हैं। उनकी मेहनत, आत्मनिर्भरता और दृढ़ इच्छाशक्ति ने उन्हें एक प्रेरणादायक महिला बना दिया है।

▶ कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ एक सफल व्यवसायी भी

हालाँकि वे अपने पति के सपनों और महत्वाकांक्षाओं का पूरा समर्थन करती हैं, लेकिन वे आँख मूँदकर किसी भी बात को स्वीकार नहीं करतीं। अगर उनके पति कोई गलती करते हैं, तो वे उन्हें स्पष्ट रूप से उनकी भूल का अहसास कराती हैं। उनका रिश्ता पारस्परिक सम्मान और ईमानदारी पर आधारित है, जहाँ वे अपने पति का समर्थन करते हुए भी सही-गलत का भेद स्पष्ट रूप से समझाती हैं।

▶ पति के सपनों और महत्वाकांक्षाओं का पूरा समर्थन करती हैं

मनविंदर एक संवेदनशील और भावनात्मक महिला भी हैं, जो अपने परिवार की भलाई के लिए हमेशा चिंतित रहती हैं। उनकी भावनाएँ उनके रिश्तों में झलकती हैं, और वे अपने प्रियजनों की तकलीफ को अपना समझकर उसका समाधान खोजने का प्रयास करती हैं। उनकी कोमलता और भावनात्मक जुड़ाव ही उन्हें एक आदर्श पत्नी, माँ और महिला बनाते हैं, जो अपने परिवार के लिए हर परिस्थिति में खड़ी रहती हैं।

▶ संवेदनशील और भावनात्मक महिला

3. मनजीत के बच्चे

- आधुनिक और प्रगतिशील सोच वाले

मनजीत के बच्चे आधुनिक और प्रगतिशील सोच वाले हैं। वे समय के साथ बदलती दुनिया को स्वीकार करते हैं और अपने विचारों में लचीलापन रखते हैं। उनकी सोच खुले विचारों पर आधारित होती है, जिससे वे नई चीज़ों को अपनाने और समझने के लिए तैयार रहते हैं। वे केवल परंपराओं का अंधानुकरण नहीं करते, बल्कि तार्किक दृष्टिकोण से उनका मूल्यांकन करते हैं। उनके विचारों में नवीनता और स्वतंत्रता की झलक मिलती है, जिससे वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं।

- माता-पिता के प्रति गहरी संवेदनशीलता

हालाँकि वे आधुनिक सोच रखते हैं, फिर भी अपने माता-पिता के प्रति उनका प्यार और सम्मान अटूट है। वे यह समझते हैं कि उनके माता-पिता ने उन्हें जीवन में सही मार्ग दिखाने के लिए अनेक त्याग किए हैं। उनकी भावनाएँ न केवल आदर में व्यक्त होती हैं, बल्कि अपने माता-पिता के प्रति गहरी संवेदनशीलता में भी झलकती हैं। वे अपने माता-पिता की इच्छाओं का सम्मान करते हैं और उनके सुख-दुःख में हमेशा साथ खड़े रहते हैं।

- रीति-रिवाज़ों और पारिवारिक मूल्यों का पालन

इन बच्चों की सबसे खास बात यह है कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़े हुए हैं, लेकिन साथ ही आधुनिक जीवनशैली को भी अपनाते हैं। वे परंपराओं को बोझ नहीं मानते, बल्कि उनमें छिपी शिक्षाओं और मूल्यों को समझते हैं। वे अपने सांस्कृतिक त्योहारों, रीति-रिवाज़ों और पारिवारिक मूल्यों का पालन करते हैं, लेकिन समय के साथ होने वाले बदलावों को भी अपनाने से नहीं कतराते। इस संतुलन के कारण वे न तो पूरी तरह रूढ़िवादी होते हैं और न ही पूरी तरह पाश्चात्य संस्कृति में खो जाते हैं।

- माता-पिता के सपनों को समझते हैं

इसके अलावा, वे अपने माता-पिता के सपनों को समझते हैं और उनकी महत्वाकांक्षाओं की सराहना करते हैं। वे यह भी जानते हैं कि माता-पिता भी गलतियाँ कर सकते हैं और वे उन्हें प्यार और समझदारी के साथ उनकी गलतियों का एहसास कराते हैं। वे माता-पिता के साथ संवाद स्थापित करते हैं और अपनी राय खुलकर व्यक्त करते हैं। उनकी यह विशेषता पारिवारिक रिश्तों को और भी मज़बूत बनाती है, क्योंकि वे हर बात को समझदारी और आपसी सहयोग से सुलझाने में विश्वास रखते हैं।

4. मनजीत के भाई और भाभी

- अत्यधिक लालची और स्वार्थी स्वभाव के

मनजीत के भाई और भाभी अत्यधिक लालची और स्वार्थी स्वभाव के हैं। वे अपने निजी स्वार्थों को प्राथमिकता देते हैं और दूसरों की भावनाओं या आवश्यकताओं की परवाह नहीं करते। उनके जीवन का मूल उद्देश्य अधिक से अधिक संपत्ति और शक्ति अर्जित करना है, चाहे इसके लिए उन्हें किसी भी हद तक क्यों न जाना पड़े। उनका यह स्वभाव उन्हें समाज में एक नकारात्मक छवि प्रदान करता है, जहाँ वे अपने स्वार्थ के कारण दूसरों का शोषण करने से भी पीछे नहीं हटते।

उनका लालच और स्वार्थ केवल उनकी संपत्ति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वे अपनी शक्ति का भी दुरुपयोग करते हैं। उनके हाथ में जो भी संसाधन या अधिकार हैं,

▶ अपने प्रभाव का इस्तेमाल अनुचित कार्यों को बढ़ावा देने में

वे उनका उपयोग अपने निजी लाभ के लिए करते हैं, भले ही इससे दूसरों को नुकसान उठाना पड़े। वे अपने प्रभाव का इस्तेमाल अनुचित कार्यों को बढ़ावा देने में करते हैं और नैतिक मूल्यों को दरकिनार कर देते हैं। यह उन्हें उन लोगों की श्रेणी में ला खड़ा करता है जो नैतिकता और ईमानदारी की बजाय छल-कपट और धोखाधड़ी से अपना रास्ता बनाना पसंद करते हैं।

▶ परिवार के प्रति वफादार नहीं

इसके अलावा, वे अपने ही परिवार के प्रति वफादार नहीं हैं। परिवार, जो समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है, उनके लिए किसी व्यक्तिगत लाभ का साधन मात्र है। वे अपने स्वार्थ के लिए अपने ही परिजनों को धोखा देने से नहीं हिचकिचाते और उनके सुख-दुःख की कोई परवाह नहीं करते। परिवार की भावनाओं की अनदेखी कर वे केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे रहते हैं, जिससे उनके रिश्तों में कड़वाहट और विश्वासघात की भावना पनपती है।

▶ आधुनिक समाज में बदलते मूल्यों और नैतिकता का प्रतीक

मनजीत के भाई और भाभी आधुनिक समाज में बदलते मूल्यों और नैतिकता का प्रतीक हैं। आज के समय में, जहाँ लोग व्यक्तिगत लाभ और भौतिक सुख-सुविधाओं को अधिक महत्व देने लगे हैं, वे इसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। वे पारंपरिक मूल्यों और रिश्तों को नकारते हुए आत्मकेंद्रित जीवन जीने की प्रवृत्ति को अपनाते हैं। उनके चरित्र से यह स्पष्ट होता है कि समाज में नैतिकता और पारिवारिक मूल्यों का ह्रास कैसे हो रहा है और कैसे लोग व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के कारण रिश्तों की गरिमा को भूलते जा रहे हैं।

5. **बेजी और दार जी**

▶ पारंपरिक मूल्यों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व

बेजी और दार जी ऐसे पात्र हैं जो पारंपरिक मूल्यों और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे अपने परिवार, परंपराओं और समाज की स्थापित धारणाओं में दृढ़ विश्वास रखते हैं। उनके लिए परिवार की एकता, सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उनका जीवन अनुभव, उनकी सोच और उनके निर्णय पारंपरिक मूल्यों से प्रभावित होते हैं, जो पीढ़ियों से चलते आ रहे हैं।

▶ परिवार से बहुत प्यार करते हैं

हालाँकि, वे अपने परिवार से बहुत प्यार करते हैं और उसकी भलाई के लिए प्रयासरत रहते हैं, लेकिन उनके लिए संपत्ति और शक्ति भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे यह मानते हैं कि धन और अधिकार न केवल समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखते हैं, बल्कि परिवार की सुरक्षा और भविष्य के लिए भी आवश्यक हैं। इसी कारण वे अपने निर्णयों में कभी-कभी कठोर हो जाते हैं, जिससे उनके परिवार के अन्य सदस्य असहज महसूस कर सकते हैं।

▶ युवाओं के बदलते दृष्टिकोण को स्वीकार नहीं कर पाते

बदलते समय के साथ, समाज में नए विचार और मान्यताएँ उभर रही हैं, जो बेजी और दार की पारंपरिक सोच से मेल नहीं खातीं। वे आधुनिक नैतिकता, स्वतंत्र विचारधारा और युवाओं के बदलते दृष्टिकोण को पूरी तरह से स्वीकार नहीं कर पाते। यह उनके लिए एक चुनौती बन जाती है, जिससे वे मानसिक रूप से संघर्ष करते हैं।

वे उन पुराने आदर्शों को छोड़ना नहीं चाहते जिन पर उनका जीवन आधारित रहा है, लेकिन साथ ही वे अपने परिवार से भी अलग नहीं होना चाहते।

▶ परंपराओं और आधुनिकता के द्वंद्व में उलझे

कहानी में बेजी और दार जी उन व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सांस्कृतिक और सामाजिक बदलावों के बीच फंसे हुए हैं। वे परंपराओं और आधुनिकता के द्वंद्व में उलझे रहते हैं, जहाँ एक ओर वे अपनी जड़ों को बचाए रखना चाहते हैं और दूसरी ओर उन्हें नई परिस्थितियों से समझौता भी करना पड़ता है। उनका संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि समाज के व्यापक बदलावों का भी प्रतीक है, जो पुरानी और नई पीढ़ियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'कौन सी ज़मीन अपनी' एक प्रवासी भारतीय परिवार की गहरी संवेदनाओं, संघर्षों और पहचान की खोज की कहानी है। यह कहानी प्रवासियों के सांस्कृतिक, भावनात्मक और पारिवारिक जटिलताओं को उजागर करती है। यह कहानी एक ऐसे परिवार के अनुभवों को दर्शाती है जो बेहतर जीवन की तलाश में अमेरिका में बस गया है। प्रवासियों को नए देश में न केवल भौतिक समृद्धि की तलाश होती है, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों को बनाए रखने की भी कोशिश करते हैं। यह कहानी प्रवास के दौरान आने वाली सांस्कृतिक और भावनात्मक चुनौतियों को दर्शाती है और यह भी दिखाती है कि प्रवासी भारतीय अपनी जड़ों से कैसे जुड़े रहते हैं, भले ही वे भौगोलिक रूप से दूर हों।

कहानी में पुरानी और नई पीढ़ी के बीच मूल्यों और दृष्टिकोणों में अंतर स्पष्ट रूप से झलकता है। मनजीत सिंह, जो पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है, अपनी भारतीय जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है, जबकि उसकी पत्नी मनविंदर नई पीढ़ी के विचारों को अपनाकर अमेरिका को ही अपना सब कुछ मानती है। यह अंतर परिवार के भीतर तनाव और संघर्ष का कारण बनता है और यह दर्शाता है कि प्रवासी परिवारों में पीढ़ियों के बीच वैचारिक मतभेद किस प्रकार उत्पन्न होते हैं।

कहानी पारिवारिक रिश्तों की जटिलता और समय के साथ उनके बदलने के तरीकों को भी उजागर करती है। मनजीत सिंह अपने परिवार के प्रति पूर्णतः समर्पित रहता है, लेकिन समय के साथ यही विश्वास और प्रेम अंततः विश्वासघात में बदल जाता है। परिवार के सदस्य भौतिक सुख-सुविधाओं और स्वार्थ में इतने उलझ जाते हैं कि वे पारिवारिक मूल्यों को नजरअंदाज कर देते हैं। यह कहानी इस कटु सत्य को सामने लाती है कि जब स्वार्थ और भौतिकवाद हावी हो जाते हैं, तो पारिवारिक संबंध भी कमजोर हो जाते हैं। यह कहानी पहचान की खोज के विषय को भी गहराई से छूती है। मनजीत सिंह अपनी भारतीय पहचान और जड़ों से भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ महसूस करता है, जबकि मनविंदर अमेरिका में अपनी नई पहचान स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहती है। यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि हमारे जीवन में वास्तव में क्या अधिक महत्वपूर्ण है – भौतिक समृद्धि या पारिवारिक और भावनात्मक मूल्य? मनजीत सिंह एक ऐसा व्यक्ति जो अपनी जड़ों से गहराई से जुड़ा हुआ है और अपने परिवार के प्रति वफादार है। मनविंदर एक मज़बूत और स्वतंत्र महिला जो अमेरिका में अपनी पहचान बनाती है। मनजीत सिंह का परिवार एक ऐसा परिवार जो भौतिकवाद और स्वार्थ के

आगे अपने रिश्तों को महत्व नहीं देता। 'कौन सी ज़मीन अपनी' कहानी न केवल प्रवासी भारतीयों के जीवन की जटिलताओं को दर्शाती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि पहचान, रिश्ते और मूल्य समय के साथ कैसे बदलते हैं। यह कहानी भौतिकवाद और पारिवारिक संबंधों के बीच के संघर्ष को उजागर करते हुए यह संदेश देती है कि सच्ची पहचान केवल भौगोलिक सीमाओं से नहीं, बल्कि हमारे मूल्यों और रिश्तों से बनती है। एम.ए. हिन्दी के छात्रों के लिए यह कहानी एक विचारोत्तेजक अध्ययन सामग्री है, जो प्रवासी अनुभव और पारिवारिक जटिलताओं को समझने में सहायता करती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. नायिका की पहचान संकट का क्या कारण है? वह अपनी भारतीय विरासत और ब्रिटिश परिवेश के बीच क्यों झूलती है?
2. 'कौन सी ज़मीन अपनी' कहानी में चित्रित पारिवारिक मूल्यों और आधुनिक जीवन शैली के बीच के संघर्ष का विश्लेषण कीजिए।
3. कहानी के शीर्षक 'कौन सी ज़मीन अपनी' की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।
4. कहानी में नोस्टैल्जिया की भावना का क्या महत्व है? यह नायिका के जीवन में कैसे प्रभाव डालती है?
5. सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'कौन सी ज़मीन अपनी' में डायस्पोरा के अनुभव को कैसे चित्रित किया गया है? यह कहानी किन व्यापक विषयों पर प्रकाश डालती है?
6. 'कौन सी ज़मीन अपनी' कहानी आपको पारिवारिक संबंधों और मूल्यों के बारे में क्या सोचने पर मजबूर करती है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. सुधा ओम ढींगरा: 'कौन सी ज़मीन अपनी', राजकमल प्रकाशन, 2005.
2. राम विलास शर्मा: 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', राजकमल प्रकाशन, 2010.
3. मकरंद परांजपे: 'डायस्पोरा लिटरेचर: ए क्रिटिकल इंट्रोडक्शन' : ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2017.

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'हिन्दी कहानी: एक समीक्षात्मक अध्ययन': डॉ. राम विलास शर्मा
2. 'प्रवासी साहित्य: एक आलोचनात्मक परिचय': मकरंद परांजपे
3. 'हिन्दी साहित्य में नारी चेतना': डॉ. विभूति राय
4. 'हिन्दी साहित्य में उत्तर-उपनिवेशवाद': डॉ. अवधेश कुमार सिंह

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 4

साँकल (ज़किया ज़ुबेरी)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- साहित्यकार के रूप में ज़ुबेरी से परिचित होता है
- साँकल कहानी की कथावस्तु जानता है
- प्रमुख पात्रों का चरित्र -चरित्र समझता है
- अपने जीवन पर सामाजिक मानदंडों के प्रभाव का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सीखते हैं
- आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से सशक्तिकरण को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

ज़किया ज़ुबेरी की कहानी साँकल पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक जड़ों और व्यक्तिगत पहचान के बीच जटिल संबंधों को उजागर करती है। यह कहानी न केवल सामाजिक मानदंडों और रीति-रिवाज़ों के प्रभाव को दर्शाती है, बल्कि आत्म-साक्षात्कार और सशक्तिकरण के महत्व को भी रेखांकित करती है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में परंपराएँ और पारिवारिक मूल्य पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होते रहे हैं। साँकल इसी सांस्कृतिक प्रवाह और उसके प्रभावों को समझने का अवसर प्रदान करती है। यह कहानी पाठकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने, उन्हें सहेजने और भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के महत्व को समझने में सहायक होती है। इसके साथ ही, यह कहानी व्यक्तिगत पहचान और सामाजिक संरचनाओं के बीच टकराव को भी सामने लाती है। आधुनिकता और परंपरा के बीच द्वंद्व, व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक अपेक्षाओं के संघर्ष को इसमें प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। इस संदर्भ में, यह कहानी छात्रों को अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझने और उसकी सराहना करने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही, 'साँकल' यह भी दर्शाती है कि किस प्रकार सामाजिक मानदंड व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। यह कहानी छात्रों को इन मानदंडों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने और यह समझने के लिए प्रेरित करती है कि समाज द्वारा स्थापित सीमाएँ किस हद तक व्यक्ति की स्वतंत्रता को नियंत्रित कर सकती हैं। अंततः, 'साँकल' आत्म-साक्षात्कार और आत्मनिर्णय की प्रक्रिया के माध्यम से सशक्तिकरण का संदेश देती है। यह पाठकों को यह समझने के लिए प्रेरित करती है कि आत्म-चेतना और जागरूकता से व्यक्ति अपने जीवन में स्वतंत्र निर्णय ले सकता है और सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर अपनी पहचान स्थापित कर सकता है। इस प्रकार, 'साँकल' केवल एक कहानी भर नहीं है, बल्कि यह समाज, संस्कृति और व्यक्ति की मानसिकता के गहरे पहलुओं को उजागर करने वाली रचना है, जो छात्रों को सामाजिक वास्तविकताओं को समझने और आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रेरित करती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आकांक्षा, मनोविज्ञान, सामाजिक यथार्थवाद, संघर्ष, आत्म-चेतना, स्थापित सीमाएँ, आत्मनिर्णय, स्थानांतरित

Discussion / चर्चा

3.4.1 ज़किया ज़ुबैरी

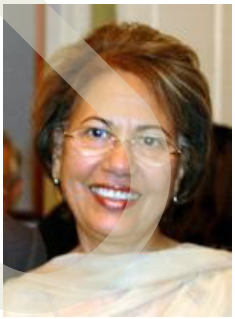

श्रीमती ज़किया ज़ुबैरी का जन्म अप्रैल को लखनऊ में हुआ, जो नवाब वाजिद अली शाह के अवध की राजधानी थी। हिन्दी उनकी मातृभाषा है और उनका बचपन आज़मगढ़ में बीता। प्रारंभिक शिक्षा आज़मगढ़ की सरकारी कन्या पाठशाला में हुई। सातवीं कक्षा के बाद उन्होंने इलाहाबाद के सरकारी विद्यालय में अध्ययन किया। वे अपने महाविद्यालय में इंटरमीडिएट की पढ़ाई के दौरान छात्र संघ की अध्यक्ष बनीं। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। ज़किया ज़ुबैरी को बचपन से ही चित्रकला, कविता और कहानी लिखने का शौक था। वे हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में समान अधिकार रखती हैं। उनकी भाषा में गंगा-जमुनी तहज़ीब की मिठास और सौहार्द महसूस किया जा सकता है। ज़किया ज़ुबैरी ने एशियन कम्यूनिटी आर्ट्स नामक संस्था की स्थापना की और इसके माध्यम से लंदन में अनेक नए नर्तकों, गायकों और लेखकों को मंच प्रदान किया। वे भारत और पाकिस्तान से लंदन आने वाली साहित्यिक और सांस्कृतिक हस्तियों के सम्मान में समारोह आयोजित करती हैं। कथा यू.के. के सहयोग से उन्होंने कई साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

▶ हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में समान अधिकार रखती हैं

पाकिस्तानी गायक शमील चौहान की स्वरचित रचनाओं की संगीत सी.डी. का निर्माण। हिन्दी लेखक तेजेंद्र शर्मा की कहानियों का उर्दू में अनुवाद और पुस्तक रूप में प्रकाशन। शियन कम्यूनिटी आर्ट्स के माध्यम से सूरज प्रकाश के उपन्यास देस बिराना और तेजेंद्र शर्मा की 16 कहानियों की ऑडियो सी.डी. जारी करना। ज़किया ज़ुबैरी ब्रिटेन की लेबर पार्टी की सक्रिय सदस्या हैं। वे लेबर पार्टी के टिकट पर दो बार चुनाव जीतकर काउंसलर निर्वाचित हुईं। वर्तमान में वे लंदन के बारनेट संसदीय क्षेत्र के कॉलिंडेल वार्ड की पहली और एकमात्र मुस्लिम महिला काउंसलर हैं। वे गरीबों और कमजोरों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं और सरकार से उनके हक दिलवाने में सफल प्रयास करती हैं। इसके अलावा, उन्होंने हिन्दी और उर्दू के बीच की दूरियाँ पाटने के लिए कई सार्थक प्रयास किए हैं। वे साहित्य के माध्यम से भारत और पाकिस्तान के बीच सौहार्द स्थापित करने में विश्वास रखती हैं। कथा यू.के. के सहयोग से उन्होंने ब्रिटेन में रचित उर्दू कहानियों का हिन्दी में अनुवाद करवा कर एक संकलन प्रकाशित करने की योजना बनाई है। ज़किया ज़ुबैरी न केवल एक कुशल साहित्यकार और

▶ कुशल साहित्यकार, समाजसेवी और प्रबुद्ध राजनेता

समाजसेवी हैं, बल्कि वे एक प्रबुद्ध राजनेता भी हैं, जिन्होंने समाज में कई महत्वपूर्ण बदलाव लाने में योगदान दिया है। उनकी साहित्यिक और सामाजिक उपलब्धियाँ हिन्दी और उर्दू भाषा के विकास, सांस्कृतिक समन्वय और सामाजिक उत्थान के लिए प्रेरणादायक हैं।

3.4.2 साँकल की कथावस्तु

▶ सीमा नाम की एक माँ और उसके बेटे समीर की कहानी

यह कहानी सीमा नाम की एक माँ और उसके बेटे समीर के जटिल रिश्ते के बारे में है। सीमा एक समर्पित माँ है, जो अपने बच्चों को प्यार और सम्मान के साथ पालती है। उसका बेटा समीर, जो अपने पिता से डरता था, अपनी माँ के प्रति रक्षात्मक था। हालाँकि, जैसे-जैसे समीर बड़ा होता गया, उसके व्यवहार में बदलाव आने लगा।

▶ सीमा के संघर्षों को दर्शाया गया है

कहानी में सीमा के संघर्षों को दर्शाया गया है, क्योंकि वह अपने बेटे के बदलते व्यवहार और अपने मूल्यों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करती है। वह अपने बेटे के प्रति अपने प्यार और अपनी मान्यताओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के बीच फंसी हुई है। सीमा को अपने जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिसमें उसके पति का दुर्व्यवहार, उसके बेटे की उपेक्षा और उसकी बहू की जलन शामिल हैं।

कहानी की शुरुआत सीमा के दुःखों से होती है। वह अपने बेटे समीर के साथ रहती है, लेकिन समीर अपनी पत्नी नीरा के बहकावे में आकर उसकी उपेक्षा करता है। सीमा को लगता है कि नीरा उससे जलती है और समीर अपनी माँ के साथ बुरा व्यवहार करने लगा है।

▶ पति के हाथों दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा था

सीमा अपने अतीत को याद करती है, जब उसे अपने पति के हाथों दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा था। उसके पति ने उसे कभी प्यार और सम्मान नहीं दिया और हमेशा उसे एक नौकरानी की तरह माना। सीमा को अपने बेटे समीर की परवरिश में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। समीर का बचपन मुश्किलों से भरा था, लेकिन सीमा ने उसे प्यार और देखभाल के साथ पाला।

सीमा को उम्मीद थी कि समीर बड़ा होकर एक अच्छा इंसान बनेगा, लेकिन वह अपने पिता की तरह ही कठोर और संवेदनहीन हो गया। उसने अपनी पत्नी के बहकावे में आकर अपनी माँ को अकेला छोड़ दिया। सीमा को बहुत दुःख होता है, लेकिन वह हार नहीं मानती। वह जानती है कि उसे अपने जीवन में आगे बढ़ना होगा।

▶ सीमा और जिल सास-बहू होते हुए भी सहेलियों की तरह थीं

कहानी के एक मोड़ पर सीमा को एहसास होता है कि उसे अपने बेटे से ज़्यादा अपनी बहू जिल से लगाव था। जिल एक अच्छी और समझदार लड़की थी, जो समीर और सीमा दोनों से प्यार करती थी। सीमा और जिल सास-बहू होते हुए भी सहेलियों की तरह थीं। सीमा को जिल की सारी आदतें पसंद थीं। लेकिन समीर, जो जिल का पति था, उससे नाराज़ रहने लगा। वह देर से घर आता और खाना भी नहीं खाता था।

जिल ने सीमा को बताया कि समीर को टिनिटस हो गया है, जिससे उसे रात में नींद

नहीं आती। जब सीमा ने समीर से बात की, तो उसने शिकायत की कि जिल उसका ख्याल नहीं रखती। जब वह रात में जागता है, तो जिल गाने सुनते हुए सो जाती है। सीमा को यह सुनकर बहुत बुरा लगा। उसे लगा कि समीर अपने पिता की तरह ही संवेदनहीन हो गया है।

▶ समीर रिश्तों की अहमियत नहीं समझता

समीर ने जिल को तलाक देने का फैसला किया और उसे दो फ्लैट, गहने और पैसे देने की बात कही। सीमा को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। उसे महसूस हुआ कि समीर रिश्तों की अहमियत नहीं समझता। इसके बाद समीर नीरा नाम की एक लड़की को घर ले आया, जिससे सीमा असहज महसूस करने लगी। उसे अपनी पिछली बहू जिल की याद आती थी, जो समीर को समझने में मदद कर सकती थी। सीमा को डर था कि समीर का नीरा के साथ गलत रिश्ता है, लेकिन समीर ने उसे बताया कि वह सिर्फ एक दोस्त है।

सीमा को समीर की पहली पत्नी बेला की भी चिंता थी, जो फ्रांस गई हुई थी और जिसके वापस आने की संभावना नहीं थी। सीमा को लगता था कि समीर उसे एक मूर्ख समझता है और उसने अपने पिता के नकारात्मक गुणों को विरासत में ले लिया है।

▶ माँ और बेटे के बीच के टूटे रिश्ते

एक दिन, समीर ने सीमा पर शारीरिक हमला कर दिया। वह नीरा की बेइज्जती करने के लिए गुस्से में आ गया और अपनी माँ पर हाथ उठा दिया। सीमा को गहरी चोट लगी और उसे एहसास हुआ कि समीर अपने पिता की तरह हिंसक हो गया है। यह घटना माँ और बेटे के बीच के टूटे रिश्ते और सीमा की पीड़ा को उजागर करती है।

सीमा की बेटी को जब पता चला कि उसकी माँ कॉन्फ्रेंस से जल्दी आ गई है, तो वह उससे मिलने आई और घर के काम में मदद करने लगी।

कहानी में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब सीमा के घर पुलिस आई। दरअसल, सीमा की बेटी ने ही पुलिस को बुलाया था, क्योंकि उसने अपने भाई समीर और उसकी प्रेमिका नीरा को आपत्तिजनक स्थिति में देख लिया था। पुलिस के आने से समीर और नीरा दोनों घबरा गए।

▶ नीरा को घर से निकाला गया

पुलिस ने सीमा से पूछा कि क्या वह अपने बेटे को घर से निकालना चाहती है, लेकिन सीमा ने अपने बेटे का पक्ष लिया और नीरा को घर से निकालने के लिए कहा। समीर ने पुलिस के आदेशानुसार नीरा को घर से निकाल दिया, लेकिन इस घटना से माँ-बेटे के रिश्ते में और भी दरार आ गई।

समीर घर के ऐशो-आराम के लिए वापस आ गया, लेकिन उसकी आँखों में माँ के प्रति शत्रुता और नफरत का भाव दिखाई देने लगा। वह अपनी माँ के साथ बुरा व्यवहार करता और उसे अपमानित करता। सीमा को अपने बेटे के व्यवहार से गहरा दुःख पहुँचा, जिसे उसने अपने जीवन का हर पल समर्पित किया था।

कहानी के अंत में, सीमा अपनी बेटी और दामाद के साथ अकेली रह जाती है।

वह अपने बेटे के व्यवहार से डरी हुई रहती है और उसे डर होता है कि कहीं समीर गुस्से में उसकी हत्या न कर दे। डर के कारण, वह अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लेती है।

▶ पारिवारिक मूल्यों और पीढ़ियों के बीच के संघर्ष

इस कहानी में माँ-बेटे के जटिल रिश्ते, पारिवारिक मूल्यों और पीढ़ियों के बीच के संघर्ष को दर्शाया गया है।

3.4.3 पात्र-चित्रण

▶ **सीमा**

कहानियों में पात्रों की गहराई और जटिलता ही उन्हें वास्तविकता के करीब लाती है। ऐसी ही एक पात्र है साँकल के सीमा, जो एक माँ, पत्नी, आधुनिक महिला, संवेदनशील इंसान और एक पीड़ित के रूप में विभिन्न भूमिकाओं को निभाती है। उसके जीवन की जटिलताएँ और संघर्ष उसे एक प्रभावशाली चरित्र बनाते हैं।

▶ अपने बेटे समीर के प्रति गहरी ममता और स्नेह

माँ के रूप में सीमा अपने बेटे समीर के प्रति गहरी ममता और स्नेह रखती है। वह अपने बेटे की कमज़ोरियों को भी प्यार से देखती है और उसे हर मुश्किल से बचाने का प्रयास करती है। उसकी यह भावना एक आदर्श माँ की छवि प्रस्तुत करती है, जो अपने बच्चे के लिए हर परिस्थिति में खड़ी रहती है। हालाँकि, कई बार वह अपने बेटे की गलतियों को अनदेखा भी कर देती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि एक माँ का प्रेम निस्वार्थ होते हुए भी कभी-कभी अव्यावहारिक हो सकता है।

▶ सहनशक्ति और पारिवारिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रखनेवाली

सीमा का अपने पति के साथ एक जटिल रिश्ता है। वह अपने पति के व्यवहार से दुःखी है, लेकिन फिर भी अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाती है। उसके जीवन में यह संघर्ष उसे मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित करता है। वह अपने पति से प्रेम और सम्मान की अपेक्षा रखती है, लेकिन उसे यह नहीं मिल पाता। इसके बावजूद, वह अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों से मुँह नहीं मोड़ती। यह पहलू उसकी सहनशक्ति और पारिवारिक मूल्यों के प्रति उसकी निष्ठा को दर्शाता है।

▶ आधुनिक विचारधारा वाली महिला

सीमा एक आधुनिक विचारधारा वाली महिला है, जो अपने करियर और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाए रखने का प्रयास करती है। वह आत्मनिर्भरता में विश्वास रखती है और अपने अधिकारों के लिए खड़ी होती है। पारंपरिक मूल्यों के साथ-साथ आधुनिकता को अपनाने का उसका यह प्रयास उसे एक सशक्त नारी के रूप में प्रस्तुत करता है। वह न केवल एक माँ और पत्नी है, बल्कि एक ऐसी स्त्री भी है जो अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देती है।

सीमा का हृदय कोमल और संवेदनशील है। वह न केवल अपने परिवार के प्रति बल्कि अन्य लोगों के प्रति भी गहरी सहानुभूति रखती है। जिल और नीरा के प्रति उसका व्यवहार यह दर्शाता है कि वह एक दयालु और मानवीय दृष्टिकोण रखने वाली महिला है। उसकी यह संवेदनशीलता उसे समाज की उन महिलाओं से अलग बनाती है जो केवल अपने तक सीमित रहती हैं। वह दूसरों के दर्द को समझती है और उनकी

भावनाओं का सम्मान करती है।

सीमा के जीवन का सबसे दुःखद पहलू यह है कि वह अपने पति और बेटे दोनों के हाथों पीड़ित होती है। वह अपने परिवार में सम्मान और प्रेम की कमी महसूस करती है। उसका यह संघर्ष समाज में उन महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है जो अपने परिवार के लिए सब कुछ करती हैं, लेकिन बदले में उन्हें केवल पीड़ा और अपमान मिलता है। यह पहलू यह भी दर्शाता है कि कभी-कभी परिवार ही महिलाओं के लिए सबसे बड़ा संघर्ष का केंद्र बन जाता है।

▶ पति और बेटे दोनों के हाथों पीड़ित होती है

सीमा का चरित्र विभिन्न स्तरों पर विकसित होता है और समाज की कई सच्चाइयों को उजागर करता है। वह एक माँ, पत्नी, आधुनिक महिला, संवेदनशील इंसान और पीड़ित के रूप में अपनी भूमिकाएँ निभाती है। उसका संघर्ष न केवल व्यक्तिगत है, बल्कि यह समाज में महिलाओं की स्थिति को भी दर्शाता है। सीमा की कहानी यह संदेश देती है कि नारी को केवल सहने वाली नहीं, बल्कि अपने अधिकारों और आत्मसम्मान के लिए लड़ने वाली भी होना चाहिए।

▶ समाज में महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है

▶ **समीर**

मनुष्य का व्यक्तित्व अनेक भावनाओं, अनुभवों और परिस्थितियों से निर्मित होता है। कई बार व्यक्ति अपने परिवेश और विचारों के बीच संतुलन स्थापित नहीं कर पाता, जिससे उसके व्यवहार में विरोधाभास स्पष्ट रूप से झलकने लगता है। समीर ऐसा ही एक जटिल पात्र है, जो प्रेम, परंपरा, आधुनिकता, स्वार्थ और हिंसा के बीच उलझा हुआ दिखाई देता है। उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए हमें उसके कार्यों और भावनात्मक द्वंद्व का गहन विश्लेषण करना होगा।

▶ व्यवहार में विरोधाभास

समीर का व्यक्तित्व सहज और सरल नहीं है। वह अपनी माँ से प्रेम करता है, लेकिन अपने पिता की आदतों और व्यवहार को अपनाने से खुद को रोक नहीं पाता। यह विरोधाभास उसके चरित्र को और अधिक जटिल बना देता है। अपनी माँ के प्रति स्नेह और सम्मान होने के बावजूद, वह उन्हीं पर हाथ उठाने जैसा क्रूर कार्य करता है। यह दर्शाता है कि उसके मन में भावनात्मक असंतुलन है, जहाँ प्रेम और आक्रोश साथ-साथ मौजूद हैं।

▶ व्यक्तित्व सहज और सरल नहीं है

समीर का दृष्टिकोण द्वंद्व से भरा हुआ है। वह अपनी माँ और बहनों के मामले में पारंपरिक मूल्यों का समर्थन करता है और उनके लिए देसी संस्कृति को उचित मानता है। लेकिन जब बात अपने जीवन की आती है, तो वह पश्चिमी मूल्यों को अपनाने में कोई संकोच नहीं करता। यह उसकी सोच में मौजूद पाखंड को उजागर करता है। अपने परिवार की महिलाओं के लिए वह एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण रखता है, जबकि अपने जीवन में पूरी तरह से आधुनिकता और स्वतंत्रता चाहता है। यह दोहरा रवैया उसके चरित्र की कमजोरी को दर्शाता है।

▶ द्वंद्व से भरा दृष्टिकोण

समीर का व्यवहार स्पष्ट रूप से उसकी अपरिपक्वता को दर्शाता है। वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ है और गुस्से में आकर अनियंत्रित हो जाता है। अपनी पत्नी जिल के साथ उसका दुर्व्यवहार इस बात का प्रमाण है कि वह एक संतुलित और परिपक्व व्यक्ति नहीं है। विवाह जैसी महत्वपूर्ण संस्था में उसे समझदारी और संयम की आवश्यकता होती है, लेकिन समीर इसे अपनाने में विफल रहता है। वह छोटी-छोटी बातों पर उत्तेजित हो जाता है और अपने क्रोध को नियंत्रित नहीं कर पाता, जिससे उसका वैवाहिक जीवन प्रभावित होता है।

▶ संतुलित और परिपक्व व्यक्ति नहीं

समीर की सबसे बड़ी कमजोरी उसका स्वार्थी स्वभाव है। वह केवल अपने बारे में सोचता है और दूसरों की भावनाओं का सम्मान नहीं करता। उसकी माँ और पत्नी, दोनों ही उसके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, लेकिन वह उनकी भावनाओं की कद्र नहीं करता। अपने निर्णयों में वह हमेशा खुद को प्राथमिकता देता है और दूसरों की परेशानियों को नजरअंदाज करता है। यह स्वार्थी दृष्टिकोण उसे एक नकारात्मक व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

▶ स्वार्थी स्वभाव

समीर का हिंसक स्वभाव उसके व्यक्तित्व की सबसे नकारात्मक विशेषता है। वह न केवल अपनी पत्नी जिल के साथ दुर्व्यवहार करता है, बल्कि अपनी माँ पर भी हाथ उठाने में संकोच नहीं करता। इसके अलावा, नीरा के प्रति उसका व्यवहार भी असभ्य और आक्रामक है। यह दर्शाता है कि वह महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना नहीं रखता और क्रोध में अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सकता। यह हिंसा उसकी असंवेदनशीलता और चरित्र की क्रूरता को उजागर करती है।

▶ हिंसक स्वभाव

समीर एक ऐसा पात्र है, जिसका व्यक्तित्व जटिलता, द्वंद्व, स्वार्थ और क्रूरता से भरा हुआ है। उसका व्यवहार दर्शाता है कि वह अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने और अपने रिश्तों को सही तरीके से निभाने में असमर्थ है। उसका दोहरा मापदंड, अपरिपक्वता, स्वार्थ और हिंसा उसे एक असंतुलित व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। समीर का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि जब व्यक्ति अपने अंदर के अंतर्विरोधों को हल नहीं कर पाता, तो वह न केवल अपने जीवन को बल्कि अपने आसपास के लोगों के जीवन को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

▶ जटिलता, द्वंद्व, स्वार्थ और क्रूरता से भरा व्यक्तित्व

▶ **नीरा**

नीरा एक आधुनिक महिला है जो अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए खड़ी होती है। वह अपने जीवन को अपने तरीके से जीने में विश्वास रखती है और समाज के बनाए हुए परंपरागत नियमों से बंधी नहीं रहना चाहती। आधुनिकता की इस भावना के कारण वह आत्मनिर्भर बनने और अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करती है। वह चाहती है कि समाज उसे केवल एक पुरुष के सहारे रहने वाली महिला के रूप में न देखे, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में स्वीकार करे। उसकी यह सोच उसे एक सशक्त महिला बनाती है, जो अपनी शर्तों पर जीवन जीने में विश्वास रखती है।

▶ अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के लिए खड़ी होती है

हालाँकि, नीरा का यह आत्मनिर्भरता का भाव उसे स्वार्थी भी बना देता है। वह केवल अपने बारे में सोचती है और दूसरों की भावनाओं की अधिक परवाह नहीं करती। इसका सबसे बड़ा उदाहरण तब देखने को मिलता है जब वह समीर के घर में रहने के लिए उसकी माँ का अपमान करने से भी नहीं हिचकिचाती। एक महिला होकर भी वह दूसरी महिला के सम्मान की परवाह नहीं करती, बल्कि अपने स्वार्थ के लिए उसे तुच्छ समझती है। यह दर्शाता है कि उसकी स्वतंत्रता और अधिकारों की लड़ाई केवल अपने लिए है, न कि सभी महिलाओं के लिए। इस स्वार्थी स्वभाव के कारण वह कई बार दूसरों के प्रति असंवेदनशील हो जाती है।

▶ आत्मनिर्भरता का भाव

नीरा का व्यक्तित्व केवल आधुनिकता और स्वार्थ तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक चालाक महिला भी है। उसे यह भली-भाँति पता है कि अपनी बातों से लोगों को कैसे प्रभावित किया जाए। वह अपने शब्दों की शक्ति का इस्तेमाल करके समीर को अपनी ओर आकर्षित करती है। उसकी वाणी और हाव-भाव में एक ऐसी शक्ति होती है, जिससे समीर उसके प्रति आकर्षित हो जाता है। उसकी चालाकी केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह परिस्थितियों का भी लाभ उठाने में सक्षम होती है। उसे अपने फायदे और नुकसान की अच्छी समझ होती है, जिससे वह अपनी योजनाओं को सफलता पूर्वक लागू कर पाती है।

▶ चालाक महिला

अतः नीरा एक जटिल व्यक्तित्व की महिला है, जो आधुनिक सोच रखती है, लेकिन अपने स्वार्थ और चालाकी के कारण कभी-कभी नैतिकता की सीमाओं को लांघ जाती है। उसकी स्वतंत्रता की चाह सराहनीय है, लेकिन उसके स्वार्थी और चालाक व्यवहार उसे एक विरोधाभासी चरित्र बना देते हैं।

अन्य पात्र

मनुष्य के जीवन में रिश्तों का अत्यधिक महत्व होता है, परंतु जब ये रिश्ते स्वार्थ, रूढ़िवादिता और अन्याय की जंजीरों में जकड़े होते हैं, तब व्यक्ति के संघर्ष का आरंभ होता है। सीमा का जीवन भी इसी संघर्ष की कहानी को दर्शाता है। उसका पति एक रूढ़िवादी और स्वार्थी व्यक्ति है, जो अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति कोई ज़िम्मेदारी नहीं निभाता। ऐसी स्थिति में, सीमा के जीवन में संघर्ष और स्वतंत्रता की खोज स्वाभाविक हो जाती है।

▶ सीमा के पति

सीमा एक विवाहित महिला है, लेकिन उसके पति का स्वार्थी स्वभाव उसके जीवन को कठिन बना देता है। परिवार के प्रति उदासीनता और ज़िम्मेदारियों से बचने की प्रवृत्ति के कारण सीमा को अकेले ही घर और बच्चों की देखभाल करनी पड़ती है। ऐसे में वह न केवल मानसिक बल्कि आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का भी सामना करती है। उसका पति, जो पुरुषवादी सोच का प्रतीक है, उसे केवल एक गृहिणी के रूप में देखता है और उसके आत्मसम्मान की कोई परवाह नहीं करता।

▶ परिवार के प्रति उदासीनत

► **जिलः पहली पत्नी**

> ► सुशील और घरेलू महिला

समीर की पहली पत्नी जिल एक सुशील और घरेलू महिला है, जो अपने पति से गहरा प्रेम करती है। उसने अपने परिवार को सँभालने के लिए अपने व्यक्तिगत सपनों को त्याग दिया। लेकिन समीर की स्वार्थपरता और बेवफाई ने उसे भावनात्मक रूप से तोड़ दिया। उसके लिए समीर से प्रेम करना और उसका विश्वासघात सहन करना बहुत कठिन हो गया। वह उस समाज का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ महिलाएँ अपने पतियों के प्रति निष्ठावान रहती हैं, लेकिन बदले में उन्हें केवल दुःख ही मिलता है।

► **बेलाः एक महत्वाकांक्षी महिला**

> ► पढ़ी-लिखी और महत्वाकांक्षी

समीर की दूसरी पत्नी बेला, जिल से भिन्न है। वह पढ़ी-लिखी और महत्वाकांक्षी है। उसने अपने जीवन में खुद को सशक्त बनाया है और अपने फैसले स्वयं लिए हैं। बेला को अपने आत्म-सम्मान की परवाह है और वह अपने जीवन में केवल भावनाओं के आधार पर निर्णय नहीं लेती। उसकी सोच आधुनिक है और वह यह मानती है कि महिला को अपने अधिकारों के लिए स्वयं खड़ा होना चाहिए।

► **सीमा की बेटी**

> ► आधुनिक और स्वतंत्र सोच वाली महिला

सीमा की बेटी अपनी माँ के संघर्ष को देखकर बड़ी होती है। वह आधुनिक और स्वतंत्र सोच वाली महिला है, जो जानती है कि महिलाओं के अधिकारों की रक्षा कैसे की जाए। उसकी माँ ने जिस कठिनाइयों का सामना किया, वह नहीं चाहती कि दूसरी महिलाएँ भी उसी पीड़ा से गुज़रें। वह अपनी माँ को साहस देती है और उसे अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देती है। उसकी सोच दर्शाती है कि नई पीढ़ी की महिलाएँ अब अन्याय को सहन करने के बजाय उसका विरोध करने के लिए तैयार हैं।

> ► नई सोच और सकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक

सीमा, जिल, बेला और सीमा की बेटी - ये सभी पात्र समाज में विभिन्न प्रकार की महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। कुछ परंपराओं की बेड़ियों में जकड़ी हैं, तो कुछ ने खुद को सशक्त किया है। सीमा का संघर्ष यह दर्शाता है कि महिलाएँ अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठा रही हैं। नई पीढ़ी की महिलाएँ अपनी माँ की पीड़ा को देखकर सशक्त बन रही हैं और एक स्वतंत्र और सम्मानजनक जीवन की ओर बढ़ रही हैं। यही बदलाव समाज में एक नई सोच और सकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो उसमें व्याप्त बुराइयों और अच्छाइयों को उजागर करता है। 'साँकल' कहानी भी इसी सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें एक माँ, सीमा और उसके बेटे, समीर, के जटिल संबंधों को दर्शाया गया है। यह कहानी घरेलू हिंसा, पारिवारिक मूल्यों और महिला सशक्तिकरण जैसे गंभीर विषयों को उजागर करती है। माँ और बेटे का संबंध प्रेम, त्याग और समर्पण पर आधारित होता है, लेकिन 'साँकल' में इस रिश्ते की एक विकृत छवि प्रस्तुत की गई है। सीमा अपने बेटे समीर से असीम प्रेम करती है, लेकिन बदले में उसे केवल उपेक्षा और दुर्व्यवहार ही मिलता है। यह कहानी माँ की ममता और बेटे की निष्ठुरता के बीच के संघर्ष को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती है। समीर का अपनी माँ के साथ दुर्व्यवहार न केवल उसकी क्रूरता को दिखाता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार कुछ लोग अपने परिवार के मूल्यों को भूल जाते हैं। कहानी घरेलू हिंसा की समस्या को उजागर करती है और यह दर्शाती है कि किस प्रकार एक माँ को अपने ही बेटे के अत्याचार सहने पड़ते हैं। सीमा अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करती है, लेकिन वह हार नहीं मानती। समीर के दुर्व्यवहार के बावजूद वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती है और अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करती है। यह संघर्ष समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके आत्मसम्मान की लड़ाई को दर्शाता है। समीर अपनी माँ और बहनों के प्रति रूढ़िवादी सोच रखता है, लेकिन अपनी निजी जिंदगी में पश्चिमी मूल्यों को अपनाता है। यह दोहरापन समाज में व्याप्त उन मानसिकताओं को दर्शाता है, जो महिलाओं को दबाने का प्रयास करती हैं, लेकिन स्वयं आधुनिकता का दिखावा करती हैं। कहानी केवल एक माँ के दर्द को ही नहीं दर्शाती, बल्कि यह भी प्रेरित करती है कि महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। सीमा का अपनी बेटी को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास नारी सशक्तिकरण का प्रतीक है। 'साँकल' कहानी समाज को घरेलू हिंसा के खिलाफ जागरूक करने और पारिवारिक मूल्यों को समझने के लिए प्रेरित करती है। यह संदेश देती है कि महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना चाहिए और कभी भी अन्याय को सहन नहीं करना चाहिए। यह कहानी केवल एक माँ के संघर्ष की नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त उन बुराइयों की ओर संकेत करती है, जिन्हें हमें मिलकर समाप्त करना चाहिए।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. नूरी की पहचान की खोज क्या है और वह कैसे अपने परिवार और समुदाय के बीच अपनी पहचान की खोज में संघर्ष करती है?
2. 'सांकल' कहानी में परंपरा और आधुनिकता के संघर्ष को कैसे दर्शाया गया है?
3. नूरी की स्वतंत्रता और आत्म-विश्वास की खोज कैसे कहानी के मुख्य विषयों में से एक है? कहानी में इस विषय को कैसे दर्शाया गया है और इसके क्या परिणाम होते हैं?
4. 'सांकल' कहानी में मुस्लिम समुदाय की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को कैसे दर्शाया गया है?
5. जाकिया जुबेरी की लेखन शैली और भाषा की विशेषताएं 'सांकल' कहानी में क्या हैं?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. जाकिया जुबेरी, (2018). सांकल - नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
2. रामविलास शर्मा, (2008). हिन्दी उपन्यास का इतिहास - नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
3. शहाबुद्दीन (2015). मुस्लिम साहित्य की पहचान - नई दिल्लीः अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. भारद्वाज, मैना (2012). नारीवादी साहित्य की आलोचना - नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
5. कमलेश्वर (2005). हिन्दी कहानी का विकास - नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. मुस्लिम साहित्य की पहचान - शहाबुद्दीन
2. नारीवादी साहित्य की आलोचना - मैना भारद्वाज
3. हिन्दी कहानी का विकास - कमलेश्वर
4. साहित्य और समाज - राजेंद्र यादव

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 5

देह की कीमत (तेजेंद्र शर्मा)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की विशेषताएँ और इसके विकास को समझता है
- दलित समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझता है
- सामाजिक न्याय और समानता की आवश्यकता की समझता है
- दलित समुदाय की स्थिति के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति को समझता है
- कहानी के पात्रों और घटनाओं का विश्लेषण करने की क्षमता जान सकता है

Background / पृष्ठभूमि

'देह की कीमत' एक महत्वपूर्ण दलित साहित्यिक रचना है, जो समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, आर्थिक शोषण और सामाजिक अन्याय को उजागर करती है। इस कहानी के माध्यम से दलित समुदाय की पीड़ा, संघर्ष और उनके अधिकारों की अनदेखी को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। दलित साहित्य भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण भाग है, जो मुख्य रूप से हाशिए पर पड़े समाज की पीड़ा, शोषण, संघर्ष और सामाजिक परिवर्तन को अभिव्यक्त करता है। यह साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम न होकर एक सामाजिक आंदोलन भी है। दलित साहित्य का विकास 20वीं शताब्दी में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के सामाजिक न्याय और समानता के विचारों से प्रेरित होकर हुआ। इसने हाशिए पर पड़े समुदाय की वास्तविकताओं को साहित्य के केंद्र में लाने का कार्य किया। भारत में दलित समुदाय लंबे समय से जातिगत भेदभाव और सामाजिक बहिष्करण का शिकार रहा है। शिक्षा, रोज़ागार और सामाजिक प्रतिष्ठा के अभाव में यह वर्ग आर्थिक रूप से भी कमजोर रहा है। हालाँकि, संवैधानिक अधिकारों और सामाजिक आंदोलनों ने दलित समुदाय को अपनी स्थिति सुधारने के अवसर दिए हैं, लेकिन आज भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। 'देह की कीमत' जैसी रचनाएँ सामाजिक न्याय और समानता की अनिवार्यता को रेखांकित करती हैं। यह कहानी न केवल दलितों की कठिनाइयों को दर्शाती है, बल्कि समाज को आत्ममंथन करने और भेदभाव मिटाने की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक न्याय का अर्थ केवल कानूनी अधिकारों की प्राप्ति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्वीकृति, सम्मान और गरिमा के साथ जीवन जीने के अधिकार की माँग भी करता है। इस कहानी को पढ़ने से पाठकों में दलित समुदाय की पीड़ा और उनके संघर्षों के प्रति संवेदनशीलता और सहानुभूति का विकास होता है। यह समाज के विभिन्न तबकों के बीच सहानुभूति और समझ को बढ़ाने का कार्य करता है। 'देह की कीमत' में वर्णित पात्र और घटनाएँ समाज

की वास्तविक स्थितियों को दर्शाती हैं। पात्रों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि जातिवाद और भेदभाव केवल बाहरी संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि वे मानसिकता और सामाजिक व्यवस्था में गहराई से जड़ें जमा चुके हैं। इस अध्ययन के माध्यम से छात्र न केवल दलित साहित्य को बेहतर समझ सकते हैं, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं के प्रति जागरूक होकर सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान दे सकते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दलित साहित्य, बेरोज़ागारी, जाति प्रथा, संवैधानिक अधिकारों, आर्थिक उदारीकरण, दलित विमर्श, गरीबी उन्मूलन, अस्तित्व की लड़ाई, आत्ममंथन

Discussion / चर्चा

3.5.1 तेजेंद्र शर्मा

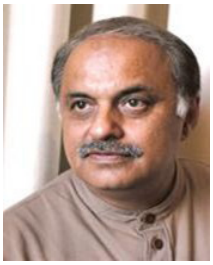

▶ विषयों की व्यापकता एवं सामयिकता

तेजेंद्र शर्मा समकालीन हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख रचनाकारों में से एक हैं। उनका जन्म 21 अक्तूबर 1952 को पंजाब के जगरावाँ में हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। उनकी कहानियाँ समाज की वास्तविकता को उजागर करती हैं तथा उनमें पात्रों की गहरी संवेदनाएँ झलकती हैं। वे परिवेश से पात्रों का चयन कर उन्हें कथा के माध्यम से जीवंत कर देते हैं। उनकी कहानियों में विषयों की व्यापकता एवं सामयिकता प्रमुख विशेषताएँ हैं। कथा साहित्य में शिल्प एवं शैली के स्तर पर हुए परिवर्तनों की झलक भी उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है।

साहित्यिक योगदानः तेजेंद्र शर्मा ने न केवल साहित्य के क्षेत्र में योगदान दिया बल्कि दूरदर्शन के लिए लोकप्रिय धारावाहिक 'शांति' का लेखन भी किया। उन्होंने अन्नु कपूर निर्देशित फ़िल्म 'अमय' में नाना पाटेकर के साथ अभिनय किया। वे हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान 'अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान' प्रदान करने वाली संस्था 'कथा यू. के.' के सचिव भी हैं। उनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य में एक विशेष स्थान रखती हैं।

प्रकाशित कृतियाँः तेजेंद्र शर्मा ने अनेक कहानी संग्रह और कविता संग्रह प्रकाशित किए हैं। उनकी प्रमुख प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं:

कहानी संग्रहः काला सागर (1990), ढिबरी टाइट (1994), देह की कीमत (1999), यह क्या हो गया (2003), पासपोर्ट के रंग (2006), बेघर आँखें (2007)

कविता संग्रहः ये घर तुम्हारा है... (2007)

अनूदित कृतियाँः पंजाबी में: ढिबरी टाइ, उर्दू में: इँटों का जंगल, नेपाली में: पासपोर्ट का रंगहरू, अंग्रेज़ी पुस्तकें: तीन पुस्तकें प्रकाशित हैं। वे इंग्लैंड से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'पुरवाई' का भी दो वर्षों तक संपादन कर चुके हैं।

सम्मान एवं पुरस्कारः तेजेंद्र शर्मा को उनके साहित्यिक योगदान के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनको प्राप्त प्रमुख पुरस्कार निम्नलिखित हैं: ढिबरी टाइट के लिए महाराष्ट्र राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार (1995), (प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रदान किया गया।), सहयोग फ़ाउंडेशन का युवा साहित्यकार पुरस्कार (1998), सुपथगा सम्मान (1987), कृति यू. के. द्वारा वर्ष 2002 के लिए 'बेघर आँखें' को सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार, प्रथम संकल्प साहित्य सम्मान, दिल्ली (2007), तितली बाल पत्रिका साहित्य सम्मान, बरेली (2007), भारतीय उच्चायोग द्वारा डॉ. हरिवंश राय बच्चन सम्मान (2008)हरियाणा साहित्य अकादमी सम्मान, प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण सम्मान भी प्राप्त हुआ है।

► अनगिनत पुरस्कारों से सम्मानित

► भाषा की सहजता, शैली की नवीनता और विषयों की विविधता

तेजेंद्र शर्मा हिन्दी कथा साहित्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उनकी कहानियाँ समाज की सच्चाई को उजागर करने के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को गहराई से प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं में भाषा की सहजता, शैली की नवीनता और विषयों की विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वे केवल लेखक ही नहीं, बल्कि एक कुशल संपादक, पटकथा लेखक और अभिनेता भी रहे हैं। हिन्दी साहित्य में उनके योगदान को सदैव स्मरण किया जाएगा।

3.5.2 कथावस्तु

► एक मर्मस्पर्शी कहानी

'देह की कीमत' तेजेंद्र शर्मा द्वारा लिखित एक मर्मस्पर्शी कहानी है, पम्मी उर्फ परमजीत कौर के जीवन की यह कहानी उसके संघर्ष, प्रेम, विश्वासघात और सामाजिक बंधनों से जूझने की मार्मिक कथा है। कहानी की शुरुआत पम्मी के अपने कमरे में उदास बैठने से होती है, जहाँ उसकी नजरें अपने मृत पति हरदीप की अस्थियों के कलश पर टिकी हैं। उसका दो साल का बेटा पास में सो रहा है और कमरे में गहरी शांति फैली हुई है, जो उसके मन में चल रहे तूफान से बिल्कुल विपरीत है।

► हरदीप, पम्मी

कहानी फ्लैशबैक में जाती है, जहाँ हरदीप, जो एक अमीर परिवार से है, पहली बार पम्मी को एक शादी में देखता है और उससे विवाह करने का निर्णय लेता है। पम्मी एक साधारण परिवार से आती है और उनके सामाजिक स्तर में बड़ा अंतर होता है। हरदीप के परिवार को इस विवाह से आपत्ति होती है, लेकिन उसकी जिद के आगे वे झुक जाते हैं। पम्मी के माता-पिता अपनी बेटी की शादी एक समृद्ध परिवार में और जापान में काम करने वाले व्यक्ति से होने के कारण बहुत प्रसन्न होते हैं। उन्हें लगता है कि यह उनकी बेटी के उज्ज्वल भविष्य का एक सुनहरा अवसर है।

शादी के बाद, पम्मी के ससुराल वाले उससे खुश रहते हैं, लेकिन हरदीप का सपना

▶ विदेश जाकर खूब पैसा कमाने का सपना

विदेश जाकर खूब पैसा कमाने का होता है। उसने पहले भी गैरकानूनी रूप से जापान जाकर काम किया था और पैसे कमाकर लाया था, जिससे उसके मन में यह धारणा बन चुकी थी कि यह रास्ता ही उसके सपनों को पूरा कर सकता है। वह एयरलाइन में नौकरी पाने की कोशिश करता है, लेकिन असफल होने पर निराश हो जाता है और गुस्से में अपने बाल कटवा लेता है, जिससे उसके पिता, दारजी, बहुत आहत होते हैं।

▶ हरदीप जापान चला जाता है

हरदीप के विदेश जाने की जिद के कारण पम्मी चिंतित हो उठती है। वह गर्भवती होती है और चाहती है कि उसके बच्चे के जन्म के समय उसका पति उसके साथ हो, लेकिन हरदीप उसकी भावनाओं की परवाह किए बिना जापान चला जाता है। वहाँ वह अन्य अवैध प्रवासियों के साथ रहता है, जिनमें से कुछ अपनी पत्नियों का इंतजार कर रहे होते हैं, तो कुछ जापानी महिलाओं से विवाह कर कानूनी दर्जा प्राप्त करने की कोशिश कर रहे होते हैं।

▶ जापान में छोटे-मोटे काम करता है

हरदीप जापान में छोटे-मोटे काम करता है- कुली का काम, रेस्टोरेंट में बर्तन धोना- लेकिन वह अपने परिवार को यह भ्रम देता है कि वह अच्छी नौकरी कर रहा है। उसकी माँ, बीजी, विदेशी चीज़ों की दीवानी होती है और चाहती है कि उसका बेटा एक जापानी लड़की से शादी कर ले। पम्मी इस बात को लेकर डरी हुई रहती है कि कहीं हरदीप उसे छोड़ न दे।

▶ कार दुर्घटना में मारा जाता है

एक दिन, अचानक हरदीप का फोन आना बंद हो जाता है। पम्मी बेचैन हो उठती है, लेकिन बीजी उसे समझाती है कि घबराने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन पम्मी के दिल में कुछ गलत होने की आशंका बनी रहती है। उसी दौरान, जापान में हरदीप को चक्कर आता है और वह एक कार दुर्घटना में मारा जाता है। उसके दोस्त उसकी लाश को भारत भेजने की कोशिश करते हैं, लेकिन उन्हें पता चलता है कि यह बहुत महंगा पड़ेगा।

▶ बेटे की मृत्यु का ज़िम्मेदार ठहराती है

भारतीय दूतावास के अधिकारी नवजोत सिंह की मदद से, हरदीप का अंतिम संस्कार जापान में ही कर दिया जाता है और उसके दोस्तों द्वारा इकट्ठा किए गए पैसे पम्मी को भेज दिए जाते हैं। जब यह समाचार भारत में पहुँचता है, तो परिवार में कोहराम मच जाता है। पम्मी इस दुःख से टूट जाती है, लेकिन उसे अपने ससुराल वालों के गुस्से और तिरस्कार का भी सामना करना पड़ता है। बीजी उसे अपने बेटे की मृत्यु का ज़िम्मेदार ठहराती है और उसके देवर भी उसके प्रति निर्दयी हो जाते हैं।

▶ पुनर्विवाह का सुझाव

दारजी, जो हमेशा पम्मी को बेटी की तरह मानते थे, उसके भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए प्रयास करते हैं। वे पम्मी के पुनर्विवाह का सुझाव देते हैं, लेकिन बीजी इसका विरोध करती है। वह चाहती है कि उसका दूसरा बेटा कुलदीप, पम्मी से शादी कर ले, ताकि परिवार की संपत्ति परिवार में ही बनी रहे।

▶ जीवन की हर चुनौती से जूझने के लिए तैयार

पम्मी इस प्रस्ताव से स्तब्ध रह जाती है। अपने पति की मृत्यु के बाद, वह अपने भविष्य को लेकर असमंजस में पड़ जाती है। वह समाज की अपेक्षाओं, विधवा होने के बोझ और अपने बेटे की परवरिश के संघर्षों से घिर जाती है। लेकिन वह एक मज़बूत

और आत्मनिर्भर महिला है, जो अपने जीवन की हर चुनौती से जूझने के लिए तैयार है।

यह कहानी केवल पम्मी के व्यक्तिगत संघर्ष की नहीं, बल्कि समाज की उन रूढ़ियों की भी बात करती है, जो एक विधवा स्त्री को स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार नहीं देतीं। यह पारिवारिक रिश्तों, सामाजिक अपेक्षाओं और जीवन की कठिनाइयों का एक संवेदनशील चित्रण है। पम्मी की यात्रा सिर्फ दुःख और संघर्ष तक सीमित नहीं रहती; वह अपने जीवन की नई राह तलाशने के लिए प्रतिबद्ध होती है, जहाँ वह केवल एक विधवा नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र नारी के रूप में पहचानी जाए।

▶ समाज विधवा स्त्री को स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार नहीं देता

3.5.3 पात्र एवं चरित्र चित्रण

▶ **परमजीत कौर (पम्मी)**

परमजीत कौर, जिसे प्रेम से पम्मी कहा जाता है, इस कहानी की मुख्य पात्र है। वह हरदीप की पत्नी और एक छोटे बच्चे की माँ है। पम्मी एक सुंदर, पढ़ी-लिखी और संवेदनशील महिला है, जो अपने परिवार के प्रति गहरी ज़िम्मेदारी और प्रेम की भावना रखती है। उसका जीवन शुरुआत में खुशहाल प्रतीत होता है, लेकिन जैसे-जैसे परिस्थितियाँ बदलती हैं, वह अनेक संघर्षों का सामना करती है।

▶ कहानी की मुख्य पात्र

पम्मी को अपने पति हरदीप के अवैध कार्यों की जानकारी होती है, जिससे वह अत्यंत चिंतित और दुःखी रहती है। एक आदर्शवादी और नैतिक मूल्यों में विश्वास रखने वाली महिला होने के कारण, वह अपने पति की गलत राह को लेकर मन ही मन व्यथित रहती है। उसके भीतर अपने पति को सही राह दिखाने की चाह होती है, लेकिन परिस्थितियाँ उसके अनुकूल नहीं होतीं।

▶ आदर्शवादी और नैतिक मूल्यों में विश्वास रखने वाली

हरदीप की मृत्यु के बाद पम्मी के जीवन में और भी अधिक कठिनाइयाँ आ जाती हैं। जिन परिजनों और संबंधियों से उसे सहानुभूति और समर्थन की अपेक्षा थी, वे स्वार्थी व्यवहार दिखाते हैं। परिवार के इस व्यवहार से पम्मी को मानसिक और भावनात्मक आघात पहुँचता है। लेकिन वह एक दृढ़ निश्चयी महिला है, जो इन विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती।

▶ मानसिक और भावनात्मक आघात पहुँचता है

पम्मी की यह कहानी एक महिला के धैर्य, आत्म-सम्मान और संघर्षशीलता को दर्शाती है। उसका चरित्र हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, नैतिकता और सच्चाई का दामन कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

▶ **हरदीप**

हरदीप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, जो अपने जीवन को ऐशो-आराम से भरने का सपना देखता था। वह परमजीत का पति था और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अवैध रूप से जापान में काम कर रहा था। उसकी महत्वाकांक्षाएँ बड़ी थीं, लेकिन इनको पूरा करने के लिए उसने जोखिम भरे रास्ते चुने।

▶ महत्वाकांक्षी व्यक्ति

पैसा कमाने की उसकी तीव्र इच्छा ने उसे अपने परिवार और उनकी भावनाओं

से दूर कर दिया। वह अपनी पत्नी और परिवार के प्रति लापरवाह था और उनकी भावनाओं की अधिक परवाह नहीं करता था। उसकी प्राथमिकता केवल धन अर्जित करना था, भले ही इसके लिए उसे अनैतिक या अवैध रास्तों का सहारा क्यों न लेना पड़े।

▶ पत्नी और परिवार के प्रति लापरवाह

हालांकि, उसकी यह लालसा अंततः एक त्रासदी में बदल गई। जापान में काम करते हुए, एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। यह घटना न केवल उसके जीवन का दुःखद अंत थी, बल्कि उसके परिवार के लिए भी एक गहरा आघात लेकर आई। परमजीत, जो उसके साथ जीवन के सुखद भविष्य के सपने देख रही थी, अचानक अकेली रह गई।

हरदीप की कहानी महत्वाकांक्षा और लापरवाही के बीच के संतुलन को दर्शाती है। यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है, जो केवल भौतिक सुखों के पीछे भागते हैं और अपने परिवार तथा उनकी भावनाओं की अनदेखी करते हैं। जीवन में सफलता महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे पाने के लिए नैतिकता और ज़िम्मेदारी को त्यागना अंततः विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

▶ **दारजी**

दारजी, हरदीप के पिता और परमजीत के ससुर, एक समझदार, सहानुभूतिपूर्ण और न्यायप्रिय व्यक्ति हैं। उनके व्यक्तित्व में धैर्य, स्नेह और न्याय की भावना स्पष्ट रूप से झलकती है

▶ समझदार, सहानुभूतिपूर्ण और न्यायप्रिय व्यक्ति

परमजीत के प्रति उनका व्यवहार अत्यंत स्नेहमय और सहानुभूतिपूर्ण है। वह न केवल उसे अपने परिवार का अभिन्न अंग मानते हैं, बल्कि हर परिस्थिति में उसका साथ भी देते हैं। उनका संवेदनशील और करुणामयी स्वभाव यह दर्शाता है कि वह हर सदस्य के प्रति निष्पक्ष और न्यायसंगत व्यवहार रखते हैं।

▶ परिवार की एकता और प्रेम बनाए रखने की तीव्र इच्छा

हालाँकि, दारजी अपने परिवार के स्वार्थी व्यवहार से अत्यंत दुःखी हैं। उन्हें यह देखकर कष्ट होता है कि उनके परिवार के कुछ सदस्य केवल अपने निजी हितों को प्राथमिकता देते हैं और दूसरों की भावनाओं की परवाह नहीं करते। उनके भीतर परिवार की एकता और प्रेम बनाए रखने की तीव्र इच्छा है, लेकिन उनके स्वार्थी स्वभाव के कारण यह संभव नहीं हो पाता। फिर भी, वह अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए हर परिस्थिति का सामना धैर्य और विवेक के साथ करते हैं।

इस प्रकार, दारजी का चरित्र एक आदर्श पुरुष का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो न केवल अपने परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ हैं, बल्कि सहानुभूति और न्याय की भावना से भी परिपूर्ण हैं। उनका व्यक्तित्व हमें सिखाता है कि सच्चा प्रेम और न्याय ही किसी भी संबंध को मज़बूत बनाए रखने की नींव होते हैं।

▶ **बीजी**

बीजी, हरदीप की माँ और परमजीत की सास, एक भौतिकवादी और संकीर्ण

मानसिकता वाली महिला हैं। उनका व्यक्तित्व अत्यधिक स्वार्थी और पारंपरिक रूढ़ियों से प्रभावित है, जो उनके व्यवहार और निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परिवार के भीतर उनकी उपस्थिति एक कठोर और अनुशासनात्मक छवि प्रस्तुत करती है, जो प्रेम और सौहार्द्र से अधिक भय और असंतोष उत्पन्न करती है।

▶ संकीर्ण मानसिकता वाली महिला

बीजी की सोच अत्यधिक भौतिकवादी है। धन और संपत्ति के प्रति उनका झुकाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वह हर परिस्थिति को आर्थिक दृष्टि से परखती हैं और अधिकांश निर्णय इस आधार पर लेती हैं कि इससे उन्हें कितना लाभ मिलेगा। उनका यह व्यवहार न केवल परिवार के अन्य सदस्यों के लिए कठिनाई उत्पन्न करता है, बल्कि संबंधों में भी खटास लाता है।

▶ भौतिकवादी

परमजीत के प्रति उनका व्यवहार अत्यधिक कठोर और अन्यायपूर्ण है। वह उसे अशुभ मानती हैं और इस कारण उसके साथ हमेशा बुरा व्यवहार करती हैं। बिना किसी ठोस कारण के, वह परमजीत को नीचा दिखाने और उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करने का कोई अवसर नहीं छोड़तीं। उनकी यह मानसिकता न केवल उनके संकीर्ण दृष्टिकोण को दर्शाती है, बल्कि यह भी सिद्ध करती है कि वह पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासों में विश्वास रखती हैं।

▶ पुरानी रूढ़ियों और अंधविश्वासों में विश्वास रखने वाली

कुल मिलाकर, बीजी एक स्वार्थी, कठोर और संकीर्ण मानसिकता वाली महिला हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य धन और लाभ प्राप्त करना है। उनके भौतिकवादी दृष्टिकोण और पारंपरिक सोच ने उन्हें संवेदनशीलता और प्रेम से दूर कर दिया है, जिससे उनके पारिवारिक संबंध प्रभावित होते हैं।

▶ **कुलदीप और गुरप्रीत**

कुलदीप और गुरप्रीत, हरदीप के भाई, अपने व्यक्तित्व और स्वभाव के कारण नकारात्मक छवि प्रस्तुत करते हैं। वे स्वार्थी और लालची प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं, जो केवल अपने हितों की पूर्ति के लिए कार्य करते हैं। उनके आचरण से यह स्पष्ट होता है कि उनके लिए रिश्तों की तुलना में धन और संपत्ति अधिक महत्वपूर्ण है।

हरदीप एक सरल, स्नेही और पारिवारिक व्यक्ति था, जिसने अपने जीवन में सदैव अपने परिवार की भलाई के लिए कार्य किया। दुर्भाग्यवश, उसकी असमय मृत्यु के बाद, उसके भाई कुलदीप और गुरप्रीत ने अपनी वास्तविक प्रवृत्ति का परिचय दिया। वे न केवल हरदीप की संपत्ति पर अधिकार जमाने के लिए तत्पर हुए, बल्कि अपने स्वार्थ के कारण नैतिक मूल्यों की भी अवहेलना करने लगे।

▶ स्वार्थी और लालची प्रवृत्ति के व्यक्ति

लालच एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो मनुष्य को अपने कर्तव्यों और रिश्तों से विमुख कर सकती है। कुलदीप और गुरप्रीत इसी लालच की छाया में अपनी नैतिकता खो बैठे। उन्होंने हरदीप की संपत्ति को हथियाने के लिए तरह-तरह के षड्यंत्र रचे और अपने स्वार्थ को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनके इस आचरण से यह स्पष्ट होता है कि जब स्वार्थ और लालच मनुष्य के जीवन में प्रवेश कर जाते हैं, तो वे संबंधों की

स्वार्थ और लालच संबंधों की पवित्रता को नष्ट करते हैं

पवित्रता को नष्ट कर देते हैं।

समाज में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं, जहाँ पारिवारिक संबंधों में लालच और स्वार्थ की वजह से कटुता उत्पन्न हो जाती है। कुलदीप और गुरप्रीत जैसे पात्र हमें यह सिखाते हैं कि भौतिक सुख-संपत्ति के पीछे भागने से पहले नैतिक मूल्यों और पारिवारिक प्रेम को प्राथमिकता देनी चाहिए। सच्चे रिश्ते केवल प्रेम, विश्वास और परस्पर सहयोग पर आधारित होते हैं, न कि संपत्ति और स्वार्थ पर।

▶ **सरदार वरयाम सिंह और सुरजीत कौर**

सरदार वरयाम सिंह और सुरजीत कौर परमजीत के माता-पिता हैं, जो अपनी बेटी से अपार स्नेह रखते हैं। वे न केवल माता-पिता की भूमिका निभाते हैं, बल्कि हर परिस्थिति में अपनी संतान के प्रति चिंता और समर्थन भी प्रकट करते हैं।

▶ परमजीत को अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी

अपने पूरे जीवन में उन्होंने परमजीत को अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी, जिससे वह एक सशक्त और आत्मनिर्भर महिला बनी। वे उसकी खुशियों और दुःखों से गहराई से जुड़े हुए हैं। जब उन्हें अपनी बेटी के ससुराल पक्ष के स्वार्थी व्यवहार का आभास हुआ, तो वे अत्यंत दुःखी हो गए। उन्होंने यह कभी नहीं चाहा था कि उनकी बेटी किसी भी प्रकार की पीड़ा सहे। अपने माता-पिता के रूप में, वे हमेशा उसके हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहते हैं और हर संभव सहायता प्रदान करते हैं।

उनकी चिंता और सहयोग यह दर्शाता है कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए किसी भी परिस्थिति में अडिग खड़े रहते हैं। वे न केवल एक बेटी के माता-पिता हैं, बल्कि स्नेह, बलिदान और निस्वार्थ प्रेम का एक उत्तम उदाहरण भी हैं।

▶ **सतनाम**

दोस्ती केवल एक संबंध नहीं, बल्कि विश्वास, निष्ठा और सहयोग का आधार होती है। जब एक सच्चा मित्र कठिन समय में सहायता करता है, तब यह संबंध और भी मज़बूत हो जाता है। इसी भाव को दर्शाने वाला चरित्र है सतनाम, जो जापान में हरदीप का सच्चा मित्र है।

▶ सच्चा मित्र

हरदीप और सतनाम की दोस्ती केवल साथ समय बिताने तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह आपसी विश्वास और निःस्वार्थ प्रेम पर आधारित थी। जब हरदीप की मृत्यु हो जाती है, तो सतनाम अपने मित्र के अंतिम संस्कार को उसके परिवार तक पहुँचाने का संकल्प लेता है। यह कार्य न केवल मित्रता की गहराई को दर्शाता है, बल्कि मानवता की सच्ची मिसाल भी पेश करता है।

विदेश में रहकर किसी की अंतिम यात्रा को सम्मानपूर्वक उसके परिवार तक पहुँचाना आसान नहीं होता। कानूनी प्रक्रियाएँ, औपचारिकताएँ और भावनात्मक कठिनाइयाँ इस कार्य को और भी चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। लेकिन सतनाम इन सभी बाधाओं को पार करते हुए अपने मित्र के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करता है।

सतनाम केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि मानवता और दोस्ती का प्रतीक बन जाता है। उसकी निःस्वार्थ सहायता यह दर्शाती है कि सच्ची मित्रता जाति, देश और सीमाओं से परे होती है। यह कहानी हमें सिखाती है कि जब हम निस्वार्थ भाव से किसी की सहायता करते हैं, तो हम केवल मित्रता ही नहीं निभाते, बल्कि इंसानियत का कर्तव्य भी पूरा करते हैं।

▶ मानवता और दोस्ती का प्रतीक

▶ **नवजोत सिंह**

नवजोत सिंह जापान में भारतीय दूतावास के एक सम्मानित अधिकारी हैं। अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और ईमानदार होने के साथ-साथ वे एक संवेदनशील और व्यावहारिक व्यक्ति भी हैं। उनकी कार्यशैली में न केवल कूटनीतिक दक्षता झलकती है, बल्कि मानवीय मूल्यों का भी विशेष स्थान है।

▶ भारतीय दूतावास के एक सम्मानित अधिकारी

उनकी संवेदनशीलता तब स्पष्ट होती है जब वे हरदीप के परिवार की मदद करने के लिए हरसंभव प्रयास करते हैं। कठिन परिस्थितियों में भी वे धैर्य और विवेक के साथ काम करते हैं और ज़रूरतमंदों को सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहते हैं। उनकी व्यावहारिक सोच और समस्या-समाधान की क्षमता उन्हें एक कुशल अधिकारी के रूप में स्थापित करती है।

नवजोत सिंह न केवल अपने पद की गरिमा बनाए रखते हैं, बल्कि अपने मानवीय दृष्टिकोण से भी लोगों के दिलों में स्थान बनाते हैं। उनकी सहानुभूति, कर्तव्यपरायणता और व्यावहारिकता उन्हें एक आदर्श अधिकारी और एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती है।

▶ ज़रूरतमंदों को सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'देह की कीमत' एक महत्वपूर्ण और प्रभावी कहानी है, तेजेंद्र शर्मा द्वारा लिखित यह कहानी एक महिला के जीवन के उतार-चढ़ाव, संघर्षों और सामाजिक दोहरे मानकों को उजागर करती है। कहानी की मुख्य पात्र परमजीत कौर, जिसे पम्मी के नाम से भी जाना जाता है, एक शिक्षित और सुंदर महिला है। उसकी शादी हरदीप से होती है, जो एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति है और अवैध रूप से जापान चला जाता है। दुर्भाग्यवश, वहीं उसकी मृत्यु हो जाती है। इसके बाद पम्मी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जो न केवल उसकी व्यक्तिगत पीड़ा को दर्शाती हैं बल्कि समाज की क्रूर सच्चाइयों को भी सामने लाती हैं। इस कहानी का एक प्रमुख विषय लालच और स्वार्थ है। हरदीप के परिवार के सदस्य, विशेष रूप से उसकी माँ बीजी और भाई कुलदीप और गुरप्रीत, हरदीप की मृत्यु के बाद भी उसके पैसों पर अधिकार जमाना चाहते हैं। वे पम्मी की भावनाओं की परवाह किए बिना उसे केवल एक माध्यम के रूप में देखते हैं, जिससे उन्हें आर्थिक लाभ मिल सके। इस लालच के चलते वे पम्मी के जीवन को और भी कठिन बना देते हैं, जो समाज में महिलाओं की स्थिति को दर्शाता है। कहानी में सेक्टर 15 और सेक्टर 18 के बीच का अंतर सामाजिक असमानता को दर्शाता है। यह अंतर केवल भौगोलिक नहीं,

बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्थिति का भी प्रतीक है। यह विभाजन समाज के दोहरे मानकों को उजागर करता है, जहाँ एक तरफ संपन्न और शक्तिशाली लोग होते हैं और दूसरी ओर वे लोग जो संघर्ष और शोषण का सामना करते हैं। पम्मी का जीवन इस असमानता का उदाहरण है, जहाँ उसे लगातार अन्याय और भेदभाव सहना पड़ता है। कहानी पम्मी के संघर्षों और उसके लचीलेपन को दर्शाती है। वह परिस्थितियों से हार नहीं मानती, बल्कि अपने जीवन को नए सिरे से संवारने की कोशिश करती है। उसका संघर्ष महिला सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह कहानी उन महिलाओं को प्रेरित करती है जो समाज की रूढ़ियों और पारिवारिक दबावों के कारण कठिनाइयों का सामना करती हैं। पम्मी का चरित्र यह संदेश देता है कि आत्मनिर्भरता और साहस के माध्यम से कोई भी महिला अपने जीवन को संवार सकती है। कहानी में दारजी का किरदार मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। वे हरदीप के पिता हैं और परिवार में एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो पम्मी के भविष्य की चिंता करते हैं। वे न्याय और सच्चाई के पक्षधर हैं और पम्मी के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास करते हैं। इसके अतिरिक्त, नवजोत सिंह, जो भारतीय दूतावास में अधिकारी हैं और सतनाम, जो हरदीप का दोस्त है, भी सहयोग और संवेदना के प्रतीक हैं। ये पात्र यह दर्शाते हैं कि समाज में आज भी कुछ ऐसे लोग हैं जो नैतिकता और इंसानियत में विश्वास रखते हैं। यह कहानी केवल एक महिला के संघर्ष की कहानी नहीं है, बल्कि समाज के कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी प्रकाश डालती है। यह लालच, सामाजिक असमानता, महिला सशक्तिकरण और मानवीय मूल्यों जैसे विषयों को उजागर करती है। पम्मी का जीवन एक प्रेरणादायक उदाहरण है कि कठिनाइयों के बावजूद कैसे आत्मबल और संघर्ष से आगे बढ़ा जा सकता है। तेजेंद्र शर्मा की यह कहानी पाठकों को सोचने पर मजबूर करती है और समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. कहानी में 'देह की कीमत' के विषय पर चर्चा करें। यह विषय विभिन्न पात्रों और स्थितियों में कैसे प्रकट होता है?
2. कहानी में पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक दबावों के विषयों का विश्लेषण करें।
3. कहानी में अवैध प्रवास और उसके परिणामों के विषय पर चर्चा करें।
4. कहानी में लालच और स्वार्थ के विषय पर चर्चा करें। यह विषय विभिन्न पात्रों और स्थितियों में कैसे प्रकट होता है?
5. तेजेंद्र शर्मा की लेखन शैली का विश्लेषण करें। कहानी में उनकी भाषा, संरचना और प्रतीकों के प्रयोग पर चर्चा करें।
6. कहानी के शीर्षक 'देह की कीमत' के महत्व पर चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. 'देह की कीमत' : तेजेंद्र शर्मा
2. 'तेजेंद्र शर्मा की कहानियाँ: एक आलोचनात्मक अध्ययन' - डॉ. रामबिलास शर्मा
3. 'तेजेंद्र शर्मा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ' - डॉ. विनोद कुमार

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'हिन्दी कहानी: एक आलोचनात्मक अध्ययन' - डॉ. नामवर सिंह
2. 'हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श' - डॉ. चंद्रपाल सिंह
3. 'हिन्दी कहानी में गरीबी और असमानता' - डॉ. रामेश्वर प्रसाद श्रीधर

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 6

पिंजरा (नीलम मलकानिया)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सामाजिक बंधनों और पारिवारिक दबाव के प्रभाव को समझता है
- पिंजरा द्वारा पिंजरा कहानी का सारांश समझता है
- नारी विमर्श के मुद्दों को समझेंगे और लिंग समानता के महत्व को पहचानता है
- आत्म-मुक्ति और स्वायत्तता के महत्व को समझता है
- स्व-निर्णय और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता विकसित होता है

Background / पृष्ठभूमि

नीलम मलकानिया की मार्मिक हिन्दी कहानी 'पिंजरा' 20वीं सदी के उत्तरार्ध में एक पारंपरिक भारतीय समाज की पृष्ठभूमि पर आधारित है। कथा एक मध्यमवर्गीय परिवार में सामने आती है, जहाँ सामाजिक अपेक्षाएँ और पितृसत्तात्मक मानदंड महिलाओं के जीवन को निर्धारित करते हैं। कहानी एक युवा नायक के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक घुटन भरे माहौल में फँसी हुई है, जहाँ उसकी आकांक्षाएँ और इच्छाएँ लगातार दबाई जाती हैं। लेखिका ने महिला अस्तित्व की जटिलताओं को कुशलता से बुना है, जिसमें परिवार, समाज और सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को उजागर किया गया है। इस विचारोत्तेजक कहानी के माध्यम से, मलकानिया एक प्रतिबंधात्मक सामाजिक ढांचे की सीमाओं के भीतर स्वायत्तता, पहचान और आत्म-अभिव्यक्ति की तलाश करने वाली महिलाओं के संघर्षों पर प्रकाश डालती हैं। कहानी के उत्पीड़न, प्रतिरोध और आत्म-खोज के विषय पाठकों के साथ गूँजते रहते हैं, जिससे मानवीय स्थिति पर एक शक्तिशाली टिप्पणी बन जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

पिंजरा, स्वतंत्रता, अस्मिता, सामाजिक दबाव, पारिवारिक बंधन, नारी विमर्श, जकड़न, स्व-निर्णय

Discussion / चर्चा

लेखक परिचय

▶ साहित्य की परिवर्तनकारी शक्ति की एक मिसाल

हिन्दी की प्रतिष्ठित लेखिका नीलम मलकानिया ने भारतीय साहित्य पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उनकी बाद की रचनाएँ, जिनमें मार्मिक लघु कहानी शामिल है। वे एक कुशल कहानीकार के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को मज़बूत किया। अपने लेखन के माध्यम से, मलकानिया मानवीय अनुभव की पेचीदगियों पर प्रकाश डालती हैं। पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-खोज के विषयों की खोज करने की उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कार दिलाए हैं। आज, नीलम मलकानिया साहित्य की परिवर्तनकारी शक्ति की एक मिसाल हैं, जो अपनी विचारोत्तेजक और गहन मानवीय कहानियों से लेखकों और पाठकों की पीढ़ियों को प्रेरित कर रही हैं।

भूमिका

प्रशंसित लेखिका नीलम मलकानिया की एक मार्मिक और विचारोत्तेजक हिन्दी कहानी है। कथा एक युवा महिला के इर्द-गिर्द घूमती है जो घुटन भरे माहौल में फंसी हुई है, जहाँ सामाजिक अपेक्षाएँ और पारिवारिक दायित्व उसकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को दबा देते हैं।

यह कहानी पहचान, स्वतंत्रता और आत्म-खोज के विषयों की कुशलता से खोज करती है, पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं के जीवन की पेचीदगियों पर प्रकाश डालती है। नायक के संघर्षों के माध्यम से, मलकानिया ने पितृसत्तात्मक मानदंडों और सामाजिक दबावों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों को कुशलता से उजागर किया है।

कथावस्तु

▶ सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की एक मार्मिक खोज

नीलम मलकानिया द्वारा लिखित पिंजरा, कारावास, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की एक मार्मिक खोज है। कहानी एक महिला के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अपने घरेलू जीवन और सामाजिक मानदंडों की कठोर सीमाओं में फंसी हुई महसूस करती है। अपनी यात्रा के माध्यम से, लेखिका ने एक विवश वातावरण में स्वायत्तता की तलाश करने वाले व्यक्तियों द्वारा सामना किए जाने वाले भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक संघर्षों की एक विशद तस्वीर पेश की है। नायक का जीवन दिनचर्या और नीरसता से भरा हुआ है, जहाँ उसकी इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ अक्सर पारिवारिक दायित्वों से प्रभावित होती हैं। कथा उसके दैनिक जीवन के विवरण से शुरू होती है, जिसमें दिखाया गया है कि कैसे उसके सपने उसपर रखी गई अपेक्षाओं के कारण दब जाते हैं। मलकानिया द्वारा कल्पना का उपयोग प्रभावी रूप से फँसने की भावना को दर्शाता है, उसके अस्तित्व की तुलना पिंजरे से करता है।

जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, नायक अपने अतीत पर विचार करता है, उन क्षणों को याद करता है जब वह स्वतंत्र और जीवित महसूस करती थी। ये फ्लैशबैक उसकी वर्तमान वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत हैं, जो उसके व्यक्तित्व के नुकसान पर ज़ोर देते हैं। मलकानिया चरित्र की मानसिकता में उतरती हैं, उसके आंतरिक संघर्षों और सामाजिक स्वीकृति की सीमाओं से परे जीवन की लालसा को प्रकट करती हैं।

▶ फ्लैशबैक उसकी वर्तमान वास्तविकता के बिल्कुल विपरीत

परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत नायक के संघर्षों को और उजागर करती है। बातचीत अक्सर पारंपरिक भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिससे उसकी आकांक्षाओं के लिए बहुत कम जगह बचती है। संवाद उन गहरी जड़ों वाली मान्यताओं को प्रकट करता है जो उसके फँसने की भावना को बनाए रखती हैं, जो कई महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले सामाजिक दबावों को दर्शाती हैं।

इस उथल-पुथल के बीच, नायक सांत्वना और आत्म-चिंतन के क्षणों की तलाश करना शुरू कर देता है। वह प्रकृति में सांत्वना पाती है, जहाँ वह कुछ समय के लिए अपनी चिंताओं से बच सकती है और अपने सच्चे स्व से जुड़ सकती है। आत्मनिरीक्षण के ये क्षण उसके पिंजरा से मुक्त होने की बढ़ती इच्छा के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं।

▶ वह प्रकृति में सांत्वना पाती है

कहानी में मोड़ तब आता है जब नायक का सामना एक ऐसे व्यक्ति से होता है जो स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह किरदार उसे अपनी पसंद पर पुनर्विचार करने और उन मानदंडों को चुनौती देने के लिए प्रेरित करता है जो उसे बांधते हैं। मलकानिया ने इस प्रभाव को कुशलता से चित्रित किया है, जिससे नायक के भीतर आशा और साहस की चिंगारी जलती है।

जैसे-जैसे चरमोत्कर्ष सामने आता है, नायक अपने सपनों को आगे बढ़ाने या अपने परिचित दायरे में सुरक्षित रहने के निर्णय से जूझता है। यह आंतरिक लड़ाई सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच सार्वभौमिक संघर्ष का एक शक्तिशाली प्रतिनिधित्व है। मलकानिया के लेखन ने तनाव को खूबसूरती से पकड़ लिया है, जिससे पाठक नायक की दुर्दशा के साथ सहानुभूति रखते हैं।

▶ अपनी पहचान को पुनः प्राप्त करने की दिशा में एक साहसिक कदम उठाता है

अंत में, नायक अपनी पहचान को पुनः प्राप्त करने की दिशा में एक साहसिक कदम उठाता है। अपनी खुशी को प्राथमिकता देने का उसका निर्णय एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है, जो मुक्ति की संभावना का प्रतीक है। मलकानिया पाठकों को सशक्तिकरण की भावना के साथ छोड़ती है, यह सुझाव देती है कि सामाजिक पिंजरों से मुक्त होना एक साहसी और आवश्यक यात्रा है।

Characters/ कथापात्र

मुख्य पात्रः

1. **नायक** : कहानी का केंद्रीय पात्र, एक युवा महिला जो घुटन भरे माहौल में फंसी हुई है, अपनी स्वतंत्रता और व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रही है।
2. **माँ** : पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक अपेक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए, वह नायक पर दबाव डालती है कि वह उनके अनुसार चले।
3. **पिताः** पितृसत्तात्मक अधिकार का प्रतीक, नायक के जीवन विकल्पों को निर्धारित करता है।
4. **भाईः** विशेषाधिकार प्राप्त पुरुष दृष्टिकोण का प्रतीक, अक्सर नायक की इच्छाओं को खारिज करता है।
5. **पड़ोसीः** सामाजिक गपशप और निर्णय को मूर्त रूप देते हुए, वे पारंपरिक मानदंडों को मज़बूत करते हैं।
6. **रिश्तेदारः** विस्तारित परिवार और समुदाय के दबाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

गौण पात्रः

1. **पतिः** मुख्य पात्र का पति, जिसका उल्लेख तो किया गया है, लेकिन वह शारीरिक रूप से मौजूद नहीं है, विवाह की सामाजिक अपेक्षा को दर्शाता है।

प्रतीकात्मक पात्रः

1. **पिंजरा** : सामाजिक बाधाओं और उत्पीड़न का एक रूपक।

विषय/ Theme

1. **महिला सशक्तिकरणः** स्वतंत्रता, स्वायत्तता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष।
2. **पहचान और आत्म-खोजः** अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और पहचान की खोज।
3. **स्वतंत्रता और स्वायत्तताः** सामाजिक बाधाओं और अपेक्षाओं से मुक्त होना।
4. **पारिवारिक गतिशीलता और रिश्तेः** पारिवारिक रिश्तों और दायित्वों की जटिलताएँ।
5. **व्यक्तिगत विकास और परिवर्तनः** चुनौतियों पर काबू पाना और मज़बूत बनना।
6. **पितृसत्तात्मक मानदंड और उत्पीड़नः** महिलाओं के जीवन पर पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव।

7. **आत्म-अभिव्यक्ति और व्यक्तित्वः** अपनी विशिष्टता और रचनात्मकता को अपनाना।

8. **भावनात्मक मुक्तिः** भावनात्मक बोझ और सामाजिक दबावों से खुद को मुक्त करना।

9. **आंतरिक संघर्ष और उथल-पुथलः** व्यक्तिगत इच्छाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संघर्ष।

ये विषय कथा में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो नायक की यात्रा और सामाजिक संदर्भ की सूक्ष्म खोज प्रदान करते हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

पिंजरा का समाधान गहराई से प्रतिध्वनित होता है, पाठकों को अपने जीवन और उनके सामने आने वाली बाधाओं पर चिंतन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। नीलम मलकानिया की कहानी न केवल अनुरूपता की चुनौतियों को उजागर करती है, बल्कि आत्म-खोज और व्यक्तिगत स्वतंत्रता में पाई जाने वाली ताकत का जश्न भी मनाती है। किसी के सपनों को आगे बढ़ाने और सामाजिक बंधनों से मुक्त होने की परिवर्तनकारी यात्रा के महत्व की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। अपनी प्रेरक कहानी के माध्यम से, मलकानिया पाठकों को अपने व्यक्तित्व को अपनाने और उस जीवन के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करती हैं, जिसकी वे वास्तव में इच्छा रखते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. कहानी 'पिंजरा' में लेखिका ने महिलाओं की स्थिति को कैसे चित्रित किया है? उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों का विश्लेषण करें।
2. पिंजरा का प्रतीकार्थ क्या है? कहानी में इसका क्या महत्व है? अपने उत्तर के समर्थन में उदाहरण दें।
3. नीलम मलकानी की कहानी पिंजरा में महिला सशक्तिकरण के विषय को कैसे उठाया गया है? तुलनात्मक विश्लेषण करें।
4. कहानी 'पिंजरा' में परिवार और समाज की भूमिका क्या है? क्या यह कहानी हमें समाज में परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में सोचती है? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दें।
5. कहानी 'पिंजरा' के माध्यम से लेखिका क्या संदेश देना चाहती है? आपको यह कहानी क्या सिखाती है? अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर उत्तर दें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. पिंजरा - नीलम मलकानिया
2. नीलम मलकानियाः एक साहित्यिक अध्ययन - डॉ. सविता सिंह
3. हिन्दी साहित्य की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक फ्रांसेस्का ओरसिनी द्वारा संपादित
4. भारत में जाति, वर्ग और लिंग मनोरंजन मोहंती द्वारा संपादित
5. नीलम मलकानियाः जीवन और साहित्य - डॉ. रमा द्विवेदी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी साहित्य में नारी चेतना - डॉ. शोभा रानी
2. हिन्दी साहित्य में नारीवाद - डॉ. मीनाक्षी भारत
3. भारतीय महिला लेखन - एक आलोचनात्मक परिचय - डॉ. सूसी थारू
4. हिन्दी साहित्य में सामाजिक यथार्थ - डॉ. रामविलास शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

प्रतिनिधि उपन्यास

Block Content

Unit 1: प्रवासी उपन्यासः संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिंदी उपन्यासकार - संक्षिप्त परिचय

Unit 2: लाल पसीना : अभिमन्युअनत

Unit 3: आप्रवासी भारतीय अवधारणा

Unit 4: मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन, स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

इकाई 1

प्रवासी उपन्यासः संवेदना एवं शिल्प, प्रमुख प्रवासी हिंदी उपन्यासकार - संक्षिप्त परिचय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- प्रवासी अनुभव को आकार देने वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों को समझता है
- विविध अनुभवों का प्रतिनिधित्व करने में सांस्कृतिक संवेदनशीलता के महत्व को समझता है
- प्रवासी अनुभवों की बारीकियों को पकड़ने में शामिल साहित्यिक शिल्प की सराहना करना जानता है
- प्रवासी समुदायों पर वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीयता के प्रभाव का विश्लेषण करता है
- लेखन के माध्यम से अपने स्वयं के अनुभव और भावनाओं को व्यक्त करना जानता है

Background / पृष्ठभूमि

हिंदी प्रवासी उपन्यास एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में उभरा है, जो भारतीय प्रवास की जटिलताओं और पहचान, संस्कृति और अपनेपन पर इस के प्रभाव को दर्शाता है। विस्थापन, सांस्कृतिक बातचीत और संकरता से चिह्नित प्रवासी अनुभव ने हिंदी साहित्य में एक अलग कथात्मक आवाज़ को प्रेरित किया है। यशपाल, शोभा डे और रवि सुब्रह्मण्यम जैसे लेखकों ने सांस्कृतिक अव्यवस्था, उदासीनता और जड़ों की खोज के विषयों की खोज करते हुए इस शैली का बीड़ा उठाया है।

हिंदी प्रवासी उपन्यास औपनिवेशिक युग से लेकर समकालीन समय तक भारतीय प्रवास के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों को दर्शाता है। भारत का विभाजन, 1970 के दशक में मध्य पूर्व में प्रवासी और आधुनिक समय के अंतर्राष्ट्रीय आंदोलनों ने विदेशों में भारतीयों के अनुभवों को आकार दिया है। ये कथाएँ परंपरा और आधुनिकता, सांस्कृतिक विरासत और आत्मसात के बीच तनावों को उजागर करती हैं।

प्रवासी उपन्यास लिखने की कला के लिए संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है सांस्कृतिक पहचान, भाषा और स्मृति की जटिलताएँ। लेखकों को कई कथात्मक आवाज़ों को समझना चाहिए, हिंदी को अन्य भाषाओं के साथ मिलाना चाहिए और ऐसे सांस्कृतिक संदर्भों को शामिल करना चाहिए जो विविध दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित हों। नवीन कथात्मक तकनीकों के माध्यम से, वे प्रवासी पात्रों के भावनात्मक संघर्ष और विजय को व्यक्त करते हैं।

इस शैली ने न केवल हिंदी साहित्य के दायरे का विस्तार किया है, बल्कि प्रवासी आवाज़ों को अपने अनूठे अनुभवों को व्यक्त करने के लिए एक मंच भी प्रदान किया है। संस्कृति, पहचान और अपनेपन के अंतर्संबंधों की खोज कर के हिंदी प्रवासी उपन्यास कहानी कहने, सांस्कृतिक प्रतिबिंब और सामाजिक टिप्पणी के लिए एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

संवेदनशीलता, सांस्कृतिक पहचान, कथात्मक स्वर, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व, सांस्कृतिक विरासत, अंतर्संबंध, पहचान की राजनीति, संयुक्त राज्य अमेरिका, उत्तर-उपनिवेशवाद

Discussion / चर्चा

4.1.1. प्रवासी उपन्यास :संवेदना और शिल्प

▶ उपन्यास प्रवासी जीवन की जटिलताओं को पकड़ते हैं

हिंदी प्रवासी उपन्यास भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों के सांस्कृतिक पहचान, जुड़ाव और सांस्कृतिक विस्थापन के अनुभवों का पता लगाते हैं। ये उपन्यास प्रवासी जीवन की जटिलताओं को पकड़ते हैं, हिंदी को अन्य भाषाओं और सांस्कृतिक संदर्भों के साथ मिलाते हैं। यह शैली भारतीय प्रवासियों के विविध अनुभवों को दर्शाते हुए एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आवाज़ के रूप में उभरी है।

▶ परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव

हिंदी प्रवासी उपन्यास सांस्कृतिक पहचान और जुड़ाव, उदासीनता और सांस्कृतिक विरासत, भाषा और संचार, सांस्कृतिक विस्थापन और अलगाव, संकरता और बहुसंस्कृतिवाद, पहचान की राजनीति और सांस्कृतिक राजनीति, वैश्वीकरण और पारराष्ट्रीयता, प्रवास और निर्वासन जैसे विषयों पर गहराई से चर्चा करते हैं। ये विषय उन कथाओं में बुने गए हैं जो परंपरा और आधुनिकता के बीच तनाव का पता लगाते हैं।

▶ साहित्यिक उपकरणों का प्रयोग

लेखक कथात्मक आवाज़ और परिप्रेक्ष्य, भाषा मिश्रण, सांस्कृतिक प्रतीकवाद और कल्पना, चेतना की धारा कथन, गैर-रेखीय कहानी कहने और जादुई यथार्थवाद जैसे साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। ये उपकरण लेखकों को प्रवासी अनुभवों और भावनाओं की जटिलताओं को व्यक्त करने में सक्षम बनाते हैं।

रूढ़िवादिता और ट्रॉप्स से बचते हुए प्रवासी अनुभवों का प्रतिनिधित्व करने में संवेदनशीलता महत्वपूर्ण है। लेखकों को सांस्कृतिक प्रामाणिकता और साहित्यिक योग्यता को संतुलित करना चाहिए, सांस्कृतिक पहचान के सूक्ष्म चित्रण को सुनिश्चित करना चाहिए। लिंग, वर्ग और जाति जैसी अंतर्संबंधताएँ भी आवश्यक विचार हैं।

उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धांत, प्रवासी अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन, साहित्यिक सिद्धांत, आलोचनात्मक सिद्धांत, अंतर्संबंध और अंर्तराष्ट्रीय अध्ययन जैसे सैद्धांतिक रूपरेखाएँ हिंदी प्रवासी उपन्यासों के विश्लेषण के लिए संदर्भ प्रदान करती हैं।

शोध दिशाओं में प्रवासी अनुभवों के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण, सांस्कृतिक पहचान और अपनेपन की खोज, भाषा और संचार की जाँच, वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन और प्रवासी साहित्य में अंतर्संबंधों की जाँच शामिल है।

▶ चुनौतियाँ

चुनौतियों में सांस्कृतिक प्रामाणिकता और साहित्यिक योग्यता को संतुलित करना, विविध दर्शकों तक पहुँचना, सांस्कृतिक संवेदनशीलता को संबोधित करना, नए कथात्मक रूपों की खोज करना और प्रवासी समुदायों के साथ सहयोग करना शामिल है। यह चुनौतियां अक्सर विविध अनुभवों की खोज करने, कथात्मक शैलियों के साथ प्रयोग करने और संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देने में निहित हैं।

4.1.2 प्रमुख प्रवासी हिंदी उपन्यासकार: संक्षिप्त परिचय

प्रसिद्ध प्रवासी उपन्यासकारों ने पहचान, सांस्कृतिक संकरता और वैश्वीकरण के विषयों की खोज करते हुए हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

▶ कृष्णबिहारी लाल कृत 'पहला कदम'

हिन्दी साहित्यकारों ने बहुत पहले ही प्रवासी उपन्यास के क्षेत्र में पदार्पण किया था। हिन्दी प्रवासी उपन्यासों को मॉरीशस के स्वतंत्रता के पहले और उस के बाद के रूप में देख सकते हैं। मॉरीशस के स्वतंत्र होने के पहले के उपन्यासों में सबसे प्रमुख कृष्णबिहारी लाल कृत 'पहला कदम' जो 1960 को प्रकाशित हुआ जिसे मॉरीशस का प्रथम हिन्दी उपन्यास कहा जा सकता है। इस के बाद आता है प्रो विष्णुदयाल की 'रूप किशोर और सुजाता'।

▶ अभिमन्यु अनत - मॉरीशस का प्रेमचंद/ मॉरीशस का उपन्यास सम्राट

मॉरीशस के स्वतंत्र होने के बाद उभरकर आनेवाला सबसे प्रमुख एवं प्रतिभावान उपन्यासकार है अभिमन्यु अनत। उन्होंने प्रवासी उपन्यास के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय उपन्यासों का प्रणयन किया है। अभिमन्यु अनत मॉरीशस का प्रेमचंद/ मॉरीशस का उपन्यास सम्राट आदि नामों से जाने जाते हैं। उनका पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास 'लाल पसीना' इस क्षेत्र में बहुत ही चर्चित रहा है। 'और पसीना बहता रहा', 'गांधी जी बोले थे', 'तप्ती दोपहरी', 'जम गया सूरज', 'हम प्रवासी' आदि उन के अन्य प्रमुख उपन्यास हैं।

▶ तीन हजार पृष्ठ से युक्त एक बृहत उपन्यास 'पथरीला सोना'

प्रवासी उपन्यासों में मॉरीशस के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेशों का सच्चा चित्रण देखने को मिलता है। 'तीसरे किनारे पर', 'पर पगडंडी मरती नहीं', 'चुन चुन चुनाव', 'अस्ति अस्तु' आदि भी उल्लेखनीय उपन्यास है।

इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रमुख उपन्यासकार है रामदेव धुरंधर जिन्होंने तीन हज़ार पृष्ठ से युक्त एक बृहत उपन्यास 'पथरीला सोना' का प्रणयन किया जिसे संसार का सबसे बड़ा उपन्यास होने का श्रेय प्राप्त है। 'चेहरों का आदमी', 'छोटी मछली बड़ी मछली', 'पूछो इस माटी से', 'बनते बिगड़ते रिश्ते' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

विष्णुदत्त मधु की 'फट गई धरती', अस्तानन्द सदसिंह की 'माँसभक्षी', दीपचन्द बिहारी की 'मसीहे नरक जीते हैं', आनंददेवी के 'कसूर किसका', वेणीमाधव रामखेलावन की 'अमर प्रेम', गोवर्धन ठाकुर की 'दो सखियाँ' और हीरालाल लीलाधर की 'सगाई' भी उल्लेखनीय उपन्यास हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिंदी प्रवासी उपन्यास एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रूप में उभरा है, जो विदेशों में रहने वाले भारतीयों के अनुभवों की खोज करता है। ये उपन्यास पहचान, सांस्कृतिक संकरता, वैश्वीकरण और नए वातावरण के अनुकूल होने के संघर्षों के विषयों पर गहराई से चर्चा करते हैं। अपने कामों के माध्यम से, हिंदी प्रवासी उपन्यासकारों ने भारतीय प्रवासी अनुभव पर एक अनूठा दृष्टिकोण प्रदान किया है, जो सांस्कृतिक पहचान और अपनेपन की जटिलताओं पर प्रकाश डालता है।

भीष्म साहनी, राजेंद्र यादव, खुशवंत सिंह, विक्रम सेठ और अमिताव घोष जैसे उल्लेखनीय हिंदी प्रवासी उपन्यासकारों ने इस विधा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन के उपन्यासों ने न केवल प्रवासी अनुभव को प्रतिबिंबित किया है, बल्कि व्यापक साहित्यिक परिदृश्य को भी प्रभावित किया है। उन के कामों को अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है, पुरस्कार और प्रशंसा मिली है, और हिंदी साहित्य को वैश्विक साहित्यिक प्रवचन के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में स्थापित करने में मदद मिली है।

हिंदी प्रवासी उपन्यास ने विदेशों में भारतीय संस्कृति और भाषा को संरक्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये उपन्यास भारत और उस के प्रवासी समुदायों के बीच एक सेतु का काम करते हैं, जो जुड़ाव और साझा पहचान की भावना को बढ़ावा देते हैं। इस के अलावा, उन्होंने भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परंपराओं के बीच संवाद और आदान-प्रदान को सुगम बनाया है, जिससे सांस्कृतिक पहचान और वैश्वीकरण की जटिलताओं के बारे में हमारी समझ समृद्ध हुई है।

निष्कर्ष के तौर पर, हिंदी प्रवासी उपन्यास और इस के उपन्यासकारों ने हिंदी साहित्य और भारतीय प्रवासी अनुभव के बारे में हमारी समझ को काफी समृद्ध किया है। उनकी रचनाएँ दुनिया भर के पाठकों के साथ गुँजती रहती हैं, जो सांस्कृतिक पहचान, जुड़ाव और वैश्वीकरण की जटिलताओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। जैसे-जैसे भारतीय प्रवासी बढ़ते और विकसित होते जा रहे हैं, हिंदी प्रवासी उपन्यास एक आवश्यक साहित्यिक शैली बनी रहेगी, जो विदेशों में रहने वाले भारतीयों के अनुभवों का दस्तावेजीकरण और प्रतिबिंबन करेगी।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिंदी प्रवासी उपन्यास में सांस्कृतिक पहचान की खोज विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिए।
2. प्रवासी जीवन की चुनौतियाँ और संघर्ष :हिंदी प्रवासी उपन्यासों में इसका चित्रण किस प्रकार हुआ है।
3. 'वैश्वीकरण और प्रवासी साहित्य': हिंदी प्रवासी उपन्यासों में इस के प्रभाव पर चर्चा कीजिए।
4. 'हिंदी प्रवासी उपन्यास में आत्म-संदर्भ और आत्म-खोज': समीक्षात्मक विश्लेषण कीजिए।
5. हिंदी प्रवासी उपन्यास और भारतीय समाज पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी प्रवासी साहित्य: एक समीक्षा - डॉ. रमा श्रीनिवासन
2. 'प्रवासी हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक पहचान' - डॉ. लक्ष्मी शंकर
3. 'हिंदी प्रवासी उपन्यास: एक विश्लेषण' - डॉ. विजय कुमार
4. 'हिंदी प्रवासी साहित्य का इतिहास' - डॉ. रामविलास शर्मा
5. 'भारतीय प्रवासी साहित्य: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण' - डॉ. निरंजन मिश्रा

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. 'हिंदी प्रवासी साहित्य: एक संग्रह' - डॉ. रमा श्रीनिवासन
2. 'प्रवासी हिंदी साहित्य: एक चयन' - डॉ. लक्ष्मी शंकर

संदर्भ पत्रिकाएँ

1. हिंदी प्रवासी साहित्य समीक्षा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य पत्रिका
3. भारतीय प्रवासी साहित्य जर्नल

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

लाल पसीना : अभिमन्यु अनत

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- उपन्यासकार अभिमन्यु अनत के बारे में जानकारी हासिल करता है
- 'लाल पसीना' उपन्यास की कथावस्तु समझता है
- प्रवासियों की जीवन दुर्दशा समझता है
- मॉरीशस के आरंभकालीन प्रवासियों के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

अभिमन्यु अनत हिन्दी प्रवासी उपन्यासकारों में सबसे प्रमुख एवं चर्चित हस्ती है। श्री. अनत का उपन्यास मुख्य रूप से मॉरीशस की स्वतंत्रता पर आधारित है। अतः उन के उपन्यासों को दो रूपों में बाँटा जा सकता है- स्वतंत्रता पूर्व आप्रवासी भारतीय समाज से संबंधित तथा स्वातंत्र्योत्तर आप्रवासी भारतीय समाज से संबंधित। 1968 मार्च में मॉरीशस स्वतंत्र हुआ। भारतीय आप्रवासियों ने भी शासन में अपना हाथ बँटाया। इस देश के प्रथम प्रधानमंत्री एक भारतीय आप्रवासी सर. शिवसागर रामगुलाम बने। आज भी इनका नाम वहाँ बहुत आदर से लिया जाता है। श्री. अनत अपने कुछ उपन्यासों में मॉरीशस की स्वाधीनता के पूर्व के भारतीय आप्रवासी समाज की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों को उभारा है। 'लाल पसीना', 'गाँधीजी बोले थे', 'अचित्रित', 'और पसीना बहता रहा', 'हम प्रवासी' आदि इस श्रेणी के उपन्यास हैं। अभिमन्यु अनत कृत लाल पसीना एक महत्वपूर्ण प्रवासी उपन्यास है, जो भारतीय प्रवासियों के जीवन के संघर्षों और उनकी करुणामय जीवन कथा को उद्घाटित करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

निर्वासन, लाल पसीना, पहचान संकट, गिरमिटिया मजदूर,

Discussion / चर्चा

लाल पसीना : कथ्यपरक अवलोकन

- भारतीय प्रवासियों के जीवन के संघर्ष

अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में प्रवासी की समस्या को प्रमुखता दिया है। उन के उपन्यासों में भारतीय प्रवासियों के जीवन के संघर्षों, उनकी सांस्कृतिक पहचान के संकट, और उन के नए देश में समायोजन की कोशिशों को दर्शाया गया है। अभिमन्यु अनत कृत लाल पसीना उपन्यास एक महत्वपूर्ण प्रवासी साहित्यिक कृति है, जिसमें भारतीय प्रवासियों के जीवन के संघर्षों और उनकी सांस्कृतिक पहचान के संकट को दर्शाया गया है।

कथावस्तु

- भारतीय मजदूरों की दासता से मुक्ति पाने के संघर्ष का महाकाव्यात्मक उपन्यास

अभिमन्यु अनत का उपन्यास 'लाल पसीना' मॉरीशस में भारतीय मजदूरों की दासता से मुक्ति पाने के संघर्ष का महाकाव्यात्मक उपन्यास है। यह तीन खंडों में विभक्त है। इसका तीसरा खंड प्रकाशाधीन है। मॉरीशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस कृति में उन गिरमिटिया भारतीय मजदूरों के शोषण तथा संघर्ष की कथा है, जिन्होंने अपना खून-पसीना बहाकर इस द्वीप को समृद्ध किया। साथ ही इन मज़दूरों ने उस शोषण का तथा अत्याचार का विरोध किस प्रकार किया, अपनी मुक्ति के लिए जो प्रयास किए उनका भी चित्रण इसमें है।

- विस्फोट से एक नई भूमि की सृष्टि

उपन्यास का कथानक प्रारंभ होता है, दो बौद्ध भिक्षुओं से। भिक्षु, धर्म प्रचार का झंडा लेकर भारत से निकलते हैं। सुदूर दक्षिणात्य में महासागर में एक भीषण विस्फोट होता है। दोनों भिक्षु सागर के अंक में सदा के लिए सो जाते हैं। परंतु उस विस्फोट से एक नई भूमि की सृष्टि हो जाती है, यही मॉरीशस की धरती है।

- फ्रांसीसियों के द्वीप पर टिक जाने और इसको आबाद करने का वर्णन

इस के बाद मॉरीशस के इतिहास पर संक्षिप्त दृष्टि दौड़ाई गई है। इस के अंतर्गत द्रविड़ों, अरब जलदस्युओं के संभावित मॉरीशस आगमन का वर्णन हुआ है। इस के पश्चात फ्रांसीसियों के इस बिचाबन द्वीप पर टिक जाने और इसको आबाद करने का वर्णन हुआ है। अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों के बीच विद्रोह बढ़ जाने के कारण अंग्रेज़ी सेना इस द्वीप पर आक्रमण कर देती है और उसकी विजय होती है। अंग्रेज़ों की सेना में कुंदन भी आया है। उपन्यास की मुख्य कथा कुंदन की स्मृतियों से प्रारंभ होता है। कुंदन युवावस्था में बिहार में अंग्रेज़ी सेना में प्रविष्ट होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका था। अंग्रेज़ी सेना की मॉरीशस पर विजय के पश्चात जिस दिन कुंदन को भारत लौटना था, उसी दिन निर्भाग्यवश उन के हाथों से एक गोरे आदमी की मृत्यु हुई और उनको उम्र कैद की सज़ा भी मिली। जेल में एक दिन कुंदन के पैर में एक चोट लग जाती है। वह अस्पताल जाता है। उसी वक्त उनकी भेंट कुछ गिरमिटिया मज़दूरों से होता है, तथा उनकी सहायता से वह जेल से भाग जाता है। पर्वतों की गोद में छिपकर रहने वाली कुंदन की भेंट किसन सिंह नामक युवक से होता है। कुंदन की प्रेरणा स्त्रोत के रूप में

किसन को उपन्यासकार ने चित्रित किया है। जेल के नरकीय जीवन का चित्रण भी उपन्यास में आता है। मुख्य कथा के साथ आधिकारिक कथाओं का उल्लेख उपन्यास को अत्यधिक मर्मस्पर्शी बनाता है।

ईख के खेतों में काम करने वाले अपने मज़दूर भाईयों को सरदार द्वारा पीटते जाने पर देवन नाम स्वीकार किए कुंदन की आत्मा कराह उठी। वह इनमें जागरण लाना चाहता है। पर पहले लोग इतने भयाक्रांत है कि उसकी बातें पूरी तरह सुनते ही नहीं। किंतु धीरे-धीरे इन बातों का प्रभाव लोगों पर पड़ी, किसन, गौतम, गोपाल आदि गाँव के युवक उनकी सलाह पर चलने का प्रयास करने लगा। किसन के पिता रघुसिंह देवन का विरोध करता है। तथा पुत्र को समझाने का प्रयास भी करता है। किंतु किसन विद्रोही बनता जाता। कुंदन की प्रेरणा से किसन 'बैठका' अर्थात् एक विचार मंच का आयोजन करता है- जिसमें सब मज़दूर मिलकर अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। उस बैठका में यही निर्णय किया जाता है कि सभी मज़दूर संगठित होकर अत्याचार के प्रति विद्रोह करें।

▶ 'बैठका' अर्थात् एक विचार मंच का आयोजन

गाँव में पुष्पा की माँ तथा गोपाल की माँ जैसी सामान्य स्त्रियों के माध्यम से रूढ़िग्रस्त समाज का चित्रण भी इसमें किया गया है। किसनसिंह एवं पुष्पा में लगाव होता है। पुष्पा के साथ राम जी सरदार की बेटी सत्या पर भी किसन का ध्यान है। सत्या से उनका संबंध तब छुट जाता है जब वह सत्या से यही शब्द बलपूर्वक कहता है कि सत्या अपने बाप से कहे कि वह मज़दूरों पर अत्याचार न करें।

▶ सामान्य स्त्रियों के माध्यम से रूढ़िग्रस्त समाज का चित्रण

दूसरी बार 'बैठका' में मज़दूर यह निर्णय लेते हैं कि अन्य गाँवों के लोगों को मिलाकर मज़दूर संगठन को मज़बूत करें- परस्पर मिले जुलें। इस के लिए उसी गाँव का सोनालाल अन्य स्थानों के मज़दूरों के मुखियाओं को परस्पर मिलवाने का काम आरंभ करता है। मज़दूरों की इन हरकतों से मालिक सचेत होकर सोनालाल को पकड़ता है और कठोर सज़ा देता है- 'लंगड़वा साहब ने उस के शरीर के कपड़े उतरवाकर उसकी देह को ईख के रस से चपचप करवाकर कड़कती धूप में पेड़ से बँधवा दिया था। जिस समय मज़दूरों की नज़र उस पर पड़ी, उसका शरीर लाल चींटियों से खदखद भरा हुआ था। पीड़ा से चिल्लाते-चिल्लाते वह बेसुध हो गया था। उस के पास फटकने की इजाज़त किसी को नहीं थी। लँगड़वा साहब के दोनों कुत्ते उस के इर्द-गिर्द घूमने को छोड़ दिये गये थे।'

▶ अन्य गाँवों के लोगों को मिलाकर मज़दूर संगठन को मज़बूत करना

लेखक ने गोरों की हवस का शिकार मज़दूर लड़कियों की करुण कथा भी कही है। एक अन्य बस्ती की लड़की रेखा मालिकों की वासना का शिकार बनने ही वाली थी कि एक मज़दूर लक्षमणसिंह ने उसे वहाँ से हटाया और कुंदन की बस्ती में ले आया। पूरी बस्ती के लोग रेखा की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो गए। वे काम पर न जाने का निर्णय लिया। किंतु रामजी सरदार को जब इस बात का पता चला तब वह लक्ष्मण सिंह को मारने के लिए उसकी बस्ती की ओर चला। कुंदन रामजी का पीछा करता है तथा उनकी हत्या कर देता है। इस जुर्म में कुंदन पुनः जेल में पहुँच जाता है। विद्रोही किसन

▶ गोरों की हवस का शिकार मज़दूर लड़कियों की करुण कथाँ

सिंह को मज़दूरों से अलग रखने के लिए मालिकों ने उसे सरदार बनाने का प्रलोभन देता है, किंतु किसन यह स्वीकार नहीं करता। मज़दूर आंदोलन के सामने मालिक झुकते हैं, उनकी माँगे स्वीकार कर ली जाती है।

इसी समय बस्ती में बुखार फैलता है। इसमें किसन के माता-पिता चल बसते हैं। वह दुःखी हो जाता है। उसका दुःख तब और भी बढ़ जाता है जब मालिक फिर से कोड़े बरसाने लगते हैं। मज़दूरों के विरोध करने के फलस्वरूप मालिकों के काम में क्षति होने लगती है तो काम ज़ारी रखने के लिए वे फिर भारत से मज़दूर ले जाते हैं। यहीं प्रथम खंड समाप्त हो जाता है।

द्वितीय खंड में भी अधिकांश कथा किसनसिंह की है। किसनसिंह अब वृद्ध हो गया है। उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई है। पुत्र मदन सिंह पिता के ही पद चिह्नों पर चलकर विद्रोही बन गया है। मालिकों का विरोध करने के कारण उसे सात वर्ष के लिए जेल हो जाती है, पर किसन सिंह को अपने पुत्र पर गर्व है। क्योंकि वे मज़दूरों पर होने वाली अत्याचारों के विरूद्ध आवाज़ उठाता रहता है (किसन सिंह बैठा-बैठा भोजपुरी भाषा में सीमा और संतू की कथा को लिपिबद्ध करता रहता है। इस कथा में यही बताया गया है कि किस प्रकार संतु विद्रोह करता है और जेल भेजा जाता है तथा उसकी पत्नी सीमा किस प्रकार अपने पति को मुक्त करवाने के लिए हरखु सरदार के साथ मालिक के घर चली गयी है आदि। वहाँ हुई सीमा की दुर्दशा का बहुत लोमहर्षक वर्णन भी किसन सिंह अपने उपन्यास में किया है। इस कथा में किसन सिंह वही लिख रहा है जो कुछ वर्तमान में मज़दूरों के साथ घट रहा होता है।

▶ किसनसिंह का पुत्र मदन सिंह पिता के ही पद चिह्नों पर चलकर विद्रोही बन गया

मज़दूरों की तीन बीघा भूमि मालिक अपने हाथ में लेना चाहते हैं तो मज़दूर उनका विरोध करता है और सरदारों पर पत्थर फेंकता है। उत्तर में सरदार गोलियाँ चलाते हैं और इसी में किसन सिंह शहीद हो जाता है। पिता की मृत्यु मदन सिंह के सिद्धांतों को, विचारों को, संकल्पों को और भी दृढ़ कर देता है। वह मज़दूर नेता बन जाता है। मदन को अपने पिता की हस्तलिखित पुस्तक से यह ज्ञात होता है कि भारतीय मज़दूर इस द्वीप पर कैसे आए? उन के साथ कैसा आचरण किया गया? इससे मदन एक बार फिर उन अत्याचारों के विरोध में उठ खड़े होने का संकल्प लेता है। इस संकल्प में बस्ती की एक स्वाभिमानी लड़की मीरा उसका साथ देती है। दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित होने लगते हैं व चाहने लगते हैं।

▶ पिता की मृत्यु मदन सिंह के सिद्धांतों, विचारों, संकल्पों को और भी दृढ़ कर देता है

मज़दूरों में कुछ विवेक जैसे भी है जो मदिरा और स्त्री भोग में व्यस्त है। उधर आंद्रोआ एवं विवेक का प्रसंग लेखक नवीन रूप में उठाते हैं। मदन अपने पिता द्वारा लिखित पुस्तक का पारायण करते-करते व्यथित हो जाता है। वह अपने देश, धर्म, जाति, संस्कृति सभी को सम्मान दिलाना चाहता है, जिन्हें गोरे हेय दृष्टि से देखते हैं। मदन यह लड़ाई अब मीरा के साथ मिलकर लड़ना चाहता है। प्राकृतिक उपादान भी मज़दूरों को त्रस्त करती रहती है। द्वीप में कभी-कभी भीषण तूफान आता है और हरे-भरे खेत की नाश भी करता है।

▶ प्राकृतिक उपादान भी मज़दूरों को त्रस्त करती रहती है

द्वितीय खंड की समाप्ति में लेखक यही बताते हैं कि भीषण अकाल की स्थिति में भी मज़दूर मालिक यहाँ काम कर नहीं जाते हैं। भूख की मार से व्याकुल विवेक मालिक की कोठी से अनाज चुराते पकड़ा जाता है। सिपाही उसकी पिटाई करते हैं। मदन उसे छुड़वाना जाता है। सिपाहियों के धक्का देने पर सिंहुड़ा वृक्ष के काँटे में गिरकर मदन की आँखें नष्ट हो जाती है। मीरा बहुत ही दुःखी होती है। वह इस हालत में भी मदन को पति के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार है। पर मदन आनाकानी करता है। दोनों अलग-अलग रहते हैं- पर मन उन के निकट हैं- एक दूसरे को पति-पत्नी ही मानते हैं। होली के त्योहार के बहाने मदन एक मज़दूर फरीद के साथ दूसरी बस्ती के मज़दूरों को संगठित करने चला जाता है। मीरा उन्हें देखती रहती है। यही उपन्यास समाप्त हो जाता है।

▶ सिपाहियों के धक्का देने पर सिंहुड़ा वृक्ष के काँटे में गिरकर मदन की आँखें नष्ट हो जाती है

यह एक विलक्षण उपन्यास है। इसमें मुख्य कथा के साथ इतनी गौण कथाएँ होते हुए भी कथासूत्र में असंबद्धता कहीं भी दिखायी नहीं देती। उपन्यास पढ़ते समय पूरा युग एवं अतीत साकार हो उठता है। स्वयं लेखक के शब्दों में - 'लाल पसीना 1850 से 1900 तक की कहानी है। कुंदन का आगमन भारतीय कुलियों के आगमन से (1834) 20 वर्ष पहले हुआ था। क्योंकि वह कूली के रूप में नहीं, बल्कि सिपाही के रूप में अंग्रेजों के साथ मॉरीशस पहूँचा था। 1850 में किसन के युवा रूप से लाल पसीना आरंभ होता है और उस के पुत्र मदन के युवा रूप में (1900) समाप्त होता है।'

▶ उपन्यास पढ़ते समय पूरा युग एवं अतीत साकार हो उठता है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मॉरिशस के यशस्वी कथाकार अभिमन्यु अनत का यह उपन्यास उन के लेखन में एक नए दौर की शुरुआत है। इस उपन्यास में वे देश और काल की सीमाओं में बँधी मानवीय पीड़ा को मुक्त कर के साधारणीकरण की जिस उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित कर स के हैं, वह उन के रचनाकार की ही नहीं, समूचे हिन्दी कथा-साहित्य की एक उपलब्धि मानी जाएगी।

मॉरिशस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास में उन भारतीय मज़दूरों के जीवन-संघर्षों की कहानी है, जिन्हें चालाक फ्रांसीसी और ब्रिटिश उपनिवेशवादी सोना मिलने के सब्जबाग दिखाकर मॉरिशस ले गए थे। वे भोले-भाले निरीह मज़दूर अपनी ज़रूरत की मामूली-सी चीज़ें लेकर अपने परिवारों के साथ वहाँ पहुँच गए। उन्होंने वहाँ की चट्टानों को तोड़कर समतल बनाया, और उनकी मेहनत से वह धरती रसीले और ठोस गन्ने के रूप में सचमुच सोना उगलने लगी। आज मॉरिशस की समृद्ध अर्थव्यवस्था का आधार गन्ने की यह खेती ही है। लेकिन जिन भारतीयों के खून और पसीने से वहाँ की चट्टानें उपजाऊ मिट्टी के रूप में परिवर्तित हुई, उन्हें क्या मिला? यह उपन्यास मॉरिशस के इतिहास के उन्हीं पन्नों का उत्खनन है जिन पर भारतीय मजदूरों का खून छिटका हुआ है, और जिन्हें वक्त की आग जला नहीं पाई। आज मॉरिशस एक सुखी-सम्पन्न मुल्क के रूप में देखा जाता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. उपन्यासकार अभिमन्यु अनत का परिचय दीजिए।
2. 'लाल पसीना' उपन्यास की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. 'लाल पसीना' उपन्यास में कथित समस्याएँ क्या क्या है?
4. मुख्य कथा के साथ चलनेवाली गौण कथाएँ किस प्रकार उपन्यास का महत्व बढ़ाता है?
5. उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. अभिमन्यु अनत - लाल पसीना (मूल उपन्यास)
2. डॉ. रामचंद्र तिवारी - आप्रवासी हिन्दी साहित्य
3. डॉ. विनोद कुमार शुक्ल - हिन्दी आप्रवासी साहित्यः एक अध्ययन
4. डॉ. सुरेश कुमार - आप्रवासी हिन्दी लेखकों की साहित्यिक यात्रा
5. डॉ. रामविलास शर्मा - विदेश में हिन्दीः एक अध्ययन

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. हरिशचन्द्र विद्यालंकार - आप्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. डॉ. कृष्ण कुमार - हिन्दी आप्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक पहचान
3. डॉ. रमेश कुमार - आप्रवासी हिन्दी साहित्य में प्रवासी जीवन का चित्रण
4. डॉ. विजय कुमार - आप्रवासी हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक
5. डॉ. सुशील कुमार - आप्रवासी हिन्दी साहित्य की विशेषताएँ और दिशाएँ

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

आप्रवासी भारतीय अवधारणा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- छात्र अप्रवासी हिन्दी साहित्य की परिभाषा, इस के विकास की प्रक्रिया, और इस के प्रमुख लेखकों को समझ सकेंगे
- प्रवासी जीवन की संवेदना और अनुभवों का विश्लेषण कर सकेंगे, और इस के सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे
- आप्रवासी हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक पहचान और परिवर्तन की अवधारणा को समझना
- आप्रवासी हिन्दी साहित्य में वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना
- आप्रवासी हिन्दी साहित्य की महत्ता और इस के संबंध में सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझना

Background / पृष्ठभूमि

आप्रवासी भारतीय अवधारणा को समझने के लिए प्रवासी भारतीय एवं आप्रवासी भारतीय शब्दों का सही अर्थ समझना आवश्यक है। प्रवासी भारतीय शब्द का मतलब उन लोगों से है जो भारत छोड़कर दूसरी देशों में रोज़गार, कारोबार या किसी अन्य वजह से रह रहे हैं और किसी समय अपने मूल देश भारत को लौटने की योजना बनाते हैं। अप्रवासी भारतीय शब्द से मतलब है उन लोगों से जो स्थायी रूप से नए देश में रहने का इरादा रखते हैं और मूल देश भारत की और लौटने का चाह नहीं रखते।

आप्रवासी भारतीय अवधारणा भारतीयों के विदेशों में बसने और उन के जीवन के अनुभवों को दर्शाती है। यह अवधारणा भारतीय समाज और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आप्रवासी भारतीयों का इतिहास कई शताब्दियों पुराना है। भारतीयों ने विभिन्न कारणों से विदेशों में बसने का फैसला किया, जिनमें आर्थिक अवसर, शिक्षा, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल हैं। आज, दुनिया भर में लगभग 3 करोड़ आप्रवासी भारतीय हैं, जो विभिन्न देशों में रहते हैं और विभिन्न नौकरियाँ करते हैं।

आप्रवासी भारतीय अवधारणा के मुख्य पहलू हैं:

1. सांस्कृतिक पहचानः आप्रवासी भारतीय अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, जबकि वे नए देश में रहते हैं।

2. आर्थिक अवसरः आप्रवासी भारतीय विदेशों में आर्थिक अवसरों की तलाश में जाते हैं।

3. सामाजिक एकीकरणः आप्रवासी भारतीय नए देश में सामाजिक एकीकरण के लिए संघर्ष करते हैं।

4. राजनीतिक भूमिकाः आप्रवासी भारतीय अपने नए देश में राजनीतिक भूमिका निभाते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आप्रवासी हिन्दी साहित्य, प्रवासी जीवन, सांस्कृतिक पहचान, वैश्वीकरण

Discussion / चर्चा

▶ व्यापक और बहुआयामी विषय

आप्रवासी हिन्दी अवधारणा एक व्यापक और बहुआयामी विषय है, जिसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों के जीवन, संस्कृति, और पहचान के विभिन्न पहलू शामिल हैं। यह अवधारणा न केवल आप्रवासी भारतीयों के अनुभवों को दर्शाती है, बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक स्थिति और सामाजिक एकीकरण के पहलुओं को भी प्रकाशित करती है।

आप्रवासी हिन्दी साहित्य में उन साहित्यिक कृतियों को शामिल किया जाता है जो हिन्दी भाषा में लिखी गई हैं और जिनमें आप्रवासी भारतीयों के अनुभवों, संघर्षों, और उपलब्धियों को दर्शाया गया है। यह साहित्य न केवल आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाता है, बल्कि यह उन के जीवन के संघर्षों और उपलब्धियों को भी प्रकाशित करता है।

आप्रवासी भारतीयों का जीवन उनकी मातृभूमि से दूर रहते हुए भी अपनी संस्कृति और पहचान को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। उन्हें विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि भाषाई बाधाएँ, सांस्कृतिक अंतर, और आर्थिक संघर्ष। इन चुनौतियों के बावजूद, वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

▶ मातृभूमि की संस्कृति को बनाए रखने का प्रयास

आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान उनकी मातृभूमि की संस्कृति और उन के नए देश की संस्कृति के बीच के संबंधों को दर्शाती है। वे अपनी मातृभूमि की संस्कृति को बनाए रखने का प्रयास करते हैं, साथ ही साथ वे अपने नए देश की संस्कृति को भी अपनाते हैं। यह सांस्कृतिक पहचान उन के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

▶ वैश्वीकरण के प्रभाव

वैश्वीकरण के प्रभाव से आप्रवासी भारतीयों के जीवन और संस्कृति पर पड़ने वाले प्रभाव को देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने आप्रवासी भारतीयों के लिए नए आर्थिक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन साथ ही साथ यह उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी प्रभावित करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अप्रवासी हिन्दी अवधारणा एक व्यापक विषय है, जिसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ अप्रवासी भारतीयों के जीवन, संस्कृति और पहचान के विभिन्न पहलू शामिल हैं। आप्रवासी हिन्दी साहित्य में उन साहित्यिक कृतियों को शामिल किया जाता है जो हिन्दी भाषा में लिखी गई हैं और जिनमें आप्रवासी भारतीयों के अनुभवों, संघर्षों और उपलब्धियों को दर्शाया गया है।

आप्रवासी भारतीयों का जीवन उनकी मातृभूमि से दूर रहते हुए भी अपनी संस्कृति और पहचान को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। उन्हें विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान उनकी मातृभूमि की संस्कृति और उन के नए देश की संस्कृति के बीच के संबंधों को दर्शाती है। वैश्वीकरण ने आप्रवासी भारतीयों के लिए नए आर्थिक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन साथ ही साथ यह उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी प्रभावित करता है।

आप्रवासी हिन्दी अवधारणा एक व्यापक विषय है, जिसमें हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों के जीवन, संस्कृति, और पहचान के विभिन्न पहलू शामिल हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आप्रवासी हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक पहचान का चित्रण किस प्रकार हुआ है।
2. वैश्वीकरण के प्रभाव पर आप्रवासी हिन्दी समाज का वर्णन कीजिए।
3. आप्रवासी हिन्दी साहित्य में प्रवासी जीवन का चित्रण किस तरह किया गया है? व्यक्त कीजिए।
4. आप्रवासी हिन्दी समाज में सामाजिक एकीकरण की चुनौतियाँ पर टिप्पणी लिखिए।
5. आप्रवासी हिन्दी साहित्य का महत्व और प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य' - डॉ. रामचंद्र तिवारी
2. 'हिन्दी आप्रवासी साहित्यः एक अध्ययन' - डॉ. विनोद कुमार शुक्ल
3. 'आप्रवासी हिन्दी लेखकों की साहित्यिक यात्रा' - डॉ. सुरेश कुमार
4. 'विदेश में हिन्दीः एक अध्ययन' - डॉ. रामविलास शर्मा
5. 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास' - डॉ. हरिशचन्द्र विद्यालंकार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. 'आप्रवासी हिन्दी लेखकों की सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि' - डॉ. कृष्ण कुमार
2. 'हिन्दी आप्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक पहचान' - डॉ. रमेश कुमार
3. 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य में प्रवासी जीवन का चित्रण' - डॉ. विजय कुमार
4. 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक' - डॉ. सुशील कुमार
5. 'आप्रवासी हिन्दी साहित्य की विशेषताएँ और दिशाएँ' - डॉ. रामौतार शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन, स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों के आगमन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझता है
- स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्षों का विश्लेषण करता है
- मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को समझता है
- आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान और उन के संघर्षों के बीच संबंध को समझता है
- मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों के योगदान और उनकी भूमिका को समझने में सक्षम होंगे, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

1834 में ब्रिटिश सरकार द्वारा दास प्रथा के समाप्ति के बाद, मॉरीशस में श्रमिकों की कमी हुई। इस के लिए ब्रिटिश सरकार ने भारत से मज़दूरों को लाने का फैसला किया। 1834 से 1917 के बीच लगभग 450,000 भारतीय मज़दूर मॉरीशस आए। इनमें से अधिकांश उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश से आए थे। मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें से कुछ प्रमुख चुनौतियाँ थीं: कठिन श्रम की परिस्थितियाँ, निम्न मज़दूरी, अस्वस्थ रहने की स्थितियाँ, सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ, राजनीतिक और सामाजिक भेदभाव आदि।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मॉरीशस, आप्रवासी भारतीय, जीवन संघर्ष, भारतीय मजदूर, ब्रिटिश सरकार, दास प्रथा, श्रमिक स्थितियाँ, सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक स्थिति, राजनीतिक भेदभाव, गरीबी, बेरोज़गारी, मतदान अधिकार, सामाजिक न्याय

Discussion / चर्चा

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन और स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस के अप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष एक महत्वपूर्ण विषय है, जो मॉरीशस के इतिहास और भारतीय समुदाय के संघर्षों को दर्शाता है।

▶ कठिन श्रम की परिस्थितियाँ

19वीं शताब्दी में औपनिवेशिक शासन के दौरान बहुत से भारतीय किसान और मज़दूरों को मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो आदि देशों में ले जाया गया। इसके लिए इन्हें बहुत से प्रलोभन दिए गए, इन्हें यह बताया गया कि यहाँ मिट्टी के नीचे से सोना मिलता है। गिरमिट या एग्रीमेंट प्रथा के अंतर्गत इनके सामने बहुत सी लु भावने शर्तें रखी गई। इन्हीं शर्तों और यहाँ की उपनिवेश कालीन आर्थिक विसंगतियों के कारण, उत्तर भारत से बहुत से लोग मॉरीशस गए। जब वे वहाँ पहूँचे तो स्थिति इसके ठीक विपरीत थी। इन विपरीत परिस्थिति में इनका संबल भारतीय संस्कृति, धर्म, भारतीय मूल्य बोध बना। जो इनका आत्म संबल तो बना ही साथ ही, इन्हें एक सूत्र में पिरोये रखा। इसी की अभिव्यक्ति इनके द्वारा रचित साहित्य में हुई है। जिसे हम प्रवासी साहित्य के अंतर्गत पढ़ते और जानते है।

▶ मज़दूरों को मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद और टोबैगो आदि देशों में ले जाया गया

स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष

गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में गए प्रवासी लेखकों के द्वारा या उनके परिवारी जनों के द्वारा लिखा गया साहित्य अत्यंत ही व्यापक है। यदि संवेदना के धरातल पर देखा जाय तो, इनके द्वारा लिखे गए साहित्य में बहुत कुछ समानता है। जहाँ विपरीत परिस्थितियों में भी भारतीय बोध इनका आत्म संबल बनता है। 19 वीं शताब्दी में मॉरिशस में छल कपट से हज़ारों की संख्या में भारतीय मज़दूरों को गिरमिटिया प्रथा अर्थात शर्त बंदी कानून के अंतर्गत भेजा गया था। ये सभी भारतीय मज़दूर लगभग एक ही जैसी परिस्थितियों में कलकत्ता तथा मद्रास बन्दरगाहों से जहाज़ पर जानवरों की तरह लादकर, इन देशों में भेज दिए गए। कुछ तो रास्ते में ही मर गए और शेष बुरे हाल में पहूँचे और तुरंत उन्हें गोरे मालिकों को सौंप दिया गया। इन गोरे मालिकों ने इन्हें बंजर और पथरीली जंगली भूमि को समतल बनाने में लगा दिया, जिससे गन्ने की खेती करवाई जा सके। भारत से तो इन्हें यह कहकर ले जाया गया था कि वहाँ सोने के भंडार है, पत्थरों के नीचे से सोना निकलता है। वहाँ पहुँचकर इन लोगों को पता चला कि यह सब झूठ है, धोखा है।

▶ भारतीय मज़दूरों को गिरमिटिया प्रथा अर्थात शर्त बंदी कानून के अंतर्गत भेजा गया था

यहाँ इनकी स्थिति जानवरों से भी बदतर थी। अंग्रेज़ इनपर तरह तरह से अत्याचार करते, उन्हें इन मज़दूरों के काम से सिर्फ मतलब था, यदि इनमें से कोई बीमार या किसी रोग से पीड़ित हो जाता तो उसे मरने के लिए छोड़ दिया जाता। वे यहाँ से भाग भी नहीं सकते थे, क्योंकि यह देश चारों तरफ से समुद्र से घिरा हुआ था। इस तरह

▶ विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होनें अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखा

की हृदय को व्यथित कर देने वाली अनगिनत घटनाएँ साहित्य रूपी दस्तावेज़ में दर्ज है। इसीलिए प्रवासी साहित्य में इनका एक विशिष्ट स्थान है। इतनी विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होनें अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखा। अपनी इसी चेतना को जागृत रखने के लिए इन प्रवासी मज़दूरों ने अपने साथ 'रामचरितमानस', 'हनुमान चालीसा', 'आल्हा', 'सत्यनारायण कथा', 'महाभारत', 'श्रीमद्भागवत कथा' आदि ग्रंथों को अपने साथ ले गए थे। जो विपरीत परिस्थितियों में भी इनका आत्म सम्बल बना रहा।

▶ मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इनमें से कुछ प्रमुख चुनौतियाँ थीं: कठिन श्रम की परिस्थितियाँ, निम्न मज़दूरी, अस्वस्थ रहने की स्थितियाँ, सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ, राजनीतिक और सामाजिक भेदभाव आदि।

▶ आर्थिक स्थिति खराब

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति खराब थी। वे गरीबी और बेरोज़गारी का सामना कर रहे थे। उन्हें उचित मज़दूरी और सामाजिक सुविधाएँ नहीं मिलती थीं।

▶ मतदान के अधिकार से वंचित

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों को राजनीतिक अधिकार नहीं थे। वे मतदान के अधिकार से वंचित थे। उन्हें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ा। मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष किया और मॉरीशस की स्वतंत्रता के लिए लड़ा।

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन और स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष एक महत्वपूर्ण विषय है, जो मॉरीशस के इतिहास और भारतीय समुदाय के संघर्षों को दर्शाता है। इस विषय के माध्यम से, हमें मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्षों को समझने में मदद मिलती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का आगमन 1834 में ब्रिटिश सरकार द्वारा दास प्रथा के समाप्ति के बाद में हुआ। लगभग 450,000 भारतीय मज़ादूर मॉरीशस आए थे। कठिन श्रम की परिस्थितियाँ, निम्न मज़दूरी, अस्वस्थ रहने की स्थितियाँ, सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ, राजनीतिक और सामाजिक भेदभाव आदि स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष में प्रमुख हैं। सामाजिक और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में भी कई समस्याएँ हैं जैसे - गरीबी और बेराज़गारी आदि। इन्हें उचित मज़दूरी और सामाजिक सुविधाएँ नहीं मिलती थीं। उन्हें राजनीतिक अधिकार नहीं थे और वे मतदान के अधिकार से वंचित थे। मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष किया और वे मॉरीशस की स्वतंत्रता के लिए लड़ा।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों के आगमन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और इस के प्रभाव पर प्रकाश डालिए।
2. स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष और उस के सामाजिक और आर्थिक पहलू पर एक लेख तैयार कीजिए।
3. मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचानः संघर्ष और संरक्षण पर टिप्पणी लिखिए।
4. मॉरीशस के आप्रवासी भारतीयों का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर निबंध तैयार कीजिए।
5. मॉरीशस में आप्रवासी भारतीयों का वर्तमान स्थितिः चुनौतियाँ और अवसर पर चर्चा कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. 'आप्रवासी भारतीय' - डॉ. रामचंद्र तिवारी
2. 'मॉरीशस में भारतीयों का आगमन' - डॉ. विनोद कुमार शुक्ल
3. 'स्वतंत्रतापूर्व मॉरीशस में भारतीयों का जीवन' - डॉ. सुरेश कुमार
4. 'मॉरीशस के आप्रवासी भारतीय' - डॉ. रामविलास शर्मा
5. 'भारतीय आप्रवासी साहित्य' - डॉ. हरिशचन्द्र विद्यालंकार

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. 'मॉरीशस में भारतीयों का संघर्ष' - डॉ. कृष्ण कुमार
2. 'आप्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक पहचान' - डॉ. रमेश कुमार
3. 'मॉरीशस का इतिहास' - डॉ. विजय कुमार
4. 'भारतीय आप्रवासी आंदोलन' - डॉ. सुशील कुमार
5. 'मॉरीशस में भारतीयों की वर्तमान स्थिति' - डॉ. रामौतार शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

MODEL QUESTION PAPER SETS

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-I
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

THIRD SEMESTER -M23HD04DE - प्रवासी साहित्य
CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. प्रवास के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. किन्हीं चार प्रवासी साहित्यकारों का नाम लिखिए।
3. प्रवासी कविताओं में सांस्कृतिक संकट।
4. प्रवासी कवि मोहन राणा का परिचय दीजिए।
5. प्रवासी लेखन की विशेषताएँ क्या-क्या है?
6. 'साँकल' कहानी में प्रतीकात्मकता।
7. किन्हीं चार प्रवासी उपन्यासों का नाम लिखिए।
8. किसन सिंह का परिचय दीजिए।

(5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. प्रवासियों के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।
10. प्रवास प्रवाह माने क्या है?
11. प्रवासी साहित्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

12. प्रवासी कहानियों में प्रतीकों का प्रयोग।

13. प्रवासी साहित्य में देश के भविष्य के प्रति चिंता किस तरह व्यक्त होती है, तेजेंद्र शर्मा की कविता 'ऐ इस देश के बननेवाले भविष्य' के आधार पर व्यक्त कीजिए।

14. महिला प्रवासी कहानीकारों एवं उनकी कहानियों का परिचय दीजिए।

15. 'वापसी' कहानी की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।

16. 'कौन सी ज़मीन अपनी' कहानी में पीढ़ीगत संघर्ष।

17. मदन सिंह की चरित्र पर प्रकाश डालिए।

18. प्रवासी उपन्यासों में अभिव्यक्त समस्याएँ क्या-क्या है?

(6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

19. प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का परिचय दीजिए।

20. 'प्रार्थना' कविता में अभिव्यक्त विषय क्या है?

21. 'देह की कीमत' कहानी की विषय पर चर्चा करते हुए पात्रों पर प्रकाश डालिए।

22. 'लाल पसीना' उपन्यास की कथ्य पर प्रकाश डालिए।

(2X15 = 30 Marks)

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-II
POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

THIRD SEMESTER -M23HD04DE - प्रवासी साहित्य
CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours | Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. प्रवासी साहित्यकार अभिमन्यू अनत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. प्रवासी साहित्य माने क्या है?
3. प्रवासी कविता की भाषागत विशेषताएँ।
4. किन्हीं चार प्रवासी कविताओं का नाम लिखिए।
5. 'पिंजरा' कहानी के प्रमुख पात्र कौन कौन है?
6. प्रवासी कहानियों में अभिव्यक्त समस्याएँ।
7. लाल पसीना उपन्यास में चित्रित गिरमिटिया मज़दूर।
8. स्वतंत्रतापूर्व मॉरिशस आप्रवासी भारतीयों का जीवन संघर्ष।

(5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. प्रवासी साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
10. प्रवासी साहित्यकार तेजेंद्र शर्मा जी की परिचय दीजिए।
11. अंजना संधीर की कविता 'चाहती है लौटना' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

12. 'मेरे गाँव में' कविता की शिल्पगत विशेषताएँ।

13. 'वह अनजान आप्रवासी' में प्रवासी मानसिकता किस प्रकार व्यक्त होती है?

14. मनजीत सिंह सोढ़ी का चरित्र चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

15. प्रमुख प्रवासी कहानीकारों का परिचय दीजिए।

16. प्रवासी कहानियों में व्यक्त प्रवासी भारतीयों की दुविधा।

17. आप्रवासी भारतीय अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

18. उपन्यासकार अभिमन्युअनत का परिचय दीजिए।

(6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

19. प्रवास का वर्गीकरण और प्रवासियों के प्रकारों पर प्रकाश डालिए।

20. 'खु शबू वतन की' कविता पर टिप्पणी लिखिए।

21. वापसी कहानी का समग्र विश्लेषण कीजिए।

22. प्रमुख प्रवासी हिन्दी उपन्यासकारों का परिचय दीजिए।

(2X15 = 30 Marks)

SGOU

NO TO DRUGS തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

प्रवासी साहित्य

Course Code: M23HD04DE

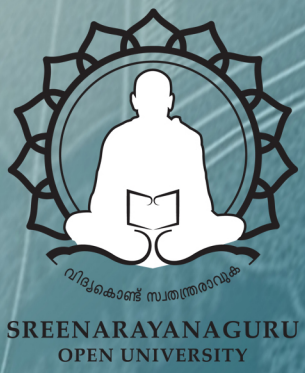

ISBN 978-81-985080-1-0

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841